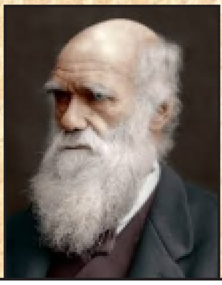
वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

TARKSHEEL

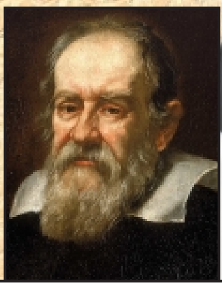
दिसम्बर 2020



डार्विन (14)



स्वामी अग्निवेश (46)



गैलीलियो (35)



जैम्स रैंडी

(7 अगस्त 1928 से 20 अक्टूबर 2020)

₹20

विज्ञान जीने का जरिया ही नही, जीने का ढंग भी होना चाहिए

उसको फांसी दे दो

गोरख पाण्डेय

वह कहता है उसे रोटी कपड़ा चाहिए
बस इतना ही नहीं उसे न्याय भी चाहिए
इस पर से उसको सचमुच आजादी चाहिए
उसको फांसी दे दो।

वह कहता है उसे हमेशा काम चाहिए
सिर्फ काम ही नहीं, काम का फल भी चाहिए
काम और फल पर बेरोक दखल भी चाहिए
उसको फांसी दे दे।

वह कहता है कोरा भाषण नहीं चाहिए
झूठे वादे हिंसक शासन नहीं चाहिए
भूखे-नंगे लोगों की जलती छाती पर
नकली जनतंत्री सिंहासन नहीं चाहिए
उसको फांसी दे दो।

वह कहता है अब वह सबके साथ चलेगा
वह शोषण पर पर टिकी व्यवस्था को बदलेगा
किसी विदेशी ताकत से वह मिला हुआ है
उसको इस गद्दारी का फल तुरंत मिलेगा
आओ देशभक्त जल्लादो
पूंजी के विश्वस्त पियादो
उसको फांसी दे दो।

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFSC: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। शुल्क Paytm के माध्यम से मोबाईल नम्बर 9416036203 पर या कोड को स्कैन करके भी भेजा जा सकता है। शुल्क भेजने के बाद इसी मोबाइल नम्बर पर अपना पता SMS या WhatsApp करें।

Reg.No.HARHIN/2014/60580

संपादक : बलवन्त सिंह - 94163-24802

संपादक सहयोग :-

गुरमीत अम्बाला - 94160-36203

बलबीर चन्द लौंगोवाल - 98153-17028

हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-

द्विवार्षिक : 200/- रू.

विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :

गुरमीत अम्बाला

Email: tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:

बलवन्त सिंह (प्रा.)

म.नं. 1062, आदर्श नगर,

नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।

जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)

Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia
पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है-

https://tarksheelpath.blogspot.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:

www.tarksheel.org

Tarksheel on Whatsapp : 9416036203

Tarksheel Mobile App :
Readwhere.com

Tarksheel on Twitter:
@gurmeeteditor

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग:

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969

Email: baldevmehrok@gmail.com

संकेतिका

आगामी मीटिंग के बारे

कोरोना महामारी के कारण तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक मीटिंग को आयोजित होना अभी अनिश्चित है। अगली मीटिंग जब भी संभव होगी, तर्कशील साथियों को विभिन्न माध्यमों से सूचित कर दिया जायेगा।

नोट : किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

सम्पादकीय

करोना काल व तकनीकी विकास

साल 2020 का अंतिम माह आ गया, इस साल हरेक के अपने अनुभव हैं; खट्टे ज्यादा, मीठे कम। साल 2019 जाते जाते तोहफे में हमें कोविड-19 दे गया। जिसे ढोते ढोते पूरा साल बीत गया। इस काल में मानव सभ्यता का बहुत कुछ खो गया। आदमी के जीवन ने खुशियों की बजाए अकेलेपन ने स्थान बनाया मगर साथ ही जीवन की अन्य परेशानियों के साथ ही आर्थिक तंगी ने जीने का ढंग भी बदल दिया। ऐसे अहसास होने लगे कि हम सब नजरबंद हो गए। अपनों से मिले कितने माह बीत गए ! मानव त्रासदियों के बीच एक और त्रासदी जुड़ गई!

इस काल में बहुत कुछ ऐसा देखने को मिला जो संवेदनहीन था, खास कर संस्थागत और बहुत कुछ मन को छूने वाला भी था। लेकिन वह व्यक्तिगत ज्यादा था। अधिकांश ने जहां समय मिलते ही लूटने को तरजीह दी, समाज में बहुत कुछ ऐसा मानववादी भी रहा जहां मानव निर्मित जाति, धर्म, क्षेत्र की दीवारें गिरती रहीं, इंसान के हाथ एक दूसरे की सेवा के लिए उठ खड़े हुए। यह सब सकून मय था। इंसानियत जिंदा है-यह सुखद अहसास होता रहा और कुछ बेहतर करने को प्रेरित भी करता रहा।

कहते हैं कि आवश्यकता अविष्कार की जननी है। संचार तकनीक ने इस काल मे अहम भूमिका निभाई। यह तकनीक अकेलेपन को जहां दूर करने के लिए नए नए रूपों में सामने आई, वहीं ठहर गए विश्व को गतिशील रखने में भी अहम भूमिका में उतर आई। बहुत कुछ डिजिटल होते दिखा। विद्यार्थियों की पढ़ाई से लेकर दफ्तरों के कार्यों तक में उसने क्रांतिकारी भूमिका निभाई। नई-नई उपभोक्तावादी चीजें बाजार में आई। दूर रहने वाले अपने नजदीक आने के अहसास देने लगे।

काल के इस दौर में विभिन्न साधनों के साथ ही मनोरंजन के साधन भी नए रूप में आ गए। सिनेमा बन्द हुआ तो ओ. टी. टी. पर नए रूप में मनोरंजन ने अपना रूप बिखेर दिया, जो काफी कुछ खालीपन को भर गया। मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह एक दूसरे को चाहे जितनी नफरत करे, उसके बगैर जिंदा भी नही रह सकता।

साल 2021 में उम्मीद करनी चहिए कि कोई वैक्सीन विकसित होगी, जो जीवन को पटरी पर ला देगी। उम्मीद में जीते जाना ही जीवटता है, गतिमता है, उसे सदा सम्भाल कर रखना चाहिए वह सदा हमें जीने के बहाने देती है!

---- ----- गुरमीत अम्बाला

विश्वप्रसिद्ध तर्कशील योद्धा जेम्स रैंडी के निधन पर विशेषः

जेम्स रैंडीः तर्कशीलता को समर्पित एक जीवन

-गुरमीत अम्बाला

जेम्स रैंडी का जन्म 7 अगस्त 1928 को टोरंटो, कनाडा में हुआ था। बचपन से ही वे असाधारण रूप से प्रतिभाशाली थे। हालांकि वे कॉलेज शिक्षा प्राप्त न कर सके परन्तु जादू को जानने समझने में उनकी दिलचस्पी थी। उन्होंने इस कला को सीखने व इसमें महारत पाने में बेहद मेहनत की और वह समय भी आया जब अपने कौशल से दुनिया भर में प्रसिद्धि हासिल की। उन्होंने यूरोप और एशिया में बहुत से प्रदर्शन किए। राष्ट्रीय टेलीविजन कार्यक्रमों और कॉलेज परिसरों में 'अद्‌भुत जेम्स रैंडी' के रूप ख्याती अर्जित की। विगत समय में उन्होंने आधी शताब्दी तक जादूगरों की दुनिया में अपनी कला के साथ ही उन पर भी नजर रखी जो मैजिक के माध्यम से जनता को गुमराह करते थे, जो अलौकिक शक्ति होने के दावे करते थे। चमत्कारों के रूप में स्वयं को सिद्ध पुरुष कहते थे। वे उन का पर्दाफाश भी करते थे, ये ही भावना उन्हें महान जादूगर के साथ ही एक तार्किक वैज्ञानिक चिंतनशील व्यक्ति के रूप में दुनियाभर में लोकप्रिय बनाती थी। जेम्स रैंडी ने सदा रैशनल तरीके से सभी चीजों को देखने की कोशिश की। वे चमत्कारों के माध्यम से धोखाधड़ी करके अपने को स्थापित करने वालों के खिलाफ सदा खड़े रहे। उन्हें मालूम था कि ऐसे तत्व समाज मे बहुत मजबूत हैं जो मानवता के नाम पर वैज्ञानिक चिंतन को कमजोर करते हैं। वे आध्यात्मिकता की आड़ में काम करते ज्योतिषियों, भाग्यशास्त्री और मनोविज्ञान का सहारा लेकर जनता को भ्रमित करने वालों के लिए निर्विवाद रूप में बड़ी चुनौती रहे। वे सार्वजनिक जीवन मे सदा विज्ञान के पक्ष में खड़े रहे। संयुक्त राज्य अमेरिका में पत्रकार रिचर्ड पायत ने 29 अगस्त 1986 को जेम्स रैंडी से साक्षात्कार किया जिसमें उन्होंने कहा : जब मैं 15 साल की उम्र में था, तो मैंने पहले ही शौकिया जादूगर के रूप में अपने करियर की शुरुआत की थी। तब मैंने टोरंटो में आध्यात्मिक-प्रार्थना में चर्च में भाग लिया, तो मैंने देखा कि वे उसी चीज की नकल का कर रहे थे, जो हैरी हुडनी (1874-1926) करता रहा'। उन्होंने मंच जादूगर के रूप में लोगो को मनोवैज्ञानिक तरीके से मानसिक गुलामी की तरफ धकेलने पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने अपने चमत्कारों के दावेदारों को परख के पश्चात प्रदर्शन करने पर दस हजार डॉलर के पुरस्कार देने की घोषणा की। उन्होंने यूरी गेलर नामक जादूगर के दावे को चुनौती दी, और दावा किया है कि यूरी गेलर की धातु-झुकाने की ट्रिक असाधारण नहीं हैः द मैजिक ऑफ यूरी गेलर 1975 में उन्होंने इस कथित चमत्कार का पर्दाफाश किया। अपने सबसे सफल पर्दाफाशों में से एक ईसाई चिकित्सकों का भी था। 1986 में उन्होंने सान फ्रांसिस्को में पीटर पाप ऑफ के दावों को चुनौती दी जो बीमारियों से पीड़ित लोगों के उपचार में, पीड़ितों को नाम से बुला कर उन्हें ठीक करने का दावा करता था। वह कहता था कि ये शक्ति उन्हें सीधे ईश्वर से मिलती है। असल में उन्होंने एक ट्रिक के माध्यम से यह विकसित किया था। जेम्स रैंडी ने इसका खुलासा किया।

उन्होंने विश्व प्रसिद्ध ज्योतिषी 'नास्त्रेदमस' का भी एक पुस्तक के माध्यम से पर्दाफाश किया है। नास्त्रेदमस की भविष्यवाणियों के बारे में पर्दाफाश परियों की फोटोग्राफी, उड़न तश्तरियों का भ्रम या बरमूडा ट्रायंगल के रहस्य सहित दुनिया के बड़े पाखंडों का उल्लेख जेम्स रैंडी ने अपनी पुस्तक 'द मिस्ट्री ऑफ मिरेस्ट्रीस' में किया है। हम में से ज्यादातर ने जादूगरों को हाथ की सफाई से चम्मच को मोड़ते देखा है। इस पाखंड का पर्दाफाश भी जेम्स रैंडी ने किया था। उन्होंने बिना सर्जरी के पथरी निकालने की के पाखण्ड को भी उजागर किया ।उन्होंने होम्योपैथी को भी अवैज्ञानिक माना।

रैंडी ने अंधविश्वास के खिलाफ लड़ाई लगातार जारी रखी। अंग्रेजी में उनकी एक प्रसिद्ध पुस्तक 'फिल्म फ्लेम' जिसे-चमत्कारों का रहस्य-शीर्षक के तहत प्रकाशित किया है। इस पुस्तक का पंजाबी संस्करण रैंडी जी ने अपने तर्कशील साथियों डॉक्टर अब्राहम टी. कोंवूर, बी. प्रेमानंद, मेघ राज मित्र, डाक्टर नरेंद्र दांभोलकर विजयम, सनल एडामार्कु जैसे प्रसिद्ध तर्कशीलों के नाम समर्पित किया है।

20 अक्टूबर 2020 को तर्कशील आंदोलन के इस योद्धा ने भरपूर जीवन जी कर अंतिम सांस ली । उनके चले जाने से तर्कशील आंदोलन को बहुत हानि पहुंची है। इस लिए अपने इस महान वैज्ञानिक चिंतक के निधन पर दुःख व्यक्त करते हुए उनके अधूरे कार्यो को लगातार जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध है।

सितंबर अर्थात शरद विषुव (Winter Equinox)

-डॉ बी. के. शर्मा

विषुव (अंग्रेजीःइक्विनॉक्स) ऐसा समय-बिंदु होता है, जिसमें दिवस और रात्रि लगभग बराबर होते हैं। इसका शब्दिक अर्थ होता है - समान। इक्वीनॉक्स शब्द लैटिन भाषा के शब्द एक्वस (समान) और नॉक्स (रात्रि) से लिया गया है। किसी क्षेत्र में दिन और रात की लंबाई को प्रभावित करने वाले कई दूसरे कारक भी होते हैं। पृथ्वी अपनी धुरी पर 23 डिग्री झुके हुए सूर्य के चक्कर लगाती है, इस प्रकार वर्ष में एक बार पृथ्वी इस स्थिति में होती है, जब वह सूर्य की ओर झुकी रहत2ी है, व एक बार सूर्य से दूसरी ओर झुकी रहती है। इसी प्रकार वर्ष में दो बार ऐसी स्थिति भी आती है, जब पृथ्वी का झुकाव न सूर्य की ओर ही होता है और न ही सूर्य से दूसरी ओर, बल्कि बीच में होता है। इस स्थिति को विषुव या इक्विनॉक्स कहा जाता है। इन दोनों तिथियों पर दिन और रात की बराबर लंबाई लगभग बराबर होती है। यदि दो लोग भूमध्य रेखा से समान दूरी पर खड़े हों तो उन्हें दिन और रात की लंबाई बराबर महसूस होगी। ग्रेगोरियन वर्ष के आरंभ होते समय (जनवरी माह में) सूरज दक्षिणी गोलार्ध में होता है और वहां से उत्तरी गोलार्ध को अग्रसर होता है। वर्ष के समाप्त होने (दिसम्बर माह) तक सूरज उत्तरी गोलार्द्ध से होकर पुनः दक्षिणी गोलार्द्ध पहुचं जाता है। इस तरह से सूर्य वर्ष में दो बार भू-मध्य रेखा के ऊपर से गुजरता है।

इस परिभाषा को सूर्य के पृथ्वी पर उदय और अस्त या परिक्रमा के संदर्भ में देखें तो इक्विन क्स एक ग्रह की कक्षा में लगने वाला वह समय है, जिसमें ग्रह की कक्षा और विशिष्ट स्थिति में सूर्य सीधे भूमध्य रेखा के ऊपर से होकर निकलता है। दिन और रात बराबर होने की बात सिद्धान्तः होती है पर वास्तविकता में नहीं। आजकल यह समय लगभग 22 मार्च तथा 23 सितंबर को आता है। जब यह मार्च में आता है तो उत्तरी गोलाद्ध में रहने वाले इसे महाबसंत विषुव कहते हैं तथा जब सितंबर में आता है तो इसे जलशरद विषुव कहते हैं। यह उत्तरी गोलाद्ध में इन ऋतुओं के आने की सूचना देता है। यह समय विषुव अयन के कारण समय के साथ साथ बदलता रहता है। अंतर्राष्ट्रीय समय में भिन्नता के कारण अलग अलग देशों में इसके दिखने की तिथियों में अंतर हो सकता है। उदाहरण के लिए दूरस्थ पूर्वी देशों में यह यूरोप और अमेरिका से एक दो दिन आगे पीछे दिख सकता है। हर ग्रह की एक काल्पनिक केंद्रीय रेखा को भूमध्य रेखा कहते हैं। इसके साथ ही भूमध्य रेखा के ठीक ऊपर अंतरिक्ष में एक काल्पनिक आकाशीय रेखा भी होती है। इक्विनॉक्स के समय सूर्य सीधे भूमध्य रेखा की सीध ा में होता है। इसका अर्थ यह है कि यदि कोई व्यक्ति भूमध्य रेखा पर खड़ा हो तो सूर्य उसे सीधे अपने सिर के ऊपर दिखाई देगा। इसका यह भी अर्थ है कि आधा ग्रह पूरी तरह प्रकाशित होता है और इस समय दिन और रात लगभग बराबर होते हैं।

दक्षिणी ध्रुव पर रहने वाले लोगों के लिए इक्विनॉक्स के अगले छह महीने लगातार दिन रहने वाले हैं जबकि उत्तरी ध्रुव के लोगों के लिए छह महीने अंधेरी रात वाले। इक्विनॉक्स के इस विशेष दिन दोनों ध्रुवों के लोगों को सूर्य का एक जैसा प्रकाश देखने को मिलता है, जबकि दोनों जगह का मौसम अलग होगा। ■

जातिभेद टूटे तो संवरे देश का भविष्य

-राहुल सांकृत्यायन

हमारे देश को जिन बातों पर अभिमान है, उनमेंश जात-पांत भी एक है। दूसरे मुल्कों में जात-पांत का भेद समझा जाता है भाषा के भेद से, रंग के भेद से। हमारे यहां एक ही भाषा बोलने वाले, एक ही रंग के आदमियों की भिन्न जातें होती हैं। यह अनोखा जाति-भेद हिंदुस्तान की सरहद के बाहर होते ही नहीं दिखलाई पड़ता। मुसलमान और ईसाई तक भी इस छूत की बीमारी से नहीं बच सके हैं-कम-से-कम ब्याह शादी में अछूतों का सवाल, जो इसी जाति-भेद का सबसे उग्र रूप है, हमारे यहां सबसे भयंकर सवाल है। कितने लोग शरीर छू जाने से स्नान करना जरूरी समझते हैं। कितनी ही जगहों पर अछूतों को सड़कों से होकर जाने का अधिकार नहीं है।

पिछले हजार बरस के अपने राजनीतिक इतिहास को यदि हम लें, तो मालूम होगा कि हिंदुस्तानी लोग विदेशियों से जो पददलित हुए, उसका प्रधान कारण जाति भेद था। जाति-भेद न केवल लोगों को टुकड़े-टुकड़े में बांट देता है बल्कि साथ ही यह सबके मन में ऊंच-नीच का भाव पैदा करता है। हिंदुस्तान के इतिहास में कई बार ऐसा समय आया जबकि देश की स्वतंत्रता फिर लौट आ रही थी, लेकिन हमारी पुरानी आदतों ने वैसा होने नहीं दिया। दूरदर्शी सम्राट अकबर ने सारे भारत को एक जाति में लाने का स्वप्न देखा, लेकिन उसका वह स्वप्न स्वप्न ही रह गया। और उसके बाद के हिंदू-मुसलमानों ने कभी उस जातीय एकता के ख्याल को फूटी आंखों देखना पसंद नहीं किया। अंग्रेजों के हाथ में जाने से पहले भारत में सबसे बड़ा साम्राज्य मराठों का था, लेकिन वह भी ब्राह्मण-अबाह्मण के झगड़ों के कारण चूर-चूर हो गया। हमारे पराभव का सारा इतिहास बतलाता है कि हम इसी जाति-भेद के कारण इस अवस्था तक पहुंचे।

संसार की रविश हमें बतला रही है कि हम अधिक दिनों तक इस जातीय भेदभाव को कायम नहीं रख सकते। दुनिया की चाल को देखकर अब हिंदुस्तान के अछूत अछूत रहने को तैयार नहीं हैं। आजादी के दीवाने तो इस प्रथा के विरुद्ध जेहाद बोल चुके हैं/थे। वे इसके लिए सब तरह की कुर्बानियां करने को तैयार हैं। उनके लिये राजनीतिक युद्ध से यह सामाजिक युद्ध कम महत्व नहीं रखता।

देखने में जात-पांत की इमारत मजबूत मालूम होती है, लेकिन इससे यह न समझना चाहिए कि उसकी नींव पर करारी चोट नहीं लग रही है। जातीय भेद के दो रूप हैं-एक रोटी में छूत-छात, दूसरे बेटी में असहयोग। रोटी में छूत-छात की बात उन्हीं धनिकों ने सबसे पहले तो उन्हीं ने शुरू की, जो अपने स्वार्थ को अक्षुण्ण रखने के लिए जातीय संगठनों और जातीय एकताओं के सबसे बड़े पोषक थे। धन उनके पास था और विलायत जाने के लिए सबसे पहले वे ही तैयार हुए। जहां पहले विलायत जाने वाले जात से बहिष्कृत किए जाते थे, वहां आज वे ही जात के चौधरी हैं। हमारे देश का दुर्भाग्य है कि जिस काम को अवश्य करना है, उसे भी लोग बहुत धीमी चाल से करना चाहते हैं। ठोस जातीय एकता हमारे लिए सबसे आवश्यक चीज है और वह मजहबों और जातों की चहारदीवारियों को ढहाकर ही कायम की जा सकती है। हिंदुस्तानी जाति एक हैं। सारे हिंदुस्तानी, चाहे वे हिंदू हों या मुसलमान, बौद्ध हों या ईसाई, मजहब के मानने वाले हों या लामजहब; उनकी एक जाति है-हिंदुस्तानी, भारतीय। हिंदुस्तान से बाहर यूरोप और अमेरिका में ही नहीं, पड़ोस के ईरान और अफगानिस्तान में भी हम इसी हिंदी-नाम में पुकारे जाते हैं। निश्चय है कि जात-पांत को क्षय करने से हमारे देश का भविष्य उज्जवल हो सकता है।

-साभार : अमर उजाला

प्लासेबो एवं नोसेबा

–डॉ. बलवन्त सिंह सिद्धू

'नासेबो' शब्द लेटिन भाषा से लिया गया है। इसका अर्थ है नुकसान करना। वर्तमान समय में यह शब्द किसी भी दवाई अथवा अन्य पदार्थ अथवा इलाज की विधि के लिए प्रयोग में लाया जाता है जो वास्तव में तो नहीं परंतु विश्वास के कारण हानि पहुंचाती है। डाक्टर वाल्टर कैनेडी ने 1961 में इस परिघटना को एक नाम दिया था 'नासेबो इफेक्ट। वास्तव में यह शब्द, प्लासेबो का विपरीतार्थक शब्द है। अतः जहां पर प्लासेबो किसी प्रभाव से शून्य से शून्य होने पर भी अच्छा प्रभाव डालती है वहीं पर नोसेबो हानिकारक न होने के बावजूद भी बुरा प्रभाव डालती है अथवा उसी प्रकार का अनचाहा प्रभाव डालती है जो वह वास्तव में नहीं करती। इसके बहुत से उदाहरण हैं। जैसा कि प्रथम भाग में डा. दर्शन पाल द्वारा भेजी गई वीडियो का ज़िक्र है जिसमें वेन्ज वेंडर नामक व्यक्ति का केस ब्यान किया गया है जिस में दर्शाया गया है कि किस प्रकार गलत विश्वास अथवा सोच के कारण से होने वाले बुरे प्रभाव के कारण व्यक्ति बीमार पड़ सकता है अथवा सोच को बदलने से उसी कल्पित बीमारी से ठीक हो सकता है।

नोसेबो प्रभाव को प्लासेबो प्रभाव का शैतानी जुड़वा भी कहा गया है। क्योंकि जैसे प्लासेबो प्रभाव किसी भी प्रकार से प्रभाव हीन होने के बावजूद भी अच्छा प्रभाव डालता है, उसके बिल्कुल विपरीत नासेबो प्रभाव प्रभावहीन होने के बावजूद भी नुकसानदायक असर करता है।

नासेबो प्रभाव कई हालतों में बहुत नुकसान कर सकता है। क्योंकि आमतौर पर लोगों को डाक्टरों में बहुत विश्वास होता है। (कुछ समय पूर्व तक तोलोग डाक्टरों पर अंधा विश्वास करते थे तथा उन्हें तथाकथित भगवान समझते थे); इस कारण किसी भी रोगी का इलाज करवाते समय डाक्टर पर अत्यधिक विश्वास होने के कारण डाक्टर द्वारा बोला गया कोई भी शब्द रोगी के लिए बहुत अहमियत रखता हैं इसका परिणाम यह निकलता है कि डॉकटर द्वारा बोले गए अच्छे या बुरे शब्दों का रोगी के स्वास्थ्य पर बहुत अधिक असर होता है। यदि संबंधित डॉक्टर की वाणी बहुत सकारात्मक एवं मृदु है तो वह राोगी के मस्तिष्क में गहरा प्रभाव डालती है तथा यह उम्मीद जगाती है कि वह जल्दी ठीक हो जाएगा। ऐसी मनो-अवस्था में रोगी का हौसला बुलन्द होता है और वह उस बीमारी का मुकाबला बेहतर ढंग से कर के सफल इलाज करवाता हुआ रोग मुक्त हो जाता है। परंतु इसके विपरीत यह भी संभव है कि यदि वही डॉक्टर रोगी को इलाज के दौरान निराशाजनक बात कहता है जिसके अनुसार रोगी की बीमारी का इलाज संभव नहीं अथवा ला-ईलाज है। ऐसी बात रोगी को मौत का फतवा सुनाने के बराबर है तथा मरीज के लिए बहुत ही नुकसानदायक हो सकती है। ऐसे हालात कई रोगों में सामने आते हैं, विशेष तौर पर कैंसर के रोग में एवं अन्य गंभीर रोगों में। ऐसी नकारात्मक सोच को हेक्सिंग भी कहा जाता हैं हेक्सिंग का चिकित्सा के क्षेत्र में वही स्थान है जो समाज के अंधविश्वासों में 'श्राप' अथवा 'वूड' (Curse or Voodoo) काहै। पुरातन समय में लोग श्राप से इतना अधिक डरते थे कि उन पर सच में ही 'श्राप' का प्रभाव पड़ता था। अतः इन बातों से सहज रूप में समझा जा सकता है कि वेन्ज सेंडर्ज नाम के व्यक्ति का केस जो प्रथम भाग में ब्यान किया गया है, वास्तव में श्राप में बहुत ही अधिक विश्वास होने के कारण नासेबो प्रभाव के कारण ही बीमार हो गया था और बाद में जब उसका नोसेबो प्रभाव के बारे में डर दूर कर दिया गया तथा उसको इस बात पर विश्वास हो गया तो वह ठीक होना शुरू हो गया। यदि आज कोई इस प्रकार का 'श्राप' दे दे तो लोग मजाक उड़ाएंगे अथवा इसे बिल्कल नज़र अंदाज कर देंगे। अब उस श्राप का किसी पर भी कुप्रभाव नहीं हो सकेगा परंतु यदि इस प्रकार का मौत का फरमान कोई इलाज कर रहा डॉक्टर, जो कि डिग्रीधारक है तथा अपनी बात स्कैन एवं अन्य

अनेकों प्रकार आधुनिक टेस्ट करने के पश्चात करता है तथा कहता है कि तुम्हारे पास केवल छह महीने हैं और उस के बाद तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी तो संभावना बहुत बढ़ जाती है कि वास्तव में ही उसकी छह महीने के पश्चात् मृत्यु हो जाए। यह परिघटना भी नोसेबो प्रभाव के कारण ही संभव होगी क्योंकि रोग को डाक्टर की बात पर पूर्ण विश्वास होता हैं अतः यह स्पष्ट होना चाहिए कि चिकित्सा विज्ञान में हेक्सिंग का प्रभाव नोसेबो प्रभाव के कारण ही होता है तथा इस के कारण बहुत नुकसान हो सकता है।

आधुनिक विज्ञान के अनुसार तूडू मृत्यु का कारण अत्यधिक डर है। इस संबंधी विज्ञानी वाल्टर केनन न`सन् 1942 में सर्वप्रथम आधुनिक विज्ञान के तरीकों से डर के शरीर पर प्रभाव के बारे में खोज को प्रकाशित किया। वाल्टर केनन का कार्य आज भी बहुत महत्व रखता है तथा चिकित्सा विज्ञान की पढ़ाई में विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता हैं परंतु इसके उपरांत कई अन्य वैज्ञानिकों ने इस विषय पर और भी खोज की है। अत्यधिक डर से मस्तिष्क के भाग हाईपेथेलेमससे कोर्टिकोट्रोफिन नामक हार्मोन का रिसाव होता है तथा यह शरीर की अन्य हार्मोन उत्पन्न करन`वाली ग्रंथियों पर प्रभाव डालता है, जिससे आगे और भिन्न-भिन्न प्रकार के हार्मोन निकल कर शरीर पर प्रभाव डालते हैं। मस्तिष्क के भावनाओं से संबंधित हिस्सों को सामूहिक तौर पर लिंबिक प्रणाली कहा जाता है। उक्त हार्मोनों के साथस-साथ लिंबिक प्रणाली के कई भाग अत्यधिक डर की हालत में शरीर की डर लड़ने अथवा भागने की क्रिया में योगदान डालते हैं। ये सभी गतिविधियां शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों पर भिन्न-भिन प्रकार का प्रभावडालती हैं, जैसे कि मांसपेशियों प्रभाव, हृदय की गतिविधि पर प्रभाव इत्यादि। वैज्ञानिकों की आम सहमति है कि इन मामलों में मृत्यु का सबसे बड़ा कारण दिल की धड़कन का अत्यधिक अनियमित होना है।

अतः यह स्पष्ट है कि कई विशेष परिस्थितियों में नोसेबो प्रभाव बहुत ही बुरा प्रभाव डाल सकता है। अतः इन्ही बातों के कारण ही यह कहा गया है कि इलाज करने वाले डाक्टर का स्वभाव नर्म, दयालुता वाला एवं दूसरे की बात भली-भांति समझ कर बात करने वाला होना चाहिए। डाक्टर को संवेदनशील होना चाहिए और दूसरों की पीड़ा को महसूस करने के काबिल होना चाहिए। अपने व्यवहार के कारण ही एक समान ढंग से इलाज करने के बावजूद भी सभी डाक्टरों के परिणाम भिन्न भिन्न होते हैं। मृदु-भाषी, अच्छे व्यवहार वाले एवं संवेदनशील डाक्टर अधिक सफल होते हैं तथा अक्सर ही लोग यह कहते हुए सुने जाते हैं कि अमुक डाक्टर के हाथ में बहुत शफा है अथवा हाथ में बहुत यश है। नोसेबो प्रभाव अन्य तरीकों की धारणाओं के कारण भी हो सकता है। जैसा कि कुछ समय पूर्व तक अशिक्षित लोगों में यह गलत धारणा आम तौर पर पाई जाती थी कि बचाव के टीके बच्चों का नुकसान करते हैं, इस कारण लगाने नहीं चाहिएं। टीके लगवाने वाले दिन लोग बच्चों को स्कूल नहीं भेजते थे। ऐसा करने बच्चों को कई रोग लगने का डर रहता था। ऐसा एक बहुत ही भयंकर रोग पोलियो था, जिस का अब की दवाइयों से खत्मा हो चुका हैं इस प्रकार की गलत धारणाओं के कारण यह भी होता था कि यदि किसी ने बचाव के टीके लगवाए हैं तथा जिस से थोड़ा-बहुत दर्द अथवा कोई अन्य तकलीफ होती थी तो नोसेबो प्रभाव के कारण लोग अत्यधिक कष्ट अथवा बीमार महसूस करते थे। इसी भांति सटेटिन दवाएं, जो खून में से वसा को कम करत ही हैं त्था इसी प्रकार दिल एवं दिमाग के अनेक रोगों को होने से रोकती हैं, के बारे में गलत धारण प्रचलित है कि ये दवाएं बहुत परेशान करती हैं; इसलिए इन का सेवन नहीं करना चाहिए। इस प्रकार की विपरीत धारणा के कारण स्टेटिन दवाएं लेने वाले व्यक्ति आवश्यकता से अधिक बुरे प्रभाव (साईड इफेक्ट) महसूस करते हैं। इससे बहुत से वे लोग जिन को इनकी जरूरत होती है, वे इनका प्रयोग नहीं करते अथवा शुरू करने के पश्चात् बन्द कर देते हैं। ऐसे लोगों में दिल सका दौरा पड़ने अथवा अधरंग का अटैक होने का खतरा बढ़ जाता है। नोसेबो प्रभाव के कारण कई लक्षण आमतौर पर हो ही जातें हैं जैसे कि पेट दर्द, डकार आना, अफारा हो जाना, खारिश, जी मितलाना, भूख का मर जाना, चक्कर आना एवं सेक्स से संबंधित रोग इत्यादि। यह भी देखा गया है कि यदि इलाज करने वाला डाक्टर मरीज को दवाओं के बुरे प्रभावों के

बारे में अधिक सचेत करे तो अधिकतर रोगियों में बुरे प्रभाव ज़ाहिर होते हैं मुकाबलतन उन रोगियों के जिनको ये बुरे प्रभाव बताए नहीं गये थे। परंतु यहां पर यह बात स्पष्ट होनी चाहिए कि इस का तात्पर्य यह नहीं कि डाक्टर रोगी को इलाज वाली दवाओं के बुरे प्रभावों के बारे में बिल्कुल ही न बताए। किसी भी डाक्टर का यह कर्त्तव्य है कि वह दवाओं से संबंधित गंभीर बुरे प्रभाव- जो संभव हैं, की जानकारी मरीज को दे। बहुत से मरीज नोसेबो प्रभाव के कारण ही कई बार आवश्यक दवाएं लेने से गुरेज करते हैं तथा नुकसान उठा बैठते हैं। परंतु क्योंकि सही चुनाव की गई दवाएं उचित मात्रा में देते समय बहुत सुरक्षित होती हैं, दवाओं की सुरक्षा के बारे में मरीज को संतुष्ट करना भी डाक्टर का कर्त्तव्य है ताकि मरीज को अनावश्यक चिंता न हो। इसके अतिरिक्त यह भी देखने में आया है कि आमतौर पर नेचरोपैथी, होम्योपैथी एवं आयुर्वेद के चिकित्सक यह प्रचार करते हैं कि ऐलोपैथी दवाएं अथवा इलाज स्वास्थ्य को खराब करती हैं क्योंकि ये बीमारी को जड़ से खत्म नहीं करतीं तथा इनके अत्यधिक कुप्रभाव होते हैं इत्यादि। जबकि सच्चाई यह है कि आधुनिक विज्ञान पर आधारित दवाइयों एवं इलाज अत्यन्त कारगर एवं प्रभावशाली हैं। यद्यपि आज के कई लालची डाक्टर एवं बड़े अस्पताल मरीजों का शोषण करते हैं और अपने निजी लाभ के लिए इस बेहतरीन व्यवसाय को घटिया व्यापार की भांति चलाते हैं। परंतु इसमें आधनिक वैज्ञानिक पद्धति एवं इलाज का दोष नहीं बल्कि व्यवस्था के प्रशासन की नालायकी है। यह बात बिल्कुल अलग बहुत ही गंभीर मुद्दा है।

अमेरिका की एप्पल कंपनी के प्रसिद्ध सी. ई.ओ. स्टीव जोब्ज़ का केस ध्यान में रखना चाहिए-जो अपने स्वास्थ्य का अत्यधिक घ्यान रखता था-परंतु उसने एक गंभीर रोग बारे विशेषज्ञ डाक्टरों की सलाह को अनदेखा कर के अपने दृढ़ मनोबल एवं प्राकृतिक चिकित्सा की विधियों अथवा तरीकों के द्वारा रोग पर नियंत्रण पाने का असफल यत्न किया तथा परिणामस्वरूप वह अपनी जान से हाथ धो बैठा।

नोसेबो प्रभाव के अतिरिक्त भी कई बार इलाज के समय डाक्टरों की ओर से गलती से अथवा लापरवाही से सच में ही रोगी को शारीरिक नुकसान हो सकता है अथवा रोग लग सकता है; इसे आयट्रोजेनिक रोग कहा जाता हैं अस्पताल में सक कीटाणू शरीर में प्रवेश होने वाले संक्रमण को नोसोकोमियल संक्रमण कहा जाता है।

इलाज के दौरान ये दोनों बुरे प्रभाव मानव के शरीर पर सच में ही डालते हैं। अर्थात् नोसेबो प्रभाव की भांति नहीं हैं। यही कारण है कि यह सुझाव दिया जाता है कि अस्पताल जाते समय अनावश्यक रूप से छोटे बच्चों को साथ में नहीं ले कर जाना चाहिए। क्योंकि इस से उनके बीमार पड़ जाने का खतरा रहता है।

अतः यह बात स्पष्ट हो जानी चाहिए कि मानव की सोच के कारण प्लासेबो एवं नोसेबो प्रभाव पर कितना अधिक प्रभाव डालते हैं। यदि हमें इन परिघटनाओं के बारे में उचित जानकारी हो तो हम अपने स्वास्थ्य एवं रोगों के बारे में और अधिक सही निर्णय लेकर स्वस्थ हो सकते हैं और अंधविश्वासों से भी बच सकते हैं।

भूतपूर्व प्रिंसीपल/प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
मनोचिकित्सा/नशा मूक्ति विभाग
राजिन्द्रा अस्पताल, पटियाला
- हिंदी अनुवादः बलवंत सिंह लेक्चरार

कविता

हथकड़ियों से जकड़ी हुई हैं पेड़ों की शाखें
बेलों की सांसों पर पहरा लगा है
सुरक्षा-अधिनियम में गिरफ्तार कर लिये गये हैं झरने
आंधियों के आन्दोलनों को
मशीनगनों से भूना जा रहा है।
टीयर गैसे से आक्रांत हैं दिशाओं की आंखें
धरती का एक-एक जोड़
दर्दा रहा है-
शायद कोई सबेरा
क्षितिज के गर्भ में छटपटा रहा है!
----- -डा. रणजीत

आध्यात्मवाद – भौतिकवाद

-आर.पी.गांधी

मस्तिष्क के विकास के कारण ही मुनष्य शंष जीवों से श्रेष्ठ माना जाता है। वह अपने इर्द-गिर्द घटने वाली घटनाओं के बारे में सोचने पर विवश हुआ। उदाहरण के लिए आंधी, तूफान वर्षा, ओलों, आसमानी बिजली की चमक व बादलों की गर्जन, भूकम्प आदि ने उसके सामने जिज्ञासाएं पैदा कर बीमार होने पर वह भयभीत हो जाता और सोचता कि किसी दैविक शक्ति के प्रकोप के कारण ऐसा हुआ उसे कोई लाभ हो अथवा हानि वह इनके पीछे देवी-देवताओ का हाथ ही समझता अपनी बुद्धि के अनुसार उसने कल्पनाओं के सहारे इन शक्तियों को देवी देवताओं के नाम दिया। जैसे जल का देवता-इन्द्र। अग्नि-देवता, अनिल देवता। चेचक जैसी बीमारी को शीतला मॉ का नाम दिया। प्लेग को मत्यु देवी का नाम दिया। इन सब देवी देवताओं को खुश करने के लिए मनुष्य ने इनकी पूजा करनी शुरू कर दी और तरह तरह से इनको खुश करना शुरू कर दिया। यहां तक कि प्राचीन काल में इन देवी देवताओं को प्रसन्न करने के लए नर बलि भी देने लगा। हर जीवन का कारण आत्मा होती है और जिन आत्माओं की गति नहीं होती वे प्रेत आत्मा बन जाती है । ऐसी सोच के कारण ही आध्यात्मवाद का जन्म हुआ। इसके साथ-साथ विरोधी सोच को भौतिकवाद का नाम दिया गया। ऋषि बृहस्पति द्वारा लिखा हुआ दर्शन चारवाक् है। चारवाक को मानने वाले लोकायत कहलाते हैं जिनको जानसम कर दिया जाता था। और उनका साहित्य जला दिया जाता था इसका कारण आध्यात्मवादी दर्शन शोषण कासबसे बडा साधन भी था। ऋषि मुनियों को राज दरबारों में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था जिसके बदले में वे जनता में इस तरह का प्रचार करते कि राजा ईश्वर द्वारा भेजगा गया प्रतिनिधि है जिसको प्रजा पर शासन करने के लिए भेजा गया है। यह सब कुछ ईश्वर की कृपा से होता है ईश्वर की मर्जी के बिना कुछ नहीं होता। सब कुछ भाग्य विधाता के हाथ में है, जो हमारा भाग्य लिखता है वह निराधार है और कण कण में विद्यमान है। आम आदमी अपने दुखों को भाग्य का नाम देकर किसी प्रकार का विद्रोह नहीं करता। कारण ईश्वर का तो कोई स्वरूप ही नहीं वह अपना रोष किसके आगे प्रकट करे। इस तरह से वह हर प्रकार के अत्याचार को सहन कर लेता है और क्रान्ति का विचार उसके मन में नहीं आता। दूसरी ओर राजा महाराजा जनता के घोर परिश्रम से पैदा की गई धन दौलत से सुविधा के अनेक साधन जुटाते थे और मौज मस्ती के लिए उनके महल में ढेरों रानियां होती हैं।

अध्यात्मवाद को पांच भागों के बांटा गया है अद्वैतवाद, द्वेतवाद, त्रेतवाद, मायावाद, रहस्यवाद।

1. अद्वैतवाद :-

अद्वैतवाद एक ही ईश्वरीय शक्ति को मानता है जिसके कारण हर घटना इस संसार में घटती है मानव उसके आगे बेबस है उसके विरुद्घ वह कुछ नहीं कर सकता। यहां तक कि पत्ता भी उसकी मर्जी से हिलता है ; परन्तु द्वैतवादी उस पर प्रश्न उठाता है अगर वही सब कुछ करता है तो चोरी करने वाला भी वही हुआ। अगर हत्या होती है तो उसके लिए वही दोषी है। अगर किसी महिला का बलात्कार होता है तो उसके पीछे भी उसी का हाथ है फिर दोषी कौन? इसलिए यह बात सच नहीं हो सकती। जहां तक पत्ता हिलाने का प्रश्न है उसमें हवा का अपना गुण कार्य करता है। वह है चारों ओर समान दबाव बनाकर रखना। सागर की सतह पर वायु का दबाव 32 पाउंड प्रति वर्ग इन्च होता है । अगर यह चारों तरफ एक जैसा न हो तो कोई भी जीव चल फिर न सकेगा । चारों और से एक जैसा दबाव होने के कारण यह दबाव निरस्त हो जाता है । इसको आप प्रयोग द्वारा स्वयं सिद्व कर सकते है। पानी का पूरा भरा गिलास लेकर उसके उपर मोटा कागज लगाए। हाथ का सहारा देकर गिलास को सावधानी से उलटा कर दी जिए। धीरे से हाथ को नीचे से हटा ले गिलास से न कागज का टुकडा गिरेगा और न ही पानी इससे सिद्व हो जाता है कि

वायु का दबाव सभी ओर एक जैसा है। इस सिद्धांत के अर्न्तगत हवाएं चलती है और आंधियां व तूफान आते हैं। यहां तक कि वर्षा आने में भी यही सिद्धांत कार्य करता है। जब तेज गर्मी के कारण हवा गर्म होती है तो वह हल्की होकर उपर उठ जाती है वहां पर हवा का दबाव कम हो जाता है। दबाव कम होने से नमी वाली हवांए इन स्थानों की ओर बहने लगती हे और वर्षा का कारण बनती है। हवा के चलने से पत्ते भी हिलने लगते है इनको हिलाने में ईश्वर का कोई हाथ नहीं है।

संत कबीर भी अद्वैतवादी है। गुरूग्रन्थ साहिब में कबीर वाणी में कहा गया हैः

अल्ला-अव्वल नूर उपाय
कुदरत के सब बंदे,
एक नूर से सब जग उपजा,
कौन भले कौन मंदे।

ऐसे ही इस्लाम में कलमा सिद्व करता है कि वह भी अद्वैतवादी है। कलमे में कहा गया है। अल्लाह वाहिद है और मोहम्मद उसका रसूज है। नानक भी अद्वैतवादी है । नानक का यह कहना -करे करावै आपो आप,
मानुष के नहीं कुछ भी हाथ।

गुरू नानक एक जगह और कहते हैं -हुक्म रजाई चलना नानक लिखिया नाल, यह भी अद्वैतवाद का सबूत है परन्तु उदालिक ऋषि का सांख्या-दर्शन इसका विरोध करता हुआ नजर आता है। उसका मानना है कि परमात्मा अकेला नहीं उसके साथ आत्मा भी है। आत्मा अच्छा या बुरा कार्य करती है जिसका फल या सजा परमात्मा देता है। आत्मा कार्य करने के लिए स्वतंत्र होती है। वह अद्वैतवाद को नकारते हुए सांख्य दर्शन यह कहता है कि परमात्मा ही एक कुछ करता है तब वह अच्छे काम का भी जिम्मेवार होगा और बुरे काम का भी फिर दंड किसी को क्यों ?

उसके बाद द्वैतवाद की बात की जाती है। उसका यह मानना है कि तीन बातें अनादि है। परमात्मा, आत्मा और पदार्थः जैसे अगर कुम्हार को घड़ा बनाना है तो उसको मिट्‌टी की आवश्यकता होगी। किसी जीव जन्तु का शरीर बनाने के लिए भी पदार्थ की आवश्यकता पड़ती है। यह कहते हुए द्वैत वाद का विरोध करना है। गीता और आर्य समाज त्रेतवाद में विश्वास करते है। उनका यह मानना है कि कोई भी कार्य करने के लिए इन तीनों की आवश्यकता पड़ती है। लेकिन यह सच नहीं है।

अध्यात्मवाद का चौथा भाग है मायावाद। मायावाद का यह मानना है कि जो कुछ हम देखते हैं या महसूस करते है। माया के सिवाय कुछ नहीं उदाहरण के रूप में जब हम कोई स्पप्न देखते हैं तो हमें बहुत कुछ दिखाई देता है परन्तु जब ऑख खुलती है तो कुछ भी नहीं होता। इसी तरह से यह संसार एक भ्रम है जिसकी वास्तविकता नहीं है। जैसे हम आज है कुछ समय पश्चात्‌ नहीं होगे। ऐसे ही एक और उदाहरण देते हुए मायावादी कहता है वह सामने कूंआ देख रहे हो। यह पहले कुआं नहीं था बाद में भी नहीं रहेगा। पता नहीं इसमें जल है भी या नहीं फिर भी हम इसको एक कुआं मान रहे है। इस प्रकार यह एक माया है। परन्तु यथार्थवादी इन दोनों उदाहरणों का जवाब देते हुए कहता है कि जब हम नींद में स्पप्न देखते है तो हम जागृत अवस्था में नहीं होते। स्वप्न मस्तिष्क का कार्य है, इससे ज्यादा कुछ नहीं। इसलिए हमें माया कहके झुठला नहीं सकते। दूसरी उदाहरण में यथार्थवादी कुंए में एक पत्थर फैंकता है। कुंए में पैदा हुई आवाज से वह जान लेता है कि कुंए मे पानी है या नहीं। जब यह कुंआ न था तब हम इसे कुंआ मानते भी नहीं थे। जब यह कुंआ नहीं रहेगा तब भी हम इसे कुंआ नहीं मानेगे। जब तक कुंए का अस्तित्व है तब तक हमें इसके यथार्थ को मानना ही होगा।

आध्यात्मवाद का पांचवें भाग रहस्यवाद कहलाता है। रहस्यवादियों का यह मानना है कि परमात्मा के कार्यो को समझा ही नहीं जा सकता। जैसे कि गुरू नानक का कहना तेरी महिमा तूॅं ही जाने, दूजा न जाने कोय। परन्तु आज का वैज्ञानिक प्राकृतिक रहस्यों को समझने का हर सम्भव प्रयास कर रहा है। अभी कुछ समय पूर्व बिग बैंग के सिद्वांत को समझने के लिए हिंग्स बोसोन नाम का प्रयोग किया गया था। इससे जो कण पैदा हुआ उसको कुछ रूढ़िवादी लोगों ने गौड पार्टिकल का नाम दिया। खगोल में भी उपग्रहों द्वारा लम्बी यात्राएं की जा रही है। चन्द्रमा पर भी दो अमरीकी वैज्ञानिक पहॅुंच चुके हैं। मंगल ग्रह पर भी भेजा गया रोबोट मंगह की सतह पर निरीक्षण कर रहा है और उपलब्ध सूचनाएं पृथ्वी पर भेजी जा रही है। ऐसे ही पनडुब्यिों से समुद्र की गहराई में जानकारियां इकट्‌ठी

की जाती है। हमारा ब्रहाण्ड अनन्त है जिसकी कोई सीमा नहीं है। ऐसे ही मानव सोच की भी सीमा नहीं। ब्रहाण्ड को जानने के प्रयास अभी भी जारी है। धरती का मानव लाखों आकाश गंगाओं के बारे में जान चुका है। हमारी अपनी आकाश गंगा लाख 30 हजार प्रकाश वर्ष लम्बी है 50 हजार प्रकाशवर्ष चौडी है। यह कुछ कुछ गोलाकार है। आध्यात्मवाद के पांचों भाग इस बात पर जोर देते है। श्रद्धा रख, तर्क न कर अगर तू तर्क करेगा तो नास्तिक बनेगा और उसमें मानसिक डर दिखाया गया है कि नास्तिक को नरक प्राप्त होगा।

भौतिकवादः–

हर क्रिया के पीछे विरोध ही कार्य करता है । ऋण के साथ धन का होना आवश्यक है तभी बिजली का कोई भी उपकरण कार्य करेगा। चुम्बक में उत्तर ध्रुव के साथ दक्षिण ध्रुव आवश्य पाया जाता है । अगर दिन है तो रात भी है। बुराई है तो अच्छाई भी है। परन्तु कठिनाई तब पैदा होती है जब पढ़े लिखे लोग भी भौतिकवाद के गलत अर्थ निकालते है। प्रायः देखने को मिल जाता है कि लोग भोग विलास के साधनों के जुटाने को भौतिकवाद मानते हैं जबकि यह सत्य नहीं है। सुविधा और सुख के साधन जुटाना योगवाद है जिसको दोनों भोगते है। अध्यात्मवादी भी और भौतिकवादी भी। भौतिक वाद आध्यात्मवादी दर्शन का विरोधी दर्शन है जिसको मुख्य रूप से तीन भागों में बांटा गया है। यथार्थ वाद, प्रकृतिवाद, प्रयोजनवाद।

यथार्थवाद प्रमाणित सत्य होता है प्रमाण पर तो शंका हो सकती है पर यथार्थ पर नहीं। कुछ लोग सामने दिखने वाली वस्तु को ही यथार्थ मान बैठते हैं जैसे दर्पण में प्रतिबिम्ब का दिखना और गर्मी में रेगिस्तान में मृग मरीचिका को दिखना। तारे दिन में भी होते हैं जबकि वे दिन में दिखाई नहीं देते। जब कभी सूर्य ग्रहण लगता है तो तो तारे दिखाई देने लगते हैं। ऐसे ही बहुत सारे ग्रह, उपग्रह हम से अत्याधिक दूर होने के कारण हमें दिखाई नहीं देते परन्तु आधुनिक दूरदर्शी यन्त्रों की सहायता से उनको देखा जा सकता है। इस प्रकार उनका अस्तित्व प्रमाणित हो जाता है। हमारे ब्रहमाण्ड की कोई सीमा नहीं है। वह अनन्त है। कई आकाश गंगाओं का प्रकाश पृथ्वी तक पहुँचने में सैंकड़ो वर्ष लग जाते है। अतः पदार्थों के अति दूर स्थित होने पर अथवा अति सूक्ष्म होने पर उनका सामान्य ऑखों से न देख पाना यह अर्थ नहीं होता कि ये पदार्थ हैं ही नहीं बल्कि उनके अस्तित्व को आधुनिक यंत्रों से देखा जा सकता है।

इसी प्रकार वायु-मण्डल में गतिशील धूल कणों को प्रायः नंगी ऑखों से नहीं देख पाते मगर जब इनको एक बारीक प्रकाश किरण के पुंज से देखा जाता है तो आसानी से असंख्य कणों को हवा में तैरते हुए देखा जा सकता है

प्रकृतिवाद :–

हम पहले ही बता चुके हैं कि हमारा ब्रहमाण्ड अनन्त है इसकी कोई सीमा नहीं। यह सब प्रकृति का ही भाग है। यह सब कुछ पदार्थ से ही बना है। इसकी न उत्पत्ति है और न ही विनाश है। केवल परिवर्तन के कारण अवस्थाएं बदलती है। हमारी अपनी आकाश गंगा में भी लाखों की गिनती में सूर्य है। हमारे अपने सूर्य की तरह उन सूर्यो के भी ग्रह उपग्रह हो सकते हैं। उनके किसी ग्रह पर भी जीवन हो सकता है भले ही वह हमारे जैसा जीवन न हो। जीवन के लिए तीन चीजों की आवश्यकता है उचित तापमान, जल और वायु। इस तरह से पूरे ब्रह्माण्ड में प्रकृति को देख कर यह समझा जा सकता है कि हमारी धरती के वैज्ञानिक अन्तरिक्ष-यानों की सहायता से खगोल के रहस्यों को जानने में लगे है। धरती का मनुष्य 25 करोड़ आकाश-गंगाओं के बारे में जान चुका है। यह सब कुछ प्रकृति का निर्माण करता है। प्रकृति को भी हम कई रूपों में देखते है। पेड़ पौधे झील-सागर, नदियां, पर्वत, स्तन-धारी जीव, अंडज, सूक्ष्म जीव। समुद्र में विभिन्न प्रकार के जीवों को वैज्ञानिकों ने खोज निकाला है। इसी प्रकार पेड-पौधों की अनेक प्रजातिओं का ज्ञान एकत्रित किया गया है।

प्रयोजनवादः–

प्रकृति के सिद्धांतों को प्रयोगों द्वारा समझने के लिए हम जो ढंग अपनाते हैं उसे नागासाकी कहा जाता है । सिद्वातों को जानने के पश्चात मानव जाति की भलाई या नुकसान पहुंचाने के लिए उसका प्रयोग करता है। एक समय वह था जब हम यह मानते थे

.... शेष पृष्ठ 24 पर

कि परमाणु को तोड़ा नहीं जा सकता है। जब मनुष्य परमाणु को तोड़ने में सफल हुआ तो अधिक मात्रा मे उर्जा प्राप्त हुई सन 1945 में अमेरिका द्वारा एटम बम जापान के शहरों हीरोशिमा और नागासाकी में गिराए गए। ये दोनों शहर तबाह हो गए। एक ही समय में 3 लाख 20 हजार जाने खत्म हो गई। यह उसका दुरूपयोग था। परन्तु हमारे ही देश में तारापुर बिजलीघर परमाणु शक्ति से चलाया जाता है। वह बिजली जो कल कारखाने चलाने के काम आती है वही अंधेरे घरों में प्रकाश करती है। यह उसका सदुपयोग है।

आज मनुष्य के पास जितनी भी उपलब्धियां हैं उसमे प्रयोजनवाद का सबसे अधिक योगदान है। मनुष्य नित नए प्रयोगों द्वारा प्रकृति को समझने में लगा रहता है वहीं सागर की गहराइयों को भी समझने में प्रयोजनवाद का बहुत बड़ा योगदान है डिसकवरी इंडिया टी.वी. चैनल व अन्य वैज्ञानिक चैनलों पर ऐसी बहुत सारी जानकारियां उपलब्ध रहती हैं जिन्हें देखकर साधारण व्यक्ति आश्चर्य से भर जाता है। जल-जीवों, धरती के जीवों तथा हवा में उड़नेवाले जीवों की धरती का मानव अध्ययन करने में लगा रहता है। उनके जीवन की बारीकियों को समझने का प्रयास करता रहता है। यहां तक कि जीवों के गले में कालर-बैल्ट डाल दी जाती है जिसकी सहायता से जीव वैज्ञानिक उनकी गतिविधियों को बड़ी आसानी से समझने में कामयाब हो जाते है। यहां तक कि शहद की मख्खियों पर विशेष प्रकार के इलैक्ट्रान चिप्स लगा देते हैं जिससे वे मक्खी की हर क्रिया को समझने में सक्षम हो जाते हैं। आजकल की सभी खोजें जैसे रेडियो टैलीविजन, कम्प्युटर, मोबाईल आदि प्रयोजनवाद का ही परिणाम है।

भौतिकवाद की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह हमें क्यों? कैसे? कब? की खुली छूट देता है, जबकि अध्यात्मवाद इस तरह के प्रश्नों पर प्रतिबन्ध लगाता है। अतः भौतिकवाद ही विकास की जननी है। आज हम विश्व में जो भी विकास किसी भी क्षेत्र में देखते हैं उसके मूल में भौतिकवाद ही है। अतः भौतिकवाद मानव जाति के लिए अधिक हितकर है।

चीखती रेल की पटरियां रह गयीं

-डॉ रणजीत

टूट कर कांच की चूड़ियां रह गयीं
कुछ फटी साड़ियां, पगड़ियां रह गयीं।
जिनको सिरहाने रख कर के सोये थे वे
सुबह बिखरी हुई गठरियां रह गयीं।

वो जो मजदूर थे, कितने मजबूर थे
किस कदर दर्द में, नींद में चूर थे
नींद और मौत का ऐसा रिश्ता जुड़ा
टूट कर कांच की चूडिंया रह गयीं

जाने कैसी थकन ओढ़ कर सो गये
जाने किस ख्वाब के शहर में खो गये
घुट कर सीने में कुछ हिचकियां रह गयीं
चीखती रेल की पटरियां रह गयीं।

पेट और भूख के ही लिए था सफर
पेट ही उनको ले के गया उनके घर
उनकी फरियाद पहुंची न दिल्ली तलक
अनसुनी अनसुनी सिसकिया रह गयीं

पत्थरों पर लहू ही लहू रह गया
खून बिखरा हुआ चारसू रह गया
उनकी चीखें फ़जाओं में गुम हो गयीं
राह तकती हुई बेटियां रह गयीं

फेस बुक और ट्वीटर पर मातम हुआ
देश में उनके जाने को यों गम हुआ
इस हुकूमत की पत्थर दिली देखिए
चंद बिखरी हुई रोटियां रह गयीं

खाक में उन गरीबों का खूं मिल गया
देख कर पत्थरों तक का दिल हिल गया
रेल की पटरियों तक ने ली सिसकियां
चीखती रेल की पटरियां रह गयीं।

डार्विन का पारिवारिक विरोध

प्रगतिशील मूल्यों की तरफदारी करने वाले व्यक्तियों को समाज में कई प्रकार के संघर्षो से गुजरना पड़ता है। इन्हें व्यंग्य या चुनौती की भाषा में एक सीधे से सवाल का सामना जो करना पड़ता है, वह यही होता है कि पहले वह अपने घर को तो सुधार लें या उन्हें मना लें। मान लो आपकी पत्नी बहुत अंधविश्वासी है और आप वैज्ञानिक मानसिकता का झंडा उठाए हैं तो आपको यह सब झेलना पड़ता है। बहुत बार हम ऐसे सवालों को ठीक से संबोधित नहीं कर पाते और कई बार हमारी अपनी ऊर्जा भी ऐसे मामलों में मध्यम पड़ जाती है। इतिहास में अनेक महापुरुषों के ऐसे उदाहरण भरे पड़े हैं। सुकरात की कहानी हमारे सामने है। इनकी पत्नी सुकरात की जनसंवाद संस्कृति से बहुत दुखी थी। ऐसा ही एक उदाहरण डार्विन का हमारे सामने है। लेकिन यह उदाहरण कई अर्थो में उल्लेखनीय है।

हम सभी जानते हैं कि डार्विन एक वैज्ञानिक थे। इनकी पत्नी का नाम एमा था। इनके दस संतान हुई थी। डार्विन का घर प्रकृति में घने जंगलों के बीच था। बचपन में ही इन्हें पर्वत, नदियां, पशु-पक्षी तथा वृक्षों का अवलोकन करने का अवसर मिला था। ये बचपन से ही मरे हुए कीट- पतंगों और पक्षियों को बारीकी से देखते थे। धीरे-धीरे इन्होंने इनका संग्रह करना शुरू किया। वे अपने संग्रह को बढ़ाने के लिए कभी-कभी पक्षियों का शिकार भी कर लिया करते । इनकी बड़ी बहन को यह सब अच्छा नहीं लगता था। उनके आग्रह के बाद इन्होंने यह आदत छोड़ दी। क्योंकि वह अपनी बड़ी बहन की बहुत इज्जत करते थे और उन्हें मां के समान दर्जा देते थे।

युवावस्था में ही इन्हें बीगल जलयान में सवार होकर लंबी यात्राओं पर जाने का अवसर मिला था। इसी यात्रा के दौरान इन्होंने विभिन्न जीव -जंतुओं तथा इनके अवशेषों के नमूने एकत्र किए थे । इसी यात्रा की बदौलत इनकी सेहत खराब हो गई और ये ताउम्र कमजोर ही बने रहे। लेकिन इस यात्रा ने इन्हें मानसिक मजबूती प्रदान की जिसके दम पर ये अपना मत दे पाए। इन्होंने लगभग 20 वर्ष अपने एकत्रित नमूनों पर अध्ययन किए और सन 1859 में अपने सबूतों पर आधारित अपनी संकल्पना को सिद्धांत रूप में प्रकाशित किया। यह पुस्तक द ओरिजिन ऑफ स्पीशीज एक लंबी बहस है।

इस पुस्तक को पढ़ने के बाद सरलता से इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि पृथ्वी पर जीवों का आना व विकसित होना एक लंबे प्राकृतिक संघर्ष में प्राकृतिक चयन की प्रक्रिया है। स्वभाविक है यह बात उस समय इंग्लैंड में ईसाइयत को कैसे गवारा होती। उनके शास्त्रों में उत्पत्ति का सिद्धांत कुछ और कहता है। पादरियों ने इनका विरोध किया। इन्हें पागल तक कहा गया। इन्हें सजा देने की मांग उठने लगी। डार्विन तो बहुत ही शांत स्वभाव के विनम्र व्यक्तित्व व शरीर से कमजोर थे। वे धार्मिकता के साथ पचड़े में पढ़ना ही नहीं चाहते थे। ये तो खुद बहुत ही कम बहसों में हिस्सा लेते थे। इनके समर्थक ही बढ़-चढ़ कर बहसों में भाग लेते थे। जब भी डार्विन के समर्थक किसी गंभीर बहस में उलझते तो प्रशंसा भी डार्विन की होती और यदि गालियां सुननी होती तो भी डार्विन को झेलनी पड़ती।

जहां तक बहस वैज्ञानिकों के बीच और पब्लिक में हो तो भी एक बात है। यदि बहस घर में ही हो तो फिर कोई क्या करें। डार्विन खुद पब्लिक बहसों में बहुत कम भाग लेते थे। इस प्रकार वे कट्टर धार्मिक व्यक्तियों से तो खुद को बचाने में काफी हद तक सफल रहे थे। एमा बहुत धार्मिक थी। अब वे उनसे कैसे निपटें। डार्विन तो नास्तिक हो चुके थे। उनकी पत्नी इस बात को लेकर बहुत चिंतित थी कि उनके पति विवेकशील व वैज्ञानिक सोच पर इतना ज्यादा ध्यान देते हैं जबकि भावनात्मक मुद्दों पर वे जरा भी संवेदनशील नहीं है। उन्हें इस बात की चिंता सताती थी कि उनके पति ईश्वर में विश्वास नहीं रख रहे हैं तो कहीं इन्हें अगले जन्म में नर्क की ज्वाला में न जलना पड़े। यहां यह बात उल्लेखनीय है कि उन्हें अपने पति की कितनी ज्यादा चिंता थी । लेकिन डार्विन के दिमाग पर ऐसा कोई बोझ नहीं था।

डार्विन बहुत संकोची व्यक्ति थे। अपने विश्वास को सरेआम कहते नहीं फिरते थे। अपने अंतिम

दिनों में इन्होंने अपनी आत्मकथा लिखने की सोची। इसमें इन्होंने अपने विश्वास मत के बारे में स्पष्ट लिख दिया। इनकी यह जीवनी इनकी मृत्यु उपरांत प्रकाशित हो पाई। इनकी यह आत्मकथा एमा ने प्रकाशित की थी। प्रकाशित होने से पहले एमा ने इसे संपादित किया। कुछ जगह फेरबदल भी किए। वह नहीं चाहती थी कि उनका विश्वास मत नास्तिक जगजाहिर हो। वे यह भी नहीं चाहती थी कि उनके बच्चों को इस बात के लिए बुरा-भला सुनना पड़े कि उनके पिता एक नास्तिक व्यक्ति थे। इन सब बातों की पुष्टि अन्य आधिकारिक स्रोतों से भी होती है। एक बार डार्विन के एक मित्र ने बहुत आग्रह किया कि वे अपना विश्वास मत स्पष्टता से बताएं। डार्विन ने अपनी लेटर पैड के पन्ने पर एक पंक्ति का उत्तर लिख दिया कि उनका शास्त्रों में वर्णित 'ईसाइयत' उत्पत्ति सिद्धांत पर कोई विश्वास नहीं रहा है। उनका यह पत्र उनकी मृत्यु के बहुत वर्षों बाद सामने आया है। नीलामी में उनकी यह एक पंक्ति लाखों रुपए में बिकी है। यह भी एक बड़ा दिलचस्प किस्सा है।

ओरिजिन ऑफ स्पीशीज के प्रकाशन के ठीक एक सौ वर्ष बाद 1959 में डार्विन की पौत्री नोरा बार्लो ने ही हिम्मत दिखाई है। इन्होंने ही अपने दादा की सारी सच्चाइयाँ दुनिया के सामने रखी हैं। उन्होंने निसंकोच स्पष्ट किया है कि उनके दादा के चर्च के साथ क्या संघर्ष थे और उनकी दादी के साथ कैसे वैचारिक मतभेद (मनभेद नहीं) थे। इन्होंने यह जीवनी पुनः प्रकाशित की है। इस जीवनी में डार्विन बड़ी ही इमानदारी और विनम्रता से स्वीकार करते हैं कि मेरा विश्वास कोई अचानक संयोग नहीं बना है। मेरा यह भ्रम धीरे-धीरे दूर हुआ है। जैसे-जैसे मैंने अपने परिवेश का विवेकपूर्ण अध्ययन किया है। मेरा विश्वास ईसायत से दूर होता गया है। ये अपनी जीवनी में लिखते हैं -मेरा विश्वास बहुत धीमी गति से आगे बढ़ा है। अब मैं पूर्ण रूप से आश्वस्त हूं। इस प्रक्रिया में मुझे कोई तकलीफ महसूस नहीं हुई। अब मेरे लिए यह देखना भी कठिन होता जा रहा है कि क्यों पढ़े -लिखे लोग भी ईसायत को पढ़कर इसे सच्चा मान लेते हैं। इसमें मेरे भाई-बंधु व सगे -संबंधी भी शामिल है ।

नोरा बार्लो लिखती हैं कि यही वह पैरा है जहां मेरी दादी ने कैंची चलाई है। इनकी दादी ने स्वयं अपनी लिखाई में नोट लिखा है कि वे इस बात को पसंद नहीं करती। वे इस बात को बिल्कुल हजम नहीं कर पाई। डार्विन का यह स्पष्ट विचार था कि हमारे भूत का संचालन शास्त्रों के हाथ में रहा है । परंतु मानवजाति का भविष्य विज्ञान व दर्शन के हाथों में होगा। वे लिखते हैं- मैंने विज्ञान का रास्ता अपनाया है और दुनिया के साथ सच को सांझा किया है। वह अपनी जीवनी में अपने विज्ञान के प्रति प्रेम को दर्शाते हैं। वे अपनी प्रतिबद्धता पर बढ़ हैं। इनके पिताजी तो इन्हें चिकित्सक बनाना चाहते थे। डार्विन को यह रुचिकर नहीं लगा। इसके बाद उनके पिताजी ने सोचा कि चलो डार्विन पादरी ही बन जाए। जैसे-जैसे डार्विन ने ईसायत को पढ़ा परिणाम कुछ और ही निकलता गया ।

शांत रहकर, कम बोल कर ठोस तर्कों के सहारे डार्विन ने धर्म बनाम विज्ञान का संघर्ष पार कर लिया। लेकिन वे जीवन पर्यंत अपनी पत्नी के साथ अपने वैचारिक संघर्ष को पार नहीं कर पाए। वे एमा से बेहद प्रेम करते थे। यद्यपि ये अपनी पत्नी से नास्तिकता की बहस कभी नहीं करते थे। लेकिन एमा को सब पता था। वे इनके इन विचारों से खुश नहीं थी। इन्होंने एक बार हिम्मत करके डार्विन से पूछ भी लिया की आपकी तर्क, विवेक एवं वैज्ञानिकता से बढ़कर भी कोई शक्ति विद्यमान हो सकती है। इसलिए वे सर्वशक्तिमान की अवधारणा की संभावना को खारिज न करें। वे आगे कहती हैं-आपकी तो यह आदत हो गई है कि आप बिना सबूतों के यकीन नहीं करते। आपके दिमाग पर प्रमाण व सबूत ही हावी रहते हैं। कुछ बातें ऐसी भी हो सकती हैं जो प्रमाणों या सबूतों से सिद्ध न भी हों और सच भी हों। ऐसी सच्चाइयाँ हमारी समझ से ऊपर भी हो सकती हैं। डार्विन अपनी पत्नी को अपने तर्कों से संतुष्ट नहीं कर पाए।

डार्विन दिल के बहुत साफ थे। वे एमा की भावनाओं को बदल ही नहीं सके। वे पूरी उम्र इसी द्वंद्व में रहे। एमा द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर में वे लिखते हैं- **जब मैं मर जाऊं उस समय आप समझोगे कि मैंने आपको कितनी बार चुंबन किया है और मैं कितना रोया हूं।**

दिल व दिमाग के द्वंद्व के बीच यह चुंबन व आँसू की सौगात ही होती है जो एक नास्तिक को नसीब होती है, जब वह एक धार्मिक स्त्री से शादी करता है।

गतांक से आगे

बुवाबाजी (बाबागीरी)

-डॉ०नरेन्द्र दाभोलकर

अध्यात्मक गुरुगीरीः

अनेक कथित बाबा कोई चमत्कार नहीं करते। फिर भी लोगों की भीड़ उनके पीछे मानो सम्मोहित अवस्था में चलती है। इसका कारण जान लेना जरूरी है। भारतीय समाज में गुरु परंपरा को असाधारण महत्व प्रदान किया गया है। अपने समकालीन गुरू को ढूंढकर पूरे भक्तिभाव के साथ उनकी शरण में रहने की सीख कबीर और नानक जैसे मध्ययुगीन संतों के विचारों की देन हैं उनके अनुसार व्यक्ति की आत्मा को ईश्वर से जोड़ने में गुरुभक्ति आफर गुरुकृपा दोनों का बहुत बड़ा योगदान है। संत ज्ञानेश्वर ने 'ज्ञानेवरी के अमृतानुभाव' में और अपने अभंगों में गुरुभक्ति का वर्णन किया हैं अनेक संप्रदायों में गुरुभक्ति का स्त्रोत (स्तुति-पाठ) मिलता हैं अपने अपने बुवाबाबा को गुरु के रूप में देखने की मानसिकता मूल ज्ञानेश्वरी के छठे अध्याय के अंत में नजर आता है। ज्ञानेश्वर ने एक सुंदर रूपक के जरिए गुरु की प्रशंसा की है। ज्ञानेश्वरी के दसवें अध्याय के आरंभ में गुरु के अनुग्रह को गणेश मानकर उसकी प्रशंसा की गई है। बारहवें अध्याय में सद्गुरु की कृपादृष्टि का स्तवन है। पंद्रहवें अध्याय में श्री गुरु के चरणों की मानसपूजा करने का उल्लेख है और सोलहवें अध्याय के प्रारंभ में सद्गुरु की प्रशंसा चित्सूर्य कहकर की गई। सत्रहवें और अठारहवें अध्याय में भी गुरु-प्रशंसा का भरपूर वर्णन है। अर्थात ज्ञानेश्वर के अनुसार गुरु को ढूंढने की जरूरत नहीं ईश्वर के प्रति समर्पित बुद्धि से कर्म करने पर सदगुरु अपने आप मिल जाते हैं। अर्थात हमारी परम्परागत गुरुभक्ति किसी बाबा के रूप में प्रकट होती है। लोग बुद्धि की शरण में जाने की बजाय, बाबा की शरण में जाने को आनंद की अनुभूति मानते हैं। अपनी स्वतंत्र सोच, अपने प्रश्नों के लिए स्वयं संघर्ष करने को भक्त लोग जीवन में मामूली बात समझते हैं। गुरु के स्थान पर बाबा का उदात्तीकरण करना उसे सदगुणी मानना, उससे एकरूप होना, मन की ये सुसप्त क्रियाएं बाबा की शरण में जाते समय अपने आप होती हैं। सद्गुणी बाबा के सत्संग में मन के उदास भावों के दूर होने और मन के उत्साहित होने जैसे अनुभवों के कारण भक्तों की बाबा पर श्रद्धा और भी बढ़ जाती है। प्रार्थना, भजन, प्रवचन, गुरु की महिमा का प्रचार, नाम-जप आदि के माध्यम से शिष्य संसार की चिंता से मुक्त हो जाता है। फिर वह मानने लगता है कि गुरु के कारण ही उसे अपनी समस्याओं का समाधान मिला। यह हमारी गुरुप्रधान संस्कृति के संस्कारों का हिस्सा है। कोई गुरुभक्त अन्य अनेक लोगों को अपने गुरु या बाबा के पास चलने के लिए प्रेरित करता है। ऐसी मानसिकता को निम्नलिखित पंक्तियों में बहुत अच्छी तरह से स्पष्ट किया गया हैः

'जय-जय श्री गुरुदेव, तम ब्रह्मस्वरूप हो, तुम्हारी काया सगुण है।
दैवी शक्ति और कृपा के लिए तुम्हारे रूप में ईश्वर प्रकट हो गए हैं।
सद्गुणों के चरणों को धोने वाला जल, सभी तीर्थो का सार है।
सद्गुणी वह है, जिसके मौन से भी आत्मज्ञान की धारा बहती है।'

भक्त अपने गुरु अर्थात् बाबा को ब्रह्म का स्वरूप मानता है। अब ब्रह्म क्यूं है, इसका पता न होने के कारण से सगुण-साकार के रूप में कैसे प्रकट हो गए, यह भी पता नहीं चलता। अपने बाबा के पांव धोने के बाद जो पानी मिलता है, वह पवित्र तीर्थक्षेत्रों की समग्र पवित्रता है, यह मान्यता भी बौद्धिक दिवालियापन को जाहिर करती है। सद्गुरु कुछ नहीं बोलते, मौन में बैठे हैं, फिर भी उसके द्वारा आत्मज्ञान निरंतर प्रसारित होता रहता है। ऐसा मानने का मतलब मानव द्वारा अपनी स्वाभावित

प्रज्ञा का खुशी से त्याग कर देना है
इसका मतलब है कि बुवा-बाबा के पास जाते समय अपनी बुद्धि गिरवी रख दी जाती है।

आज के महाराज गुरु की कल्पना के संदर्भ में कहते हैं-जिस प्रकार हम अच्छा स्कूल, अच्छा अध्यापक, अच्छा डॉक्टर ढूंढते हैं, उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को अच्छा गुरु भी ढूंढना चाहिए। 'संकदपुराण' में ऐसे गुरु के संदर्भ में शिव ने पार्वती को गुरुमहिमा बताई है। गुरु अपने शिष्य का सारा संशय मूल से ही नष्ट कर देते हैं। उसके डरको भगा देते हैं। जीवन-मृत्यु के चक्र से उसे निकालते हैं। ऐसे गुरु को ही सद्‌गुणी कहते हैं। गुरु के केवल दर्शन से ही सभी विकार नष्ट हो जाते हैं और अक्षय ज्ञान का खजाना मिल जाता है। ऐसे गुरु पूर्वजन्म के संचित पुण्य से ही प्राप्त होते हैं। गुरु अपने भक्तों के दुख तीन प्रकारों से दूर कर सकते हैंः

1. ध्यान, प्राणायाम, मंत्र जैसे आध्यात्मिक मार्गो से
2. बौद्धिक स्तर पर सत्संग करके
3. स्पंदनों के द्वारा लोगों की बीमारियां ठीक करने से लेकर आनंद की लहरें करोड़ों लोगों तक पहुंचाकर।

अंधविश्वासी बनकर गुरु के पैरों पर अपनी बुद्धि को गिरवी रखे बिना ऐसी गुरुकृपा मिलना बहुत कठिन है।

बाबाको अपना तारणहार मानने वाले भक्तों की मानसिकता को ठीक से समझे बिना गुरुगीरी के विरोध में चलने वाली वैचारिक लड़ाई का अर्थबोध नहीं हो सकता।

किसी चमत्कार को न दर्शानेवाला तथा जिनमें अन्य लोगों को कोई विशेषता नजर नहीं आती, ऐसे बाबा, गुरु और स्वामी के पस बहुसंख्य शिष्य और भक्तों का जमघट होता है।' आप बाबा की भक्ति क्यों करते हैं? ऐसा पूछने पर वे उत्तर देते हैं कि, 'किसी लालच या अपेक्षा से नहीं, बल्कि केवल भक्ति के लिए उनके पास जाते हैं' 'यह भक्ति किसलिए?' इसका उत्तर मिलता है, 'इस भक्ति से जीवन सार्थक हो जाता है।' 'यह सार्थकता कैसे मिलती है?' उत्तर मिलता है , 'इस शक्ति से जीवन का आध्यात्मिक कल्याण हो जाता है।' 'आध्यात्मिक कल्याण होने के प्रमाण क्या हैं?' इस प्रश्न का उत्तर देने की बजाय उलटा प्रश्न किया जाता है, 'प्रमाण क्यों मांगते हैं आप? बाबा का अधिकार ही वैसा है।' आगे और पूछा जाता है, 'माता-पिता, गुरुजनों आदि के मामले में आप प्रमाण मांगतें, आइंस्टाइन जैसे महान वैज्ञानिक ने सापेक्षवाद का सिद्धांत प्रस्तुत किया जो बहुत कम लोग ग्रहण कर पाए, क्या आप से समझ पाए? फिर उसका प्रमाण क्यों नहीं मांगते?'

इन भक्तों का कहना होता है कि बाबा की कृपादृष्टि से मिलने वाली आनंद की अनुभूति और उच्चस्तरीय आध्यात्मिक कल्याण जैसी बातें अनुभव से जानी ज सकती हैं। उन्हें प्रमाणाों की आवश्यकता नहीं है। उन्हें पूछने की जरूरत भी नहीं है, क्यों कि ऐसा करने से श्रद्धा भंग हो जाती है।

संविधान में नागरिकों के कर्तव्य के संदर्भ में उल्लेखित वैज्ञानिक दृष्टिकोण का सूत्र यह है कि प्रमाण मांगा जाए, उसे ठीक से जांच लिया जाए और उस सीमा में ही उस पर विश्वास रखा जाए। दैनिक व्यवहार में भी हम इस बात का ख्याल रखते हैं। मां पर हमारी श्रद्धा होती है, लेकिन ग्रहणकाल में उसकी सूचना के अनुसार दरवाजे-खिड़कियां बंद कर बैठना हम जरूरी नहीं समझते। पिता पर श्रद्धा होती है फिर भी लड़का उनके विचारों का विरोध करके अंतर्जातीय विवाह कर सकता है। एक विशिष्ट अवस्था में बड़े होने वाले गुरुजी दूसरी अवस्था में उस शिष्य के सहायक बन सकते हैं। शायद उसे गुरु का पद प्रदान कर उसके कनिष्ठ भी बन सकते हैं। ज्ञान का विकास इस पर निर्भर होता है कि किसने और कितनी मात्रा में किया। आइंस्टाइन का सिद्धांत समझने के लिए पर्याप्त अध्ययन और श्रम करने की जरूरत होती है। तब कोई भी विनशील व्यक्ति उसे समझ सकता है। महान वैज्ञानिक न्यूटन के सिद्धांतों की गलतियां आइंस्टाइन ने दूर कीं। उसके सिद्धांतों में खामियां दिखाने पर भी वैज्ञानिक विश्व में उसका समादर कम नहीं हुआ। प्रमाण मांगना और प्रश्न पूछना होशियारी और मानक व्यवहार है। यह मनुष्य को विकसित करता है।

बुवा, बाबा, स्वामी, गुरु जैसे व्यक्तियों के संदर्भ में आस्था ठोस अनुभव नहीं बल्कि श्रद्धा की अनुभूति का विषय बन जाती हैं जिस बाबा पर, गुरु

पर उनके चेलों की श्रद्धा होती है, उसे किसी बात की कोई आशंका नहीं होती बल्कि विश्वास होता है कि उसका कल्याण बाबा के हाथों सुरक्षित है। छोटे बच्चों की अपने मां-पिता पर जो श्रद्धा होती है, वैसी ही यहां भी होती है। बच्चा, जैसे ही बड़ा होता है, उसका माता-पिता के साथ व्यवहार या श्रद्धा उसके विवेक से निर्देशित होने लगती है। अनुकूल स्थिति में उसमें प्रेम, आदर और कृतज्ञता जैसी भावनाएं होती है। लेकिन बचपन की श्रद्धा बड़ा होने पर नहीं रहती ।

बालिग होने पर भी संतान यदि माता-पिता पर निर्भर रहेगी तो उसके बालिग होने पर शक होने लगेगा। श्रद्धालु बाबा के पैर पर अपने जीवन को समर्पित कर देने वाले भक्तों के संदर्भ में भी यही होता है, लेकिन श्रद्धा का स्वरूप थोड़ा पेचीदा है। बिना प्रमाण के जो सत्य के रूप में साबित नहीं हुआ हो, उस विधान को स्वीकारना विवेकसम्मत नहीं माना जा सकता। लेकिन बाबा के संदर्भ में दो उदाहरणों को लिया जाए तो इसकी जटिलता समझ में आएगी। फलां कर्मकांड करने पर निश्चत फललाभ होगा, बाबा के ऐसे शब्दों को प्रमाण मानना अथवा बाबा की दैवी शक्ति से नोटों की संख्या दुगुनी जाएगी, ऐसा मानना भी पूर्णतः अविवेक है। लेकिन किसी गुरु, स्वामी पर बाबा के समर्थक प्रचारित करते हैं कि उनके कारण मनुष्य का अंतिम कल्याण होता है, इसीलिए उनकी सूचनाओं के अनुसार आचरण करना चाहिए, तो इस प्रचार पर गहनता से सोचने की जरूरत हैं वे लोग श्रद्धा का रूप इस प्रकार बताते हैंः

अ) कुछ सत्य ऐसे होते हें, उनका ज्ञान मनुष्य की ज्ञानशक्ति से परे है।

आ) लेकिन वह मनुष्य के सवश्रेष्ठ कल्याण के लिए आवश्यक है।

इ) वह ज्ञान अधिकारी व्यक्तियों के जरिए लोक कल्याण के लिए ईश्वर की कृपा से प्रकट होता है।

ई) मेरे बाबा, स्वामी या गुरु एक ऐसे ही अधिकारी व्यक्ति है।

उ) इस ज्ञान की सत्यता या असत्यता साबित करना मनुष्य के बस की बात नहीं है।

ऊ) अधिकारी पुरुषों पर श्रद्धा रखकर ही इस ज्ञान को प्राप्त किया जा सकता है और अपना कल्याण किया जा सकता है।

उपर्युक्त अव्यवस्था की ठीक से जांच करने पर इसमें निहित अंतर्विरोध स्पष्ट होता हैः

(अ) सत्य मनुष्य के ज्ञान से परे है, फिर भी उसका ज्ञान मनुष्य को हो सकता है, ऐसा मानना अपनी ही खाल से बाहर छलांग लगाने जैसा काम है।

(आ) यदि ज्ञान व्यक्ति के सर्वश्रेष्ठ कल्याण के लिए आवश्यक है तो इस बात का प्रमाण भी आवश्यक तौर पर मिलना चाहिए। लेकिन यहां सिर्फ श्रद्धा से स्वीकारने की दलील दी जाती है जो जाहिर है, अपर्याप्त है।

(इ) ऐसा ज्ञान स्वयं ईश्वर ने बाबा को दिया है। यह बात सच है तो उस व्यक्ति या बाबा को संबंधित क्षेत्र का अधिकारी ज्ञाता नहीं माना जा सकता। यदि उस व्यक्ति को अधिकारी मानें तो ईश्वर या अन्य किसी शक्ति ने उसे ज्ञान दिया है, यह तर्कसंगत नहीं रह जाती।

(ई) ऐसा ज्ञान देने वाली शक्ति यदि असीम है तो वह सर्वत्र होगी। लेकिन कहा जाता है कि केवल बाबा ही सर्वज्ञ है। इस स्थिति की पड़ताल के लिए भक्त का सर्वज्ञ होना जरूरी हैं और ऐसा हो नहीं सकता इसीलिए वह सर्वज्ञता भी श्रद्धा से ही स्वीकार की जाती है।

(उ) ईश्वर है अथवा नहीं और मानवी शक्ति से परे सत्य है या नहीं, इस बात का ज्ञान न होते हुए भी दावा किया जाता है कि फलां व्यक्ति उस ज्ञान का अधिकारी है। ऐसा मानना अनुभव, तर्क और प्रमाण से परे छलांग लगाने की कोशिश है।

उपयुक्त सारा विवेचन समझने के बाद भी भक्त वास्तव में अपने-'अपने बाबा, गुरु-स्वामी पर श्रद्धा रखकर कुतर्क करते हें। उनका उत्तर यह होता है कि शक्की मिजाज वाले लो जैसा प्रमाण मांगते हैं, वैसा हमारे पास नहीं हैं लेकिन परमतत्व का स्पर्श कहिए, ईश्वर की कृपा कहिए या ज्ञानेंद्रीय से परे सत्य समझिए, यह अब कुछ अधिकारी व्यक्ति के जीवन में ही है क्योंकि उसके संकेत देखे गए हें। इसलिए उन पर निर्भर होकर उनकी सेवा में व्यं को समर्पित करना ही ठीक है। इसीलिए श्रद्धा में दृढ

निश्चय का महत्व होता हैं ऐसा समर्पण मानवीय समाज में युगों से देखा गया है।

गुरुगीरी के विरुद्ध सक्रिय आंदोलन की दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रश्न अगले मोड़ पर उठ खड़ा होता है। प्रश्न ऐसा है कि परमतत्व का स्पर्श जिस व्यक्ति को हुआ है, उसके पहचान की कौन सी निशानियां होती हैं? एक बात तय हे कि ये बाबा , स्वामी गुरु सामान्य जनता से अलग होते हैं। यह अलगाव दो प्रकारों का होता है।

(अ) ऐसे व्यक्ति जो भविष्य बताते हें, वह सच होता है। विज्ञान के नियमों के बंधन से परे वे चमत्कार भी करते हैं।उनके बोले गए शब्द अपने आप सत्य बन जाते हें।

(ब) दूसरे प्रकार में ये व्यक्ति चरम सद्व्यवहारी, सदगुणी एवं सज्जन होते हैं। उनका जीवन अलग स्तर का होता है। बुद्ध, तुकाराम अथवा गाड़गेबाबा ऐसे ही थे। उपर्युक्त दोनों प्रकारों के लक्षणों को संबंधित व्यक्तियों में ढूंढने का आकर्षण बहुसंख्य लोगों में होता है। उस मानसिकता से ही गुरुगीरी अथवा ढकोसले का जन्म होता है और वह कायम रहता है।

विवेकवाद का सार इस तत्व में ही है कि 'जिनके साक्ष्य मिलते हैं, उनबातों को ही सत्यमानना चाहिए।'उसमें श्रद्धा का कोईस्थान नहीं हैं ऐसी श्रद्धा के बिना मनुष्य उत्तम, सृजनशील, निःस्वार्थी जीवन जी सकता है, यह साबित हो चुका है। दूसरी ओर ऐसी मान्यता है कि श्रद्धा का रूप अगर विकृत, स्वार्थी, अविवेकी हो तो उसके विरुद्ध संघर्ष करना चाहिए। मनुष्य का सभ्य अथवा सुसंस्कृत होने का मतलब अन्य जीवों से और प्रकृति से अपने नैतिक संबंधों के विकल्प के अनुसार ही व्यवहार करना हैं यह विकल्प अनेक जीवन प्रकारों को सामने लाता हैं उन सम्मान करना चाहिए। इस अर्थ में मनुष्य की श्रद्धा एक अलग मानसिकता के रूप में प्रस्तुत हो सकती है जिसे मान्य किया जा सकता हैं लेकिन व्यक्ति, समूल और प्रकृति के संदर्भ में तथा उनके परस्पर संबंधों का ज्ञान मनुष्य के नैतिक जीवन से संगत होना चाहिए। इस 'एक्स-रे' की जांच-पड़ताल से ही जाना जा सकता है कि बाबा के प्रति व्यक्ति या प्रचारित श्रद्धा का वास्तिविक आधार क्या हैं

निर्मल और पवित्र जीवन जीना एक उच्च लक्ष्य हैं लेकिन उसे साधने के लिए बाबा की शरण में जाना किसी भी दृष्टि से फायदेमंद नहीं है। व्यक्ति को अपने मन की इच्छाएं? अभिलाषाएं एवं कामवासनाओं का ईमानदार एहसास होना चाहिए। व्यक्ति की स्वतंत्रता समता, मूल्य और प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता को महत्व दिया जातना चाहिए। स्वतंत्रता एवं निर्णय-क्षमता से ही व्यक्ति अपना आत्मसम्मान कायम रखकर जीवन का आनंद लेता हैं ऐसी जीवन-पद्धति में स्वैचार आने पर किसी बाबा या महाराज के आध्यत्मिक दर्शन पर लगाम जरूरी नहीं हैं जिस आत्मा-साक्षात्कार के लिए आध्यात्मिकता का प्रयत्न किया जाता है, उसके लिए मन की स्वतंत्रता आवश्यक है, किसी की संपूर्ण शरणागति की नहीं।

जिस आध्यात्मिक कल्याण के लिए लोग बाबा के पास जाते हें, उसकी कोई एक व्यवस्था या स्वरूप नहीं हैं इस संबंध में एकात्मकता भी नहीं हैं फिर भी 'जहां पर विज्ञान खत्म होता है, वहां पर आध्यात्म शरू होता है' जैसे चमकदार मगर कपटपूर्ण वचन सुनाए जाते हैं। आध्यात्मिक सफल जीवन ही जीवन की सार्थकता है, ऐसा ढिंढोरा पीटा जाता है। उसके लिए अपने गुरु, बाबा, स्वामी का आशीर्वाद एवं सत्संग आवश्यक है। प्रत्येक धर्म, पंथ एवं गुरु का अध्यात्म अलग-अलग होता है। बहुत बार वह परस्पर विरोधी भी होता है। इन सारी बातों पर गौर करने से भी अनुभव ऐसा है कि केवल बौद्धिक प्रतिवाद से व्यक्ति के मन में मौजूद कथित आध्यात्म का प्रतिवाद करना कठिन होता है। इसीलिए आध्यात्म का परंपरागत एवं सर्वमान्य अर्थ लगातार भी उचित प्रतिवाद किया जा सकता है।

अध्यात्म का सर्वमान्य एवं परंपरागत अध्ययन यह बताता है कि विश्व के प्रत्येक सजीव में एक आत्मा होती हैं परमात्मा विश्वव्यापक है। व्यक्ति के जीवन में ब्रह्म और परब्रह्म जब एक-दूसरे से मिलते हैं, तब ब्रह्मानंद सहोदर की अवस्था होती है; सच्चिदानंद की प्राप्ति होती है; अर्थात स्वयं का सत्य, शाश्वत तथा अखंड आनंदमयी स्वरूप प्राप्त होता है, उसकी प्रतीति होती है। अब सहज ही प्रश्न उठता है कि 'अब जीवन में और क्या चाहिए?'

लेकिन यह तो केवल शब्दाडम्बर है। प्रत्यक्ष आध्यात्मिक गुरु को कैसे पहचाना जाए? बिलकुल सरल निशानी है। ऐसा आध्यात्मिक व्यक्ति जीवन में सदाचार और संयम को अपनाता है। अपनी खुशी से त्याग को स्वीकार करता है। वह भौतिक सुखों से परे जीवन को पसंद करता है। ऐसे जीवन को वह लाख गुना अच्छा मानता है। लेकिन इन सबका वह दूसरों के सामने प्रचार करता नहीं चलता। वह करुणा-दृष्टि से मानवीय कार्य करता हैं जिस पकार शारीरिक कसरत बाह्य शरीर को मजबूत रखती है, चैसे ही आध्यात्मवृत्ति भी व्यक्ति के आंतरिक मानसिवक विकास का साधन होती है। इसीलिए ऐसे व्यक्ति के जीवन में सादगी, पवित्रता और करुणा का अपने आप प्रवेश हो जाता हैं अन्य लोग भी इसे महसूस कर सकते हैं। वस्तुतः जो आचरण में होता है, वह आध्यात्म है, बाकी सब केवल जबानी जमा-खर्च। व्यवहार में जो नैतिकता को जाग्रत् रखता है, वह सच्चा नाम-स्समरण होता है। इन निष्कर्ष पर सच्ची आध्यात्मिकता का पता चलता है। आध्यात्म के सच्चे और झूठे रूपों का स्वपष्ट करनेवाले उदाहरण इसी भूमि में मौजूद है। निर्मला माता देवी कुंडलिनी जाग्रत् कर अध्यात्म अराधना करती हैं। लेकिन देश-विदेशों में उनके संगमरमर के भव्य महल खड़े किए गए हैं नरेंद्र महाराज 'जियो और जने दो' का आध्यात्मिक उपदेश देते हैं, और अपने व्याख्यानों में बेधड़क इल्जाम लगाते हैं कि 'अनिस की समिति ईसाई मिशनरियों से पैसे लेकर धर्मांतरण का काम करती है।' एन.डी.पाटिल और नरेंद्र दाभोलकर के हाथ-पैर तोड़ देने की धमकी सरेआम देते हैं और इस संदर्भ में सवाल पूछने पर 'मैंने ऐसा कब कहा?' कहकर पलायन करने लगते हैं। हवाई-जहाज की यात्रा के नियमानुसार उन्हें ध र्मदंड नीचे रखने के लिए कहा गया तो उन्होंने अपने अनुयायियों के द्वारा एयरपोर्ट का नुकसान करवाया, जो राष्ट्रीय संपत्ति होती है। सत्यसाईं बाबा के नाम में ही सत्य है। लेकिन उसके आधार पर अपनी दैवी शक्ति की जांच-पड़ताल के लिए वे कभी तैयार नहीं हुए। उनके ही भक्तों ने जब उन पर हमला किया तब बाथरूम में जाकर छिप गए। हमलावर जब उस कमरे में पहुंचे तब उन सभी गोलियों चलाकर उन्हें मरवाया गया। इस संदर्भ में कोई बोलना नहीं चाहता। दीर्घकाल तक उनके पास दहने वाले विदेशी भक्तों ने उन पर समलिंगी संबंधों के गंभीर आरोप लगाए। इस पर भी चुप्पी साधी गई। ऐसे अनेक उदाहरण हैं। भक्तों की तरफ से प्राप्त चंदारूपी धन को भंडार के रूप में उनके अपने ही घरों में बंद रख जाता है; अथवा नजदीकी अनुयायी के द्वारा बिल्कुल गुप्त तरीके से व्यवहर में लाया जाता हैं आलीशान गाडियां, करोड़ों की जायदाद, खुद का एयरपोर्ट जैसे अमीर शौक पालने वाले रंगीले बाबा संयम शील, सदाचार, अपरिग्रह जैसी सच्ची आध्यात्मिकता की कसौटी पर तुरंत बेनकाब हो जाते हैं।

दूसरी तरफ महाराष्ट्र में गाडगेबाबा का उदाहरण हैं उन्होंने करोड़ों रुपए जमा किए, समाजसुधार के लिए खर्च भी किए। उन्हें 'काला अक्षर भैंस बराबर' था, फिर भी वे एक-एक पैसेका हिसाब तरतीब से रखते थे। पूरे जीवन में उनकी कमाई केवल एक छड़ी, पहनने के लिए फटे-पुराने कपड़े और सिर पर एक खपरैल का टुकड़ा-इतना ही था। जब उन्हें पता चाला कि उनके द्वारा चंदा जुटाकर बनाई गई धर्मशाला में उनकी पत्नी और बेटी रहती हैं, तो उन्होंने दोनों को वहां से हटवा दिया। हर रोज वे गांव में झाडू लगाते थे। अनेक गांव उन्होंने साफ किए। अपने कीर्तन से उन्होंने जनजागृति का कार्य किया। अंधविश्वासी, आडंबरों प्रहार किया।

दूसरा उदाहरण विनोबा भावे का है। उन्होंने बारह वर्षो तक पूरे देश की दो बार पदयात्रा की। लोगों से आह्वान कर उनसे 42 लाख एकड़ जमीन उन्होंने दान में ले ली। यात्रा केवल धोती और अंगोछा पहनकर की। अनेक भाषाएं सीख लीं। उन्हें दर्जन से अधिक भारतीय भाषाओं का ज्ञान प्राप्त था। आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन किया और उनकी अपनी फूटी कौड़ी भी नहीं थी। ऐसे तेजोमय उदाहरण देखने पर सच्ची आध्यात्मिकता के सामने नकली आध्यात्मिकता का घटियापन 'दूध का दूध और पानी का पानी' की तरह स्पष्ट हो जाता है।

क्रमशः

(डॉ. नरेंद्र दाभोलकर की पुस्तक 'अंधविश्वास उन्मूलन विचार' से साभार।

दूसरा वह अंतिम भाग...

अन्नाभाऊ साठे

(1 अगस्त, 1920 -18 जुलाई 1969)

अन्नाभाऊ की रूस यात्रा : एक सपने का सच होनाः

अन्नाभाऊ का जन्म सोवियत क्रांति के तीन वर्ष बाद हुआ था। किसी देश के बनने में तीन वर्ष की अवधि बहुत ज्यादा नहीं होती। इसलिए कह सकते हैं कि अन्नाभाऊ की जीवनयात्रा और सोवियत रूस की विकास यात्रा एक-दूसरे की सहगामी थीं। रूस रूपहले सपने की तरह अन्नाभाऊ की आंखों में बसता था। वे प्रायः सोचते, काश! श्रमिक क्रांति के बाद रूस के समाज में आए बदलावों को करीब से देख पाते। यह चाहत तब और प्रबल हो जाती जब रूस की शानदार प्रगति का कोई समाचार उन तक पहुंचता। रूस यात्रा की उनकी अभिलाषा कितनी गहरी थी, इसका वर्णन उन्होंने अपने यात्रा-वृतांत में स्वयं किया हैः

'मेरी अंतःप्रेरणा थी कि अपने जीवन में मैं एक दिन सोवियत संघ की अवश्य यात्रा करूंगा। यह इच्छा लगातार बढ़ती ही जा रही थी। मेरा मस्तिष्क यह कल्पना करते हुए सिहर उठता था कि मजदूर क्रांति के बाद का रूस कैसा होगा। लेनिन की क्रांति और उनके द्वारा मार्क्स के सपने को जमीन पर उतारने की हकीकत कैसी होगी! कैसी होगी वहां की नई दुनिया, संस्कृति और समाज की चमक दमक! मैं 1935 में ही कई जब्तशुदा पुस्तकें पढ़ चुका था। उनमें से 'रूसी क्रांति का इतिहास' और 'लेनिन की जीवनी' ने मुझे बेहद प्रभावित किया था। इसलिए मैं रूस के दर्शन को उतावला था।'

रूस यात्रा से पहले उन्होंने दो बार पासपोर्ट के लिए आवेदन किया था। पहली बार उनके आवेदन को बगैर कारण बताए निरस्त कर दिया गया था। असल में सरकार अन्नाभाऊ जैसे प्रतिभा-संपन्न कलाकार को, जिसकी लोकमानस पर गहरी पकड़ हो, जो जनता से उसी की भाषा में संवाद करने का हुनर जानता हो, रूस भेजने से घबराती थी। इस बारे में जब उन्होंने राज्य के मुख्यमंत्री से संपर्क किया, तो उनका उत्तर भी तिरस्कार भरा था, 'तुम हमारे प्रति शत्रु-भाव रखते हो। यह हमारी उदारता है जो तुम अभी तक बाहर हो; अन्यथा तुम जेल की सलाखों के पीछे होते।', शत्रु-भाव! माने जनवादी चेतना। अन्नाभाऊ जनता से उसी भाषा में संवाद करने में निपुण थे। अपने कई लोकगीतों में अन्नाभाऊ ने मुंबई में बसे श्रमिक वर्ग के जीवन की त्रास्दियों का जीवंत चित्रण कर, उनके स्वप्न-भंग की स्थिति को दर्शाया था। ऐसी रचनाएं किसी भी गैरजिम्मेदार सरकार के लिए बेचैनी का कारण बन सकती थीं।

प्रसंगवश उनकी दो लावणियों का उल्लेख किया जा सकता है। 'मुंबईची लावणी' (मुंबई की लावणी) तथा 'माझी मैना गावावीर राहिली' (मेरी प्रिया गांव में रहती है)। उनीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मुंबई में औद्योगिकीकरण की शुरुआत हुई थी। उससे रोजगार की तलाश में गांवों से श्रमिकों और कामगारों का पलायन आरंभ हुआ। उनमें से अधिकांश वे थे जिन्हें गांवों में भीषण गरीबी और सामंती उत्पीड़न का सामना करना पड़ता था। जो वहां रोजगार के अभाव में फाकाकशी का जीवन जीते थे। सामंती उत्पीड़न से मुक्ति और उपयुक्त रोजगार की साध लेकर वे मुंबई पहुंचे थे। वहां पहुंचकर पता चला कि हालात में लगभग ज्यों के त्यों हैं। केवल उत्पीड़क चेहरों में बदलाव आया है। गांव में वे सामंती उत्पीड़न और जातिवाद का शिकार थे। शहर में जातिभेद ज्यादा अंतर नहीं आया है, जबकि सामंत की जगह पुलिस और

कानून के नाम पर बनी संस्थाओं ने ले ली है। 'मुंबईची लावणी' में इसी पर कटाक्ष किया गया थाः

''मुंबई में शिखर पर मालाबार की पहाड़ियां हैं. वह इंद्रपुरी है, इंद्र देवता की नगरी. वह धनकुबेरों की बस्ती है. रात दिन सुख में आकंठ डूबे रहने वाले श्रीमंत लोग वहां रहते हैं. दूसरी ओर परेल हैं, जहां गरीब, मजदूर, कबाड़ी, भिखारी डेरा डाले हुए हैं। वे रात दिन पसीना बहाते हैं। कड़ी मेहनत के बाद जो मिल जाता है, उसे खा लेते हैं। तीन बत्ती, गोलपीठ और फोरस रोड पर, जिंदा रहने की कीमत पर, न जाने कितने शरीर रोज खरीदे बेचे जाते हैं।''

दूसरी लावणी 'माझी मैना गावावीर राहिली' में उन मजदूरों की विरह-वेदना और पीड़ा समाई थी, जो घर-परिवार को छोड़कर नए सपने और उम्मीदें लेकर मुंबई आए थे। वहां पहुंचकर वे स्वप्न-भंग की अवस्था में जी रहे थे। इंग्लेंड में अनियोजित मशीनीकरण से पनपी ऐसी ही विषमता ने कार्ल मार्क्स को भी उद्वेलित किया था, जिससे वे पूंजीवाद के विशद अध्ययन को उन्मुख हुए। फलस्वरूप दुनिया को 'दि कैपीटल' जैसा महान ग्रंथ प्राप्त हुआ था। गरीब-मजदूरों का दुख-दर्द देख अन्नाभाऊ का संवेदनशील मन आहत होता तो कहानी, उपन्यास और लोकगीतों के रूप में बाहर आता था। उनकी रचनाएं मुंबइया जीवन की हकीकत बयान करती थीं। ऐसा कलाकार लोगों के दिल पर भले ही राज कर ले, उस सरकार को, जिसमें श्रीमंतों का आधिक्य हो, कतई रास नहीं आता। अपने सरोकारों के कारण अन्नाभाऊ भी सरकार की आंखों की किरकिरी बने रहते थे।

बहरहाल, अन्नाभाऊ को रूस जाने का दूसरा अवसर 1948 में मिला था। इस बार उन्हें 'विश्वशांति सम्मेलन' के लिए आमंत्रित किया गया था। इस बार अभिनेता मित्र बलराज साहनी ने उनके लिए टिकटों का इंतजाम भी कर दिया था। लेकिन अन्यत्र व्यस्तता के कारण वे समय न निकाल सके।1961 में अन्नाभाऊ के उपन्यास 'फकीरा' (1959) को महाराष्ट्र सरकार का सर्वोच्च सम्मान प्राप्त हुआ। उस समय तक परिस्थितियां थोड़ी अनुकूल होने लगीं थीं। सरकार के मन में भी कम्युनिस्टों के प्रति पूर्वाग्रह में कमी आई थी। इस बार 'भारत-सोवियत सांस्कृतिक समिति' ने उनकी रूस-यात्रा का कार्यक्रम बनाया। दोनों सरकारें यात्रा के लिए राजी थीं, इससे पासपोर्ट-वीसा जैसी समस्या न थी। मगर किराये के लिए पैसों की किल्लत पहले जैसी बनी थी। फिर भी इस बार हालात कुछ अलग थे। अन्नाभाऊ को रूस यात्रा का निमंत्रण मिलने का समाचार जैसे ही प्रकाशित हुआ, स्वयं अन्नाभाऊ के शब्दों में 'रुपयों की मानो बौछार-सी होने लगी। देखते ही देखते आधे खर्च का इंतजाम हो गया।' जनता की सहानुभूति देख, अपनी इस मान्यता, 'जो कलाकार जनता के लिए जीता है, जनता उसके पीछे दीवार बनकर खड़ी होती है, पर उनका विश्वास और भी दृढ़ हो गया।

मुंबई से दिल्ली के रास्ते रूस जाने के लिए जब वे जहाज में बैठे तो अपनी साधारण वेशभूषा के कारण बाकी यात्रियों के बीच अलग नजर आ रहे थे। इस बात का उन्हें एहसास भी था। लेकिन यात्रा के दौरान विमान में ऐसी घटना घटी जिससे उनका सारा मलाल जाता रहा। उन्होंने स्वयं लिखा है:

''उस उड़ान में सम्मेलन में हिस्सा लेने रूस जा रहे, श्रीलंकाई प्रतिनिधि भी सम्मिलित थे। उन्हीं में से एक जो संसद संदस्य और कम्युनिस्ट पार्टी के मुख्य समाचारपत्र का संपादक थे, ने मुझे पहचान लिया। उसी महीने साहित्यिक पत्रिका 'मनोहर' में मेरा सचित्र परिचय मेरे तमाशे 'खाप्पया चोर' के चित्र के साथ प्रकाशित हुआ था। विमान के उड़ान भरने के कुछ ही समय बाद एक यात्री ने मुझे पहचान लिया। पत्रिका का अंक हवा में लहराते हुए उसने चुनौती दी कि 'खाप्पया चोर' को जो उड़ान के दौरान हवाई जहाज में ही मौजूद है, कौन पहचानेगा? उसके बाद यात्री उसे लेकर फुसफुसाने लगे। अंत में मुझे मेरे श्रीलंकाई मित्र के साथ पहचान लिया गया।',

उस समय तक अन्नाभाऊ का दूसरा उपन्यास 'चित्रा' भी रूसी भाषा में अनुदित हो चुका था। इसके अलावा उनकी कई कहानियां भी अनुदित होकर रूस पहुंच चुकी थीं। जिनमें उनकी कहानी 'सुलतान' भी थी। 'सुलतान' एक कैदी पर आधारित कहानी थी, जिससे लेखक की मुलाकात

अमरावती की सेंट्रल जेल में हुई थी। अन्नाभाऊ के रूस पहुंचने से पहले सुलतान वहां चर्चित हो चुकी थी। इसलिए अगले दिन के अखबारों की मुख्य खबर थी, "मशहूर कहानी 'सुलतान' का लेखक रूस में।" अन्नाभाऊ का लिखा नाटक 'स्तालिनग्राद' भी वहां चर्चा का विषय था।

मास्को में उन्होंने होटल के वेटरों, माली, फोटोग्राफर, ड्राइवर, लिफ्ट आपरेटर से दोस्ती की, और वहां के जनजीवन के बारे में जानकारी हासिल की। लेनिनग्राद में उन्होंने संग्रहालय में चंद्रगुप्त मौर्य के कार्यकाल के अनेक सिक्के देखे। रूस में नेहरू की लोकप्रियता को दर्शाती एक घटना का उल्लेख उनके यात्रा-वृतांत में है। जो नेहरू के प्रति उनके दिल में छिपे सम्मान को दर्शाता हैः

''मैं होठों के बीच सिगरेट दबाए रेड स्कवायर से क्रेमलिन की ओर बढ़ रहा था। मेरे पास माचिस नहीं थी और मैं उसके लिए इधर उधर देख रहा था। सहसा एक आदमी मेरे सामने आकर खड़ा हो गया। उसने लाइटर से मेरी सिगरेट सुलगा दी। मेरे लिए वह अप्रत्याशित था।

'क्या तुम भारतीय हो?' उस आदमी ने पूछा।

'जी हां.' कहकर मैंने उसे धन्यवाद देना चाहा। लेकिन अगले ही पल उसने मुझे अपनी बाहों में भर लिया और कहने लगा,

'कैसे हैं नेहरू जी?'

'वह बिलकुल ठीक2 हैं,' मैंने बताया, 'आज वे यूएनओ में भाषण देने जा रहे हैं।' सुनकर वह व्यक्ति बेहद प्रसन्न हुआ और नेहरू जी को धन्यवाद देता हुआ वहां से प्रस्थान कर गया।''

'भारत-रूस सांस्कृतिक समिति' द्वारा रूस की यात्रा के लिए गठित प्रतिनिधिमंडल में अन्नाभाऊ सबसे साधारण और सामान्य दिखने वाले इंसान थे। परंतु रूस की यात्रा पूरी होते-होते अन्नाभाऊ के बारे में उनके सहयात्रियों की धारणा एकदम बदल चुकी थी। प्रतिनिधिमंडल में मद्रास निवासी गिटारवादक जैकोब जिम भी शामिल था। स्तालिनग्राद से अजरबेजान की राजधानी बाकू की ओर वायुयान से जाते समय जैकोब ने अन्नाभाऊ से कहा था, 'साठे जी, जब हम आपसे पालम एयरपोर्ट पर मिले तो सोचते थे कि आप इस देश से अनजान होंगे और हमारे बीच जम नहीं पाएंगे। लेकिन वह हमारी चूक थी। आप इस देश में बहुत प्रसिद्ध हैं। और निस्संदेह आप अच्छे लेखक हैं। आपके ओजस्वी भाषणों से मैंने बहुत कुछ ग्रहण किया है।'

अन्नाभाऊ की 40 दिनों की रूस यात्रा अनेक अनुभवों से भरी थी। उनके लिए वह यात्रा एक सपने से गुजरने जैसी थी। एक समानता पर आधारित स्वतंत्र समाज का सपना जो वर्षो से उनके मानस में जड़ जमाए हुए था। रूस में उन्होंने विचार को वास्तविकता में बदलते हुए देखा। जाना कि संकल्प बड़े और नीयत अच्छी हो तो आदर्श और यथार्थ के बीच की दूरी कम होने लगती है। स्वप्न हकीकत में ढलने लगते हैं।

वर्ग-संघर्ष और सामाजिक न्याय को एक साथ साधने वाला जमीनी लेखकः

अपनी किशोरावस्था से ही अन्नाभाऊ वामपंथ के संपर्क में आए थे। सामाजिक विषमता और छूआछूत को उन्होंने बचपन से देखा-भोगा था। इसलिए छूआछूत और सामाजिक विषमता के विरुद्ध भारत में संघर्ष कर रहे डॉ. आंबेडकर के प्रति उनकी श्रद्धा भी स्वाभाविक थी। उपन्यास 'फकीरा' को जो इसी नाम के मातंग जाति के क्रांतिकारी के जीवन पर आधारित था, उन्होंने डॉ. आंबेडकर को समर्पित किया था। उनका समूचा लेखन उनके जीवनानुभवों का दस्तावेज है। एक कहानी संग्रह की प्रस्तावना में उन्होंने अपने इस द्रष्टिकोण को बड़ी बेबाकी से प्रस्तुत किया हैः

'जो जीवन मैंने जिया, जीवन में जो भी भोगा, वही मैंने लिखा. मैं कोई पक्षी नहीं हूं जो कल्पना के पंखों पर उड़ान भर सकूं। मैं तो मेडक की तरह हूं, जमीन से चिपका हुआ।'

एक प्रसिद्ध दोहे में उन्होंने हिंदुओं के शेषनाग के मिथ पर टिप्पणी करते हुए लिखा था, 'यह पृथ्वी शेषनाग के मस्तक पर नहीं टिकी है। अपितु वह दलितों, काश्तकारों और मजदूरों के हाथों में सुरक्षित है।' उनका कहना था कि कला शिवजी की तीसरी आंख की तरह होती है, जो संसार को भेदती हुई सभी मिथों को जलाकर भस्म कर देती है। इस आंख को सदैव सतर्क रहना

चाहिए, तथा मनुष्य के हितों की देखभाल करनी चाहिए। अन्नाभाऊ के सरोकार मानवीय थे। उनके लेखन में कल्पनातत्व सिर्फ उतना है, जितना रचनात्मक बने रहने के लिए आवश्यक होता है। वे रूसी लेखकों में गोर्की से बेहद प्रभावित थे, जिन्होंने हाशिये के पात्रों को मुख्यधारा के साहित्य में जगह दी थी। अन्नाभाऊ भी अपनी लावणियों, लोकगीतों, कहानियों, उपन्यासों आदि के माध्यम से आम आदमी की चिंताओं और सरोकारों को जगह देते हैं। विशेषरूप से अछूत जातियों की समस्याओं तथा उनके चरित्र के उदात्त पहलुओं को बार-बार उठाते हैं। यही कारण है कि लिखते समय उन्होंने कल्पना का कम से कम सहारा लिया है। 'मेरे सभी पात्र जीते-जागते समाज का हिस्सा हैं। यह उनका दावा भी था।

अन्नाभाऊ ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में गरीबी और जातीय उत्पीड़न के सताए लोगों को जगह दी थी। ऐसे लोग जो साहित्य में उपेक्षित थे। उनकी कहानियों में महार, मांग, रामोशी, बालुतेदार और चमड़े का काम करने वाले पात्र समाए हुए हैं। न केवल उनकी जीवंत उपस्थिति है, अपितु उनकी पीड़ाओं और संघर्ष को भी सम्मान के साथ सहेजा गया है। अन्नाभाऊ की एक बहुत ही मार्मिक कहानी है, 'तीन भाकरी'। गांव में दो औरतें रहती हैं। उनके बीच सास-बहू का रिश्ता है। दोनों मेहनत-मजदूरी करती हैं। अगर किसी दिन मेहनत से चूक जाएं तो घर का चूल्हा ठंडा पड़ा रहता है। बेहद गरीबी का जीवन जी रही वे औरतें आपस में हमेशा लड़ती रहती हैं। गांव के लोग अशिक्षित, रूढ़िवादी और भूत-प्रेत में विश्वास रखने वाले हैं। दोनों स्त्रियां अछूत हैं। इस कारण गांव-भर की उपेक्षा और तिरस्कार का शिकार हैं। एक दिन सांताजी, कहानी का एक पात्र बताता है कि दोनों भुखमरी की कगार पर हैं। उनके पास कुछ भुट्टे थे, जिससे केवल तीन रोटियां बन सकती हैं। दोनों स्त्रियां पेशोपेश में हैं कि रोटियों का बंटवारा कैसे होगा। दोनों सोचती है कि अगर वह रोटी बनाए तो दो रोटियों पर उसका अधिकार होगा। बहू का भी यही विचार था। परिणाम यह होता है कि दोनों सोचते-सोचते लेट जाती हैं। अगले दिन भूख के कारण उनके प्राण चले जाते हैं।

उनकी सुप्रसिद्ध कहानी 'सुलतान' जो एक कैदी की कहानी पर केंद्रित है, के प्रमुख पात्र सुलतान का मानना है कि मनुष्य को उसकी जरूरत की चीजें रोटी, कपड़ा और मकान आसानी से प्राप्त होनी चाहिए। लेकिन गरीबी के कारण उसका सोच आगे नहीं बढ़ पाता। अंततः वह केवल इसलिए जेल चला जाता है क्योंकि मनुष्य को वहां उसकी न्यूनतम आवश्यकता की तीनों चीजें आसानी से उपलब्ध होती हैं। कुछ ऐसा ही दूसरी कहानी के पात्र भोमक्या और गोपिकाबाई भी करते हैं। भुखमरी से बचने के लिए भोमक्या सुलतान की तरह जेल चला जाता है तो गोपिकाबाई एक किसान की शरण ले लेती है। भोमक्या या सुलतान में से कोई भी अपराधी मनोवृत्ति का नहीं था। उन्होंने जेल में रहना केवल इसलिए पसंद किया था, क्योंकि वहां उनकी न्यूनतम आवश्यकताएं आसानी से पूरी हो जाती थीं। अन्नाभाऊ जेल जाने को भुखमरी की समस्या का समाधान नहीं मानते। बल्कि जेल को ऐसा ठिकाना मानते हैं, जहां नागरिक जीवन और मनुष्य का विकास एक साथ ठहर जाते हैं।

एक और कहानी 'सांवला' का उल्लेख यहां आवश्यक है। कथानायक सांवला पुरुषसत्तात्मक समाज में स्त्री के पक्ष में सवाल उठाता है। रामोशी और मांग जाति के अपने मित्रों के साथ वह ब्रिटिश सत्ता से टकराता है। वे सभी अपने कार्य के प्रति ईमानदार हैं। इस बीच सांवला और उसके साथियों को काशी नाम की युवती के बारे में पता चलता है। ससुराल में दहेज-उत्पीड़न की शिकार है। अपने साथियों के साथ सांवला काशी को उसके सास-ससुर के चंगुल से मुक्ति दिलाने के लिए संघर्ष करता है। इसपर उसके सास-ससुर सांवला पर काशी के साथ बलात्कार का आरोप लगा देते हैं। आरोप से क्षुब्ध सांवला काशी के ससुर से कहता हैः

'दादा पाटिल! क्या आप सोचते हैं कि सिर्फ आप ही बेदाग चरित्र वाले हैं, क्या आप हमें चरित्रहीन मानते हैं, आपसे किसने यह कहा है?

'लोग कहते हैं कि सभी मांग बलात्कारी होते हैं।' यह सुनकर सांवला को क्रोध आ जाता है। वह कहता है, 'कौन हैं वे लोग, मुझे बताओ। मैं उनकी पूरी दुनिया को जलाकर भस्म कर दूंगा।'

.....26 पर

मैं कैसे तर्कशील कैसे बना ? '

-कुलविंदर नागरी

जब मैं अपने तर्कशील बनने की प्रकिया को देखता हूँ तो बचपन से बने कारणों को समझने की कोशिश करता हूं, तो ऐसा लगता है कि मैं बचपन में जिस द्वन्दवादी परिवेश से जुड़ा था। उससे ही आगे बढ़ते हुए तर्कशील बनने तक पहुंचा। मेरा जन्म एक इस्लामिक परिवार में हुआ था, लेकिन गाँव में एक मात्र मुस्लिम घर होने के कारण बचपन में जिन दोस्तों के साथ खेलने का मौका मिला उनमें से ज्यादातर सिख धर्म से जुड़े थे। खेलते खेलते कब दोस्त बन गए ,पता ही नही चला। मैं अक्सर गुरुद्वारा के स्पीकर पर शाम को खेलते समय कीर्तन अरदास को सुनता था और देखता था कि सभी दोस्त खेल बन्द करके गुरुद्वारा में चले जाते वे अरदास में शामिल होते व बाद में प्रसाद ग्रहण करते ,मैं भी इसी प्रकिया में शामिल हो गया,क्योंकि अरदास के बाद, प्रसाद वितरण होता था जो मैं भी ग्रहण करता और अक्सर गुरुद्वारा में जाता शायद पहले प्रसाद को लेने के लिए जाता था लेकिन पता ही नही चला कब सिख धर्म के आचरण व्यवहार को आत्मसात करता गया, मुझे कीर्तन अरदास में आनन्द आने लगा। सिगमंड फ्रायड ने इस समूह-मनोविज्ञान के बारे में बताया है- एक व्यक्ति समूह का हिस्सा बनना शुरू कर देता है, अपने व्यक्तिगत मानस को त्यागकर और समूह के विचारों को गले लगाता है। यह मनोवैज्ञानिक सच्चाई बाद में मुझे भी प्रभावित करने लगी। दिन-प्रतिदिन मेरे मन में सिख विचारधारा का रंग चढ़ने लगा। हमारे आसपास के गाँवों में संतों के दीवान लगा करते थे। हम दोस्त एक साथ सत्संग सुनने जाया करते थे, जिसमें हम जो शब्द सुनते हैं उनके सम्मोहन में फंसते जाते है और धार्मिक जगहों पर माहौल भी प्रभावित करने वाला होता है। जैसे-जैसे समय बीतता गया, मेरे दिमाग पर सिख धर्म की पकड़ मजबूत होती गई। किशोरावस्था के दौरान, मैंने आखिरकार अमृत पान करने का मन बना लिया। जब मेरे परिवार और रिश्तेदारों को मेरे अमृतपान करने के बारे में पता चला तो वे बेहद खफा हो गए। रिश्तेदारों ने विशेष रूप से मेरे नानका परिवार ने इस फैसले की घोषणा कर दी कि अगर लड़के ने अमृतपान किया तो वे उनके घर में प्रवेश नहीं करेंगे। मैंने पूछा कि इसमें गलत क्या है? उन्होंने कहा कि यह उनके मजहब के खिलाफ है। मैंने कहा मैं तो पूरी तरह धर्म को ग्रहण करने जा रहा, इसमे गलत क्या है? सभी धर्मो को लोग समान ही कहते हैं वे कहने लगे कि उनका एकमात्र धर्म इस्लाम है वह ही उनके लिए मान्य है जिसे अल्लाह ने हमारे लिए पवित्र कुरान में जायज ठहराया है। मैं चकित था कि सभी धर्म कहते हैं कि केवल एक ही ईश्वर है, फिर धर्मो के नाम पर लोगों के लिए एक ईश्वर से अलग अलग आदेश क्यों? जब सभी धर्म ईश्वर से जुड़ने का रास्ता बताते हैं तो लोग एक-दूसरे के धर्मो को अपनाने का विरोध क्यों करते हैं? धर्म अलग क्यों होते हैं? ऐसे कई सवाल मेरे मन में उठने लगे। इन सवालों के जवाब जानने के लिए शुरू किए गए शोध के दौरान, मैं निश्चित रूप से किसी भी धर्म से संबंधित पुस्तक पढ़ सकता था जब अध्ययन शुरू किया तो धार्मिक पुस्तकों से कुछ चौंकाने वाले तथ्य सामने आए। इसे पढ़ने के बाद, पता चला कि धर्मो में इतना विरोध क्यों है? जब भी मैं किसी शहर में जाता, मैं एक पुस्तक स्टाल से कुछ किताबें पढ़ने के लिए लाता। एक दिन मुझे एक पुस्तक स्टाल से तर्कशील सोसायटी पंजाब की कितना 'बाबा भरम तोड़' मिली। इस पुस्तक को पढ़ने के बाद, तर्कशील सोसायटी से जुड़ने व अन्य पुस्तकों को पढ़ने की इच्छा पैदा हुई। उसके बाद मैंने तर्कशील सोसायटी पंजाब का बहुत सारा साहित्य पढ़ा। जैसे कि मैंने तर्कशील साहित्य पढ़ा, मेरी सोच दिन-ब-दिन स्पष्ट

होती गई। तर्कशील साहित्य पढ़ने से धर्म और ईश्वर के बारे में मेरा मन साफ हो गया। अब मैं धर्म से पूरी तरह मुक्त हो चुका था। आखिरकार मैं खरड इकाई से सम्पर्क किया और चंडीगढ़ के माध्यम से तर्कशील सोसायटी पंजाब की इकाई का सदस्य बन गया। साहित्य के साथ चर्चा और तर्कशील सोसायटी के सदस्यों ने मेरी सोच को इतना बदल दिया कि मेरा धार्मिकता खत्म होने लगी।अब मैं धर्म का असली चेहरा देख सकता था। धार्मिक साहित्य को पढ़ते हुए, यह पाया गया कि प्रत्येक समाज को धर्मों से परे छोटे संप्रदायों, गुटों और संप्रदायों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक संप्रदाय के अपने अनुष्ठान और पूजा स्थल हैं। वास्तव में, धर्म की अवधारणाएं क्षेत्रीय हैं क्योंकि वे एक विशेष क्षेत्र से संबंधित हैं। लेकिन विज्ञान के सिद्धांत, सार्वभौमिक होने के नाते, समय और स्थान के साथ नहीं बदलते हैं, बल्कि सभी के लिए समान रूप से लागू होते हैं। इसलिए, 'क्षेत्रीय विज्ञान' या 'राष्ट्रीय विज्ञान' जैसी कोई गुटबाजी नहीं है। भविष्य में, वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी के आदान-प्रदान और वैज्ञानिक चेतना के प्रसार के साथ, राष्ट्रीय गौरव और देशभक्ति जैसी संकीर्णता की दीवारें भी ढहने लगती हैं। धर्म केवल सरबत दा भला का नारा देता है लेकिन सरबत दा भला का वास्तविक लक्ष्य केवल वैज्ञानिक सोच को अपनाने से ही प्राप्त किया जा सकता है। आज मैं धर्म के बजाय वैज्ञानिक सोच को अपना कर बहुत खुश हूं क्योंकि धार्मिक संप्रदायों में एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ है, जबकि बुद्धिवाद पिछड़ते हुए विलय की प्रक्रिया है। मुझे इस तरह के वास्तविक सार्वजनिक हितों के लिए समर्पित संगठन, तर्कशील सोसाइटी पंजाब (रजि.) का सदस्य होने पर गर्व है। मुझे इस बात पर भी गर्व है कि मेरी जीवन साथी बीबी सुखवीर कौर भी तर्कशील सोसायटी पंजाब की खरड इकाई की सदस्य हैं।

मीडिया प्रमुख,तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि.)
यूनिट खरड़ -पंजाब

पंजाबी से अनुवाद : गुरमीत अम्बाला

पृष्ठ...24 का शेष... आध्यात्मवाद

कहानी स्त्री समानता और स्वाधीनता के पक्ष में समाप्त होती है।

ऐसे विद्रोही चरित्रों से अन्नाभाऊ की कहानियां भरी पड़ी हैं।

अन्नाभाऊ के रचनाकर्म का कोई भी उल्लेख उनके उपन्यास 'फकीरा' के बिना संभव नहीं है। उनके अधिकांश कथापात्रों की तरह इस उपन्यास का कथापात्र फकीरा भी वास्तविक जीवन से उठाया गया है। वह जाति से मांग और शाश्वत विद्रोही है। फिर भी मानवीय है। अवसर आने पर वह अपने पिता के हत्यारों को मारने के बजाय, उन्हें महज दंड देकर छोड़ देता है। उपन्यास जहां सामाजिक रूढ़ियों पर प्रहार करता है, वहीं जाति के जंजाल में फंसी अछूत जातियों की पीड़ा को भी सामने लाता है। महाराष्ट्र में मांग और महार कहीं-कहीं प्रतिद्वंद्वी जातियों के रूप में सामने आती हैं। इस उपन्यास में अन्नाभाऊ इन दोनों अछूत जातियों की एकता पर भी जोर देते हैं।

कुल मिलाकर अन्नाभाऊ का समस्त रचनाकर्म समाज में हाशिये पर पड़े लोगों के संघर्ष और चारित्रिक विशेषताओं को सामने लाता है। यह दुख की बात है कि उनके रचनाकर्म का हिंदी अनुवाद उनके निधन के 50 वर्ष बाद भी अनुपलब्ध है। अन्नाभाऊ की आस्था मार्क्स और आंबेडकर दोनों में थी। वे दोनों को साथ-साथ साधना चाहते थे। जबकि अधिकांश दलित लेखक मार्क्स और मार्क्सवादी लेखन की उपेक्षा करते आए हैं। अन्नाभाऊ के रचनाकर्म के हिंदी में न आने के पीछे कदाचित यह भी बड़ा कारण है। लेकिन इससे अन्नाभाऊ के प्रति जो अन्याय हुआ है, उसकी भरपाई असंभव है।

किया वादा वफ़ा उसने
उजाले हर तरफ होंगे
हवा को दे दिया ठेका
चरागों की हिफाज़त का

-मंजीत भोला

प्रेम करना भी जरूरी है और ज्ञान भी

–ब्रट्रैंडरसेल
(ब्रिटिश दार्शनिक)

मेरे लिए मुक्त विचार या उदारवाद का महत्व सर्वाधिक है।

मेरा खुद किसी ज्ञात धर्म से कोई संबंध नहीं है और मेरा यह भी मानना है कि हर तरह की धार्मिक सोच का एक दिन अंत हो जाएगा। मैं इसमें भरोसा नहीं करता कि धार्मिक विश्वास मनुष्यता का भला करता है। यद्यपि मैं यह स्वीकार करने के लिए तैयार हूं कि कभी-कभी और कुछ जगहों पर धार्मिक विश्वासों का मनुष्यता पर अच्छा प्रभाव पड़ा है। लेकिन मेरा मानना है कि धार्मिक विश्वास वस्तुतः मनुष्य के विचार की शैशवावस्था है। जैसे-जैसे मनुष्य मानसिक रूप से विकसित होता जाता है, धर्म का महत्व उसके लिए कम होता जाता है।

पारंपरिक धर्मो ने मनुष्यता का किस हद तक नुकसान किया है, यह इस तथ्य से जाना जा सकता है कि उन्होंने उदार चिंतन को व्यापक तौर पर फैलने से रोका है। हालांकि धार्मिक चिंतन ने व्यापक तौर पर कितना नुकसान किया है, इसके संपूर्ण विश्लेषण में समय लगेगा लेकिन तात्कालिक तौर पर इससे हुई क्षति के बारे में जाना जा सकता है। **मैं चूंकि धर्म में विश्वास नहीं करता, इसलिए धर्म पर विश्वास करते हुए मैं अपनी जान नहीं दे सकता, क्योंकि मुझे पता है कि मेरा धार्मिक विश्वास गलत भी हो सकता है। ईश्वर के प्रति भय ही मनुष्य में अंधविश्वास भरता है, जो क्रूरता का एक स्रोत है। इस भय पर विजय पाना ही ज्ञान की शुरुआत है।**

मुक्त चिंतन के संदर्भ में जब हम मुक्त की बात करते हैं, तो इसका अर्थ तब तक स्पष्ट नहीं होता, जब तक कि हमें यह मालूम न हो कि यह किससे मुक्त है। मुक्त विचार तभी मुक्त है, जब तक कि हमें यह मालूम न हो कि यह किससे मुक्त है। मुक्त विचार तभी मुक्त है, जब तक कि उस पर किसी तरह का बाहरी नियंत्रण या अंकुश न हो। व्यावहारिक तौर पर हम पाते हैं कि कोई भी विचार पूरी तरह मुक्त नहीं होता, और किसी न किसी किस्म का अंकुश हमेशा काम करता है।

इस दुनिया में शायद ही ऐसा कोई देश हो जहां मुक्त विचार या अभिव्यक्ति की सौ फी सदी अनुमति हो। जैसे कि इंग्लैंड में ईशनिंदा कानून के तहत ईसाई धर्म के प्रति अविश्वास जताना गैरकानूनी है, हालांकि सच्चाई यह है कि समद्ध और प्रभावशाली लोग भले ही ईसाइयत के प्रति अविश्वास जताएं, लेकिन ऐसे लोगों के खिलाफ कभी कानूनी कार्रवाई नहीं होती। ऐसे ही, अमेरिका में प्रवेश करने वालों को सबसे पहले यह घोषित करना पड़ता है कि वे अराजकता तथा बहुपति या बहुपत्नी प्रथा में विश्वास नहीं करते। और अमेरिका में प्रवेश करने के बाद उन्हें कम्युनिज़्म पर भी अविश्वास करना होता है। ऐसे ही, जापान में सम्राट मिकाडो की दैवी छवि के प्रति विश्वास व्यक्त करना गैरकानूनी है।

मुक्तचिंतन की अनुमति का अर्थ यह है कि किसी तरह की अभिव्यक्ति पर कानूनी कार्रवाई की तलवार न लटकती हो। व्यावहारिक तौर पर ऐसा नहीं है। दुनिया का प्रत्येक देश धर्म या परंपरा के नाम पर स्वतंत्र विचार को किसी न किसी तरह बाधित करता है। लेकिन ज्यादातर देश समझते हैं कि वे उदार हैं तथा मुक्त चिंतन को तरजीह देते हैं।

अलबत्ता चाहे कोई धार्मिक हो या मेरी तरह नास्तिक, प्रेम को जो जीवन का पर्याय समझेगा, वही व्यक्ति जीवन में सफल और और सुखी होगा। प्रेम से डरना या उससे दूर भागना वस्तुतः जीवन से ही दूर भागना हैं। धार्मिक लोग कहते हैं कि धर्म के अनुपालन से जीवन बेहतर होता है। लेकिन मेरा मानना है कि प्रेम से प्रेरित और ज्ञान से निर्देशित जीवन ही वास्तव में बेहतर जीवन है।

■

बुद्धत्व ज्ञान प्राप्ति

-अनिल रंगारी

क्या है वास्तविकता- एक परीक्षण

सिद्धार्थ गौतम को ध्यान, विपस्सना, मेडिटेसन से बुध्दत्व, संबोधि ज्ञान किस तरह प्राप्त हुआ? क्या आजके आधुनिक युग मे विविध कानूनों, विविध वैज्ञानिक, सामाजिक लिखित ज्ञान के अध्ययन, शिक्षा के बगैर केवल ध्यान विपस्सना मेडिटेसन करने से ही उसी प्रकार का बुद्धत्व, संबोधि, अर्हत्व ज्ञान प्राप्त हो सकता है जो विविध सामाजिक, जनसमस्यायें निवारण करने मे व्यक्ति को सक्षम बनाता हो? हमारी नासमझी के कारण हम सार्थक सही प्रयास नहीं करते और व्यर्थ के प्रयासों मे जीवन बर्बाद करते हैं और जनसमस्यायें कम करने की बजाय और भी बढती जाती है। लोगों का भ्रम निवारण मे थोड़ा सा प्रयास किया हूँ जिसे समझने के लिए चार भागों मे विभक्त किया है।

1. ध्यान- मेडिटेसन का मूल अर्थ ही मन को चित्त को शांत, चिंतामुक्त, विचारशून्य, विचारमुक्त, विचार रहित करना होता है। जितना हो सके उतना कुछ भी चिंतन विचार नही करना, कुछ भी नही सोंचना। तभी मन के उपर का बोझ, ताण, तनाव, भारीपन कम होता है, मन शांत होता है, मन हलका लगता है। यही ध्यान मेडिटेसन का मूल अर्थ है, मुख्य काम है। ध्यान करने की विधी प्रक्रिया कोई भी हो, उद्देश मन को शांत, विचारशून्य, तनाव मूक्त करना होता है। ध्यान थोड़ी देर, आधा घंटा, एक घंटे तक भी कर सकते है। इसे बिना किसी विधि, तंत्र, प्रक्रिया, आलंबन के भी कर सकते है। लेकिन जो इसके लिए किसी प्रक्रिया विधीतंत्र आलंबन का उपयोग करते है, उस तंत्र विधी के स्वरूप और प्रॅक्टिस पर निर्भर होता है कि वह कितना परिणाम कारक है। सबसे साधारण प्रक्रियावाला आलंबन है- ओम जैसे शब्दो का जाप करना या श्वास पर लक्ष केंद्रित करना- आनापान सति, आती जाती श्वास पर लक्ष केंद्रित करना। जब तक साधना प्रॅक्टिस करेंगे तब तक कुछ नही सोचना, केवल आनापान श्वास पर ही ध्यान रखना और जो जैसी संवेदना मन को सहसूस हो उसे वैसे ही महसूस करते रहना। इससे कांसियस माईड पर विचार प्रक्रिया बंद रखने से हलका हलका दबाव पडकर यानि कांसिअस माईड की क्रियाशिलता कम होकर मन शांत होते रहता है। प्रतिदिन के साधना अभ्यास से कुछ लोगों को मानसिक, शारीरिक स्वास्थ्य लाभ हो सकता है।

गोयनकाजी और उनके प्रचारक विपस्सना ध्यान साधना के लिए (उनके साहित्य में) बारबार कहते हैं कि इसमे विचार तर्क वितर्क चिंतन नही करना, कुछ सोंचना ही नही, अपने आप अनुभव ज्ञान हो जाएगा। जब गहरी (डीप) विपस्सना ध्यान साधना होगी तब निब्बाण प्राप्त होगा। इस साधारण अभ्यास मे फिर भी कांसिअस माईड का कार्य धीमी गति से चलता रहता है, मन मे कुछ न कुछ विचार उठते रहते है। क्योंकि कम समय मे, कम दिनों मे डीप गंभीर स्थिती उत्पन्न नही होती। ज्तंदबम गुंगी स्थिती उत्पन्न नही होती। कई योगा प्रशिक्षकों ने भी विविध देशों में अपने योग- ध्यान मेडिटेशन के सेंटर खोले है। कई तो लोगों को, गुलिबल्स को ठगाकर अपना धन्धा व्यवसाय चलाते हैं। गोयकाजी कहते है, दीर्घकाल तक डीप विपस्सना करते रहने से मन मे कोई विचार तर्क वितर्क न उठे, मन शांत हो, मन मे कुछ भी संवेदना उत्पन्न न हो तो इस शांत स्थिति को गोयनकाजी निब्बाण कहते है। मन से कुछ भी रिएक्ट नही होने की स्थिति को जानना, यानि डीप विपस्सना मे मन कुछ भी रिएक्ट नहीं करता इसकी खोज को गोयनकाजी बुद्ध का संबोधीज्ञान कहते है। यह गोयनका का प्रचार पूर्णता गलत और झूठ है। इसलिए गोयनका की यह विपस्सना प्रशिक्षण मूवमेंट सर्वाधिक धोकादायक है। शोषकों का यह गुप्त एजेंडा है जो दुनिया भर मे ध्यान योग विपस्सना मेडिटेसन के नाम पर फैला रखे है।

कुछ लोग ध्यान का अर्थ होश रखना, लक्ष करना ऐसा करते हैं। बोलचाल की भाषा मे ध्यान-रखने का अर्थ अलग होता है और ध्यान-करने करने का अर्थ अलग होता है। माँबाप का ध्यान रखना, ध्यान से पढाई करना, गाड़ी ध्यान से

चलाना आदि। CARE ATTENTION लक्ष्य ध्यान होश सतर्कता यह अर्थ अलग है जो मेडिटेशन ध्यान विपस्सना के विपरीत है, भिन्न है। ध्यान-लक्ष्य मे कांसीअस माईंड सतर्क विचारपूर्वक रखा जाता है तो ध्यान-समाधि मे मे कांसीअस माईंड धीमा या बंद यानि विचाररहित रखने का पूरा प्रयास किया जाता है। इन बातों को ठीक से समझना चाहिए।

2. गंभीर ध्यान, डीप मेडिटेसन, डीप विपस्सना ! उपर्युक्त ध्यान विपस्सना साधना को ही दीर्घकाल तक डिपली, गंभीर, गहन, सखोल स्तर तक, कई दिनों कई महीनों, कई वर्षो तक करते रहना जब तक उद्देश्य पूर्ण हो जाए, जब तक अपेक्षित अनुभव ज्ञान प्राप्त न हो जाए। इस गंभीर डिप स्थिति में सोचना विचार करना पूर्णता बंद करना होता है, कांसिअस माईंड का कार्य मंद-बंद हो जाता है और trance अवस्था उत्पन्न होती है। जिन जिन साधकों की यह मान्यता होती है कि इससे ईश्वर प्राप्ति, आत्मा का परमात्मा से मिलन, आत्मबोध, ईश्वर बोध होता है, मोक्ष, कैवल्य प्राप्त होता है, कुछ बौद्ध मान्यता के अनुसार निर्वाण बुद्धत्व संबोधिज्ञान प्राप्त होता, ऐसी मान्यता के अनुसार वे साधक इस गंभीर डिप ध्यान विपस्सना प्रक्रिया का उपयोग करते हैं। विविध प्रशिक्षकों, गुरूओं, विविध मतों के विविध तकनिके होती है। बुद्धघोष ने तो दस कसिन तंत्र विधियों का प्रचार किया था। कुछ प्रशिक्षक, साधक आत्म सम्मोहन के तरीके भी उपयोग मे लाते है। जैन साधक प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करते हैं- कैवल्य प्राप्त करने के लिए। यह डीप गंभीर ध्यान विपस्सना प्रक्रिया साधक को गुंगी Trance सम्मोहन की अवस्था तक पंहुचाता है। जो साधक इस गुंगी अवस्था में, आत्मसम्मोहन की स्थिती मे पंहुचते हैं। वे अपनी अपनी मान्यता के अनुसार आत्मभ्रम, आत्म साक्षात्कार के अनुभव प्राप्त कर सकते है। यह भ्रम का अनुभव उन्हें सच लगने लगता है। यह बहुत ही कठिन पद्धति प्रक्रिया है। शायद ही कोई ऐसी अवस्था तक पंहुच पाते है। कई साधक, भिक्खु आजीवन प्रयास से भी ऐसी अवस्था तक नही पंहुच पाते। इससे कभी कुछ को सायचिक पागलपण की समस्या भी हो जाती है। प्राचिन काल मे, वैदिक काल मे ऋषि मुनि ऐसी ध्यान साधना का उपयोग करते थे। कुछ बौध्दों में भी अर्हत्व, बुद्धत्व, संबोधिज्ञान प्राप्ति के लिए इसका प्रचलन है। ट्रांसेंडेंटल मेटॅफिजिक्स के अंतर्गत पूर्ण नैतिकता के साथ इध्दीविधान- लौकिक इध्दी, लोकोत्तर इध्दी, मनोमया इद्धी (से भ्रम ज्ञान) की शक्तियां प्राप्त करने को ही वास्तविक निब्बाण या अर्हत्व प्राप्ति माना गया है।

सिद्धि प्राप्त करने के लिए धर्माचार्यो ने अपने साधना योगाभ्यास मे मंत्र मद्य मांस मैथुन का भी पूरा उपयोग किया और दिव्य शक्ति प्राप्ति का ढोंग करते रहे। (बोधिचर्यावतार, शांति भिक्षु शास्त्री)। बुद्धघोष के विशुद्धी मग्ग की यही कसीन तंत्र की शिक्षा है। महेश योगी के ट्रांसेंडेंटल मेडिटेसन के सेंटर्स ऐसे ही थे। ओशो रजनीश ने तो अपने केंद्र मे वज्रयान भैरवी कामभोग समाधि को बढावा दिया जो पहले महायान में था।

कुछ वैज्ञानिक, रेशनॅलिस्ट सोसायटी के संस्थापक वैज्ञानिक अब्राहम थामस कोवूर, सम्मोहनतज्ञ श्याम मानव, अंधविश्वास निर्मूलन समिति आदि ने ऐसे डीप ध्यानों से प्राप्त अनुभव, भ्रमों को सिद्ध कर दिया है कि यह Trance गुंगी अवस्था में, Halucination सम्मोहन अवस्था मे प्राप्त किये भ्रम के अनुभव होते हैं। ऐसे अनुभव कुछ ड्रग्स, एल. एस. डी., गांजा, भांग के सेवन से भी उत्पन्न किये जाते है। मन माईंड मे उत्पन्न अल्फा रिदम, हॅलुसिनेसन स्थिती से ऐसे अनुभव भ्रम होते हैं जो साधकों को सच के जैसे ही लगते है। कुछ धूर्त साधु बाबा सम्मोहन, मेस्मेरिजम, चमत्कार के कुछ ट्रिक्स सीखकर लोगों को सम्मोहित करके, गुमराह करके ट्रिक्स से चमत्कार दिखाकर खूद ने दैविशक्ति, अलौकिक शक्ति प्राप्त किए ऐसा भ्रम डर फैलाते है। प्राचीन काल मे महायानि संप्रदाय के भिक्षु ऐसा ही करते थे। (बुध्दचर्या, राहुल सांकृत्यायन). वे अंध भक्तों को भ्रम में, गुमराह में डालकर अपना धंधा चलाते हैं। विविध देशों मे ऐसे योग ध्यान मेडिटेसन के सेंटर खुले हुए है, कुछ धूर्त तो ठगी के व्यवसाय करते हैं। यानि संक्षेप मे गंभीर ध्यान, डीप मेडिटेसन, डीप विपस्सना यह कांसीअस माईंड, विचार चिंतन प्रक्रिया पूर्णता बंद कर गुंगी ज्तंदबम, सम्मोहन Halucination अवस्था मे उत्पन्न भ्रम अनुभव उत्पन्न करने की प्रक्रिया तंत्रविधि होती है।

3. आजकल ध्यान विपस्सना मेडिटेसन, माईंडफूलनेस मेडिटेसन, माईंड क्युअर मेडिटेसन, ध्यान साधना

सेंटर, विपस्सना प्रशिक्षण सेंटर, विपस्सना शोध संस्थान, व्यक्तित्व विकास, पर्सनलिटी डेवलापमेंट के नाम से कुछ लोगों ने धंधे व्यवसाय व्यापार शुरू किये है। ऐसे विपस्सना मेडिटेसन क्लासेस मे सम्मोहन विधी, सम्मोहन के पास, सम्मोहन सूचनाए दी जाती है, सिखाई जाती है। ऐसे प्रयोगों मे आत्म सम्मोहन की शिक्षा, प्रशिक्षण दिया जाता है। सम्मोहन तज्ञ तथा ध्यान विधी, सम्मोहन मेस्मेरिजम विधि के जानकार लोगों ने धन कमाने के लिए ऐसे सेंटर खोल रखे हैं। हो सकता है कभी कभी किसी छात्र या व्यक्ति को ऐसे प्रशिक्षण से कुछ थोडा लाभ होता हो, किंतु ज्ञान, उच्च ज्ञान प्राप्त करने के लिए पढ़ना, सीखना, गहन अध्ययन तो करना ही पड़ता है। कभी भी विपस्सना मेडिटेसन मे सम्मोहन सुचनाएं देने से अपने आप ज्ञान हासिल नही होता। केवल आलस भगाकर पढने की, अध्ययन की अच्छी इच्छा बढ सकती है। महाराष्ट्र मे प्रो. शाम मानव, प्रो. जागरो और अन्य सम्मोहन तज्ञ या ध्यान मास्टर ऐसे धधे व्यवसाय या क्लासेस चलाते है। मानसिक बिमारियां दूर करने के लिए भी कुछ सम्मोहन तज्ञ या ध्यान मास्टर इसका उपयोग करते है। मेडिटेशन मे नियमित सम्मोहन पास, मेडिटेसन पास, सूचनाएं देकर सम्मोहन विधि से मन के गलत शंका, भ्रम, काल्पनिक संभ्रांत विचार कल्पना दूर करके रोगी को ठीक करने का प्रयास किया जाता है। ऐसे विधियों से कुछ दुष्ट प्रशिक्षक हानिकारक प्रयोग भी कर सकते है। सम्मोहनतज्ञ प्रो.श्याम मानव बताते हैं कि किसी व्यक्ति को सम्मोहित करके उसे गलत सूचनाएं देकर ऐसे सम्मोहित व्यक्ति द्वारा किसी दूसरे व्यक्ति को हानि पंहुचाई जा सकती है, सम्मोहित व्यक्तिद्वारा किसी दूसरे व्यक्ति का खून तक किया जा सकता है। यानि सम्मोहित व्यक्ति उसे दी गई सूचना के अनुसार किसी का खून भी कर सकता है। यानि विपस्सना मेडिटेसन प्रशिक्षण सेंटर के अंतर्गत प्रशिक्षक ऐसे गैर कृत्य भी करा सकते है। इसलिए अंधश्रध्दा निर्मूलन समिति ऐसे ध्यान विपस्सना मेडिटेसन का, ऐसे सेंटरों का, ऐसे प्रशिक्षण का विरोध करती है और ऐसे धंधे व्यवसाय प्रशिक्षकों से सावधान रहने की सलाह देते हैं। इसलिए मस्तिष्क की रचना व कार्य आधुनिक विज्ञान (न्यूरो साइंस) से समझ लेना चाहिए। वरना अभिधम्म पिटक के विविध कल्पना विलास से मस्तिष्क के कार्यो मन बुद्धि का वास्तविक ज्ञान कभी नही होगा।

4. सिद्धार्थ गौतम ने गृहत्याग के बाद जब रोहिणी नदी के पानी के बटवारे का विवाद- युद्ध की स्थिति को शांति से सुलझाने का पता चला तब उन्होंने सोंचा, The conflict between nations is occasional- But the conflict between classes is constant and perpetual- It is this which is the root of all sorrow and suffering in the world- I left home on account of war- War has ended but I have to find a solution for this problem of social conflict- (B&HD 1-2-6)

सिद्धार्थ गौतम ने इस सामाजिक वर्ग संघर्ष से उत्पन्न दुख समस्या के निवारण के लिए तत्कालीन शिक्षा साधनों उपायों का स्वयं परीक्षण करने का कठिन प्रयास किया। उन्होने भृगु, आलार कालाम, उदकरामपुत्र आदि सभी के विविध ध्यान मेडिटेसन के विविध प्रकार के ध्यानतंत्र की प्रॅक्टिकल शिक्षा ली, चार पांच वर्ष तक भी उन्हे कोई रास्ता नही मिला तो अंत मे कड़ी तपस्या भी की। किंतु इससे भी उन्हे कोई उपाय ज्ञान नही मिला। सभी मार्ग फेल हो गये, कोई उत्तर उपाय नहीं मिला। फिर भी वे हिम्मत नही हारे। और निश्चय से फिर से उरूवेला गया में जाकर निरंजना नदी के किनारे बरगद, पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर अपनी तर्कबुद्धि से चिंतन मनन विचार करने लगे। सभी लेखकों ने इसे मेडिटेसन ध्यान प्रक्रिया का नाम दिया है। चार सप्ताह तक गंभीर चिंतन मनन विचार करने के बाद अंत मे वे दुख समस्या के कारण और निवारण के उपाय के अंतिम निर्णय पर पंहुचे कि, दुनिया मे दुख है, पांचों उपादान स्कंद दुखरुप है, इससे इन्कार नही कर सकते, दुख के उत्पन्न होने के ऐसे कारण हैं- लोभ दोष मोह तृष्णा। इसे दूर करने का ऐसा ऐसा मार्ग उपाय है- अष्टांगिक मार्ग, पंचशील, पारमिताए। ऐसे उत्तर उपाय की खोज पर दृढ़ विश्वास से अंतिम निर्णय करना यही अंतिम खोज यानि संबोधिज्ञान, बुध्दत्वज्ञान है। बाकी सभी लेखकों ने अपनी कलात्मक शैली मे इसका वर्णन किया है। डिप मेडिटेसन की अवस्था, ट्रांस की अवस्था का यह संबोधिज्ञान नही है। तर्कबुद्धि से खोजा गया, तर्क बुद्धि से तैयार किया गया यह बुध्दत्व ज्ञान है।

बाबासाहाब आंबेडकर ने इसे बड़ी आसान तरीके से बताया है।

Having refreshed himself food Gautam sat thinking over his past eŪperiences- He realised that all paths had failed- He thought of siting under Banyan tree in meditation in the hope of a new light- In the first stage he called forth reason and envestigation- Gautam concentrated himself on the problem of finding an answer of the question which had troubled him- Lastly] he realised that there was suffering in the world and how to remove this suffering and make mankind happy- He found out the causes of suffering and unhappiness and their remedies how to remove them- These right answer is called "Samma Bodhi" (B&HD 1-4-2]

यह बुद्धत्व ज्ञान उपर्युक्त तीन भागों में समझाई गई प्रक्रिया ध्यान विपस्सना मेडिटेसन से प्राप्त ज्ञान नही है। यह तर्क पूर्ण विचार प्रक्रिया से प्राप्त बुध्दत्वज्ञान है। इसे और भी आसान तरीके से ऐसे समझे--मान लो, आपके आफिस में, विहार समिति मे या कही भी कोई जटिल समस्या है, जटिल प्रश्न है, उसका निवारण करना है, उसका उत्तर खोजना है। आप कुछ लोग एक जगह इकठ्ठा हुए, इसे मीटिंग कहो या सामुहिक सभा कहो या जो भी कहो, आप सभी उस समस्या प्रश्न का उत्तर खोजने लगे। (इसे उत्तर खोजने के लिए सामुहिक ध्यान विपस्सना सभा मान लिजिए). सभी ने अपने दिमाग से चिंतन मनन विचार कर अपने सूझाव उपाय उत्तर दिये। इसे क्या कहेंगे? क्या इन्होने अपने सुझाव उपाय उत्तर विपस्सना से प्राप्त करके दिये या मेडिटेसन करके दिये या गंभीर विचार करके दिये? सोंचो। समझो। अध्यक्ष महोदय जी ने सबके सुझाव उपाय उत्तर सुने, लेकिन इसमे भी उन्हे कोई सही उत्तर उपाय नही मिला। फिर भी उन्हे अब अंतिम सही उत्तर खोजकर देना है। अध्यक्ष ने अलग से एकांत मे जाकर (एक घंटे तक, एक दिन या एक माह या कुछ माह वर्ष तक) उस समस्या प्रश्न पर, विविध सुझावों पर खूब सोचा, गंभीर विचार चिंतन किया और अंत मे सही निर्णय पर पहुंचकर समस्या का प्रश्न का सही उत्तर उपाय खोजा और अपना अंतिम सही निर्णय उत्तर दिया। इसे आप क्या कहेंगे? क्या अध्यक्ष ने ध्यान विपस्सना मेडिटेसन करके सही अंतिम उत्तर खोजा? या अपने मन में ष्टिपटल पर उससे संबंधित सारी बाते लाकर अपनी तर्क बुद्धि से गंभीर विचार चिंतन करके अंतिमता सही उत्तर खोजा? या उनके दिमाग मे बगैर सोंचे, बगैर स्मरण चिंतन मनन विचार किये ही अचानक उत्तर उपाय टपक पड़ा? क्या इसे मेडिटेसन से प्राप्त ज्ञान कहेंगे? इस प्रक्रिया प्रोसेस को क्या नाम देंगे? ठीक इसी प्रकार से सिद्धार्थ गौतम को बुद्धत्वज्ञान प्राप्त हुआ था। लेकिन ऐतिहासिक दृष्टि से यह प्रथम बार खोजा गया धम्मज्ञान था।

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने Meditation ' contemplation'concentration, thinking यह चारों शब्द Samma Samadhi के लिए यानि तर्कपूर्ण विचार प्रक्रिया के लिए प्रयुक्त किये है। किसी तंत्रविधि या श्वासप्रवास आनापानसती जैसे आलंबन वाली विपस्सना ध्यान समाधि को नही माना है। तर्कपूर्ण कांसीअस माईंड को मंद बंद धीमा करने वाली किसी भी तंत्र प्रक्रिया को बाबासाहेब नही मानते थे। बुध्द का हेतूवाद का सिध्दांत Law of kamma or law of causation यह रेशनॅलिझम की शिक्षा देता है। जांच पड़ताल की शिक्षा देता है। सुपरनेचरॅलिज़्म तो अधम्म है। बुद्ध ने ऐसी जतंदबम मेडिटेसन पराभौतिक अवस्था की शिक्षा नही दी जब की वे सम्मोहन विधियां भी जानते थे। शील सदाचार नैतिकता पंचशील अष्टांगिक मार्ग पारमिताए- विविध सद्‌गुणों का सभी व्यक्तिने, सभी साधकों ने ज्ञान रखना चाहिए और अपने जीवन मे पालन आचरण करना चाहिए। यही धम्म का अनिवार्य भाग है, इसे जाणकर आचरण करना ही निब्बाण जीवन है, इसे अलग से बताने की जरूरत नही है।

सिद्धार्थ गौतम के गृहत्याग के बाद से बुध्दत्व प्राप्ति के दिन तक सिद्धार्थ ने श्रोतापन्न सकदागामि अनागामि अर्हत इन अवस्थाओं को कब कब और कैसे कैसे प्राप्त किया इसका तो कोई

उल्लेख ही नही मिलता। फिर ऐसी काल्पनिक अवस्थाए क्यों निर्माण की गई जिनका कोई मापदंड ही नही है।

गोयनकाजी जैसे ही कुछ भिक्खु (Good Question] Good Answer- Prof-Ven- S-Dhammika] Australia) ब्रह्मविहार भावना, मेत्ताभावना Loving Kindness Meditation के नाम से अपने मन मे दुसरों का कल्याण होने की मैत्री भावना करने को सिखाते है और मानते है कि उनके ऐसा करने से दुसरों का अपने आप कल्याण हो जाएगा। खुद निष्क्रिय बैठकर अपने मन मे सोंचने या मंगलभावना बोलने से ही दुर रहने वाले लोगों का कल्याण कैसे होगा? यह मैत्रीध्यान भावना पूर्णता हिंदुओं के जैसी ईश्वर से प्रार्थना याचना करने के समान ही है जो वास्तविक कर्तव्य व सामाजिक जवाबदारी से दूर भागने का षड़यंत्री मार्ग है।

निब्बाण के प्रकार, अर्हत के प्रकार, बुद्ध के प्रकारों की अंडसंड बातें, पराभौतिक पारलौकिक काल्पनिक बातें बौद्ध त्रिपिटक साहित्य में मिलावट की गई है। सच क्या है सब भ्रमपूर्ण है। त्रिपिटक के शब्द प्रमाण से सब अपना अपना ढोल पीटते हैं। आंखों के सामने दिख रही जन समस्याओं से आँखें बंद करके, विपस्सना ध्यानों में आँखे बंद करके समस्याओं के उपायों की उपेक्षा करनेवाले क्या समाज सुधार कर पायेंगे? क्या जनसमस्यायें निवारण कर पायेंगे? सबसे बड़ा दुख तो भेदभाव, शोषण और अन्याय है। इसे ही तो दूर करना है। इसे दूर करना भी धम्म कार्य होना चाहिए।

बोधिपक्षीय धर्म आखिर क्या है? शील सदाचार नैतिकता, विविध सद्‌गुणों, अष्टांगमार्ग का पालन करते हुए गंभीर ध्यान विपस्सना समाधि से भ्रमज्ञान प्राप्त करना होता है जो वास्तव में Trance halucination से प्राप्त भ्रमज्ञान के साथ सम्मोहन विधि का ज्ञान होता है। बाकी सारा ज्ञान तो साहित्य के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान होता है। इस 37 बोधिपक्षिय धर्म मे आधे से जादा भाग तो बुद्धत्व प्राप्ति के बाद मे और धम्म चक्र प्रवर्तन के कई वर्षो बाद निर्माण करके दिया गया धर्म ज्ञान है, हो सकता है बाद की संगितियों मे संग्रहित कर मिला दिया गया हो। फिर भी इस 37 बोधिपक्षीय धर्म मे तो दस पारमिताएं और पंचशील तो छोड़ दिया गया है जैसे इनकी जरूरत ही नही लगती उन्हें। जिन्हे 37 बोधिपक्षिय धर्म पर विश्वास या भ्रम है कि इससे निब्बाण अर्हत्व बुद्धत्व प्राप्त होता है उन्होने न्यूरोलाजी, न्यूरोसायंस मे एम. डी. या एम. एस. करके सही तरीके से समझ लेना चाहिए। लेकिन ऐसे धार्मिक अंधविश्वासों मे, पराभौतिकता, सुपर नेचरॅलिजम की प्राप्ति मे अपना जीवने बर्बाद नही करना चाहिए।

वैज्ञानिक डॉ. ए. टी. कोवूर कहते हैं, कोई भी वैज्ञानिक अपनी प्रयोगशाला लायब्रेरी मे रिसर्च के लिए कोई भी धर्मग्रंथ नही रखते। क्योंकि वैज्ञानिक रिसर्च के लिए कोई भी धर्मग्रंथ किसी काम के नहीं है। फिर त्रिपिटक मे कौनसा विज्ञान है जो बुद्ध को महान वैज्ञानिक कहा जाता है जो रिसर्च के काम आयें। जरा सोंचो, बगैर अध्ययन शिक्षा के डिप मेडिटेसन विपस्सना मे न्यूरोलाजी या कानून कायदों , विविध समस्या निवारण के उपायों का ज्ञान कैसे प्राप्त होगा? इसलिए धर्मग्रंथों की व्यर्थ की अवास्तविक बातों मे विश्वास नही करना चाहिए।

बौद्ध धम्म की शिक्षा, अध्ययन के साथ उसके वास्तविक मानवी मूल्यों को अपने जीवन मे उतारकर बाबासाहाब आंबेडकर की भाँति ड- A-Ph-D-, M-Sc-, D-Sc-, LLD, D-Lit-, LLB, Bar-at Law rFkk IAS, IPS, IRS आदि ऐसी अद्यतन उच्च से उच्च शिक्षा ज्ञान कम आयु में ही प्राप्त कर समाज उत्थान, जनसमस्यायें निवारण, समाज परिवर्तन के लिए कष्टसाध्य कार्य करने की आंबेडकरी प्रेरणा ही आधुनिक युग का सर्वोत्तम आदर्श है जिस पर सही अमल करने से ही वर्तमान मे बहुजन वंचित मागास समाज की विविध समस्यायें सुलझा सकते है।

समझने के लिए कुछ और भी विवेचन--

Buddha did not automatically enlightened in meditation- He did not eŪperienced SammaBodhigyan in deep vipassana] in deep meditation] in trance state- But he thought means he focussed his mind] his thoughts] his attention with all his acquired knowledge on the various problems of individual, social and

evolution of nature and finaly concluded] confirmed] firmly decided that there is is Dukkha in everybody's life] nobody can escap from sufferings and he found out its reasons and remedies and prepared the principles and doctrines of his Dhamma- This Budhatvagyan got through deep thinking and remembering process by using conscious mind] but not in trance through deep vipassana meditation- This is called Samma Bodhi gyan.

अब यह संबोधिज्ञान प्राप्त करने के बाद आगे प्राप्त करने के लिए, कुछ सीखने के लिए संसार मे कुछ ज्ञान शेष बचा ही नही है, ऐसा नही है। सारा त्रिपिटक का प्रचलित सारा ज्ञान उन्हें एक साथ प्राप्त हुआ था ऐसा नही है। ज्ञान असिमित है। अपने तर्क बुद्धि से बुध्दत्व प्राप्ति के बाद भी वे जीवन भर अपने ज्ञान मे वृद्धि करते रहे, उपदेश, शिक्षा देते रहे। निब्बाण अर्हत्व संबोधिज्ञान बुद्धत्वज्ञान यह ऐसी परफेक्ट स्पष्ट संकल्पनाये नहीं है कि जिन्हें किसी मापदंड से मापा जा सके, समझा जा सके तथा इन्हें प्राप्त करने के बाद आगे कोई ज्ञान ही शेष बचा ना हो। इसमे अवास्तविक अद्‌भूत शक्तिया बल प्राप्ति की बाते त्रिपिटक मे मिलावट कर इसे जादा असंभव व असंगत बना दिया गया।

Sambodhigyan or Budhatva or awakened mind means acquired perfect intellectual knowledge about causes and remedies of sufferings and sorrows along with ethical perfection of mind-'बुध्द यानि परिपूर्ण बुद्धिवादी, नैतिकतावादी, मानवतावादी, भेदभाव विरुद्ध समानतावादी और दूख शोषण के मूल कारण व उपाय खोजकर स्वयं दुखमुक्त होकर दुसरों के दुख शोषण दूर करने के लिए सतत संघर्षशील व्यक्ति।' Mind never awaken or enlighten automatically in deep vipassana] deep meditation- Knowledge is always acquired] discovered] invented thoughts but it is not heriditary or enlightened] i-e- automatically never generate/ experience in mind without thinking and remembering-

बुद्ध के द्वारा ब्राह्मणी समाज व्यवस्या यानि वर्णव्यवस्था को पूर्णता बदलने की, समाप्त करने की सामाजिक क्रांति को रोकने विफल करने के लिए ब्राह्मणवादी बौद्ध भिक्खुओं ने (चाहे वे महायानी हो या हीनयानी) निब्बाण संबोधि बुध्दत्व अर्हत्व प्राप्ति, पुनर्जन्म, प्रतित्यसमुत्पाद आदि के मूल अर्थ बदलकर ध्यान विपस्सना समाधि के द्वारा निब्बाण संबोधि बुध्दत्व अर्हत्व प्राप्त कर पूर्वजन्म संचित कम्म पूनर्जन्म के भवचक्र से मूक्त होने के मनगढंत, भ्रमपूर्ण , अवैज्ञानिक बाते मिलाकर बौद्ध धर्म को संघर्षहिन, समाजविमुख बना दिया और वर्ग संघर्ष के सामाजिक परिवर्तन के क्रांतिकारी संघर्ष से दूर कर धर्म के प्रचारकों को, भिक्खुओं को निष्क्रिय बना दिया। बुद्ध को अद्‌भूत पारलौकिक शक्तिया प्राप्त सर्वज्ञ बना दिया जो पूर्णता गलत है। प्राचीन और आधुनिक बौद्ध (भिक्खु या गृहस्थ) लेखकों ने गौतम बुद्ध (बुध्दत्व) को उंचे उंचे ज्ञान के आदर्शो मे दिव्यशक्ति संपन्न इस प्रकार परिभाषित कर दिया है कि आम गृहस्थ या प्रचारक इन उंचे आदर्शो को सपने मे भी हासिल नही कर सकता और भक्ति श्रद्धा भावना तथा तर्कशील ज्ञान के अभाव मे अपने को बहुत असहाय, कमजोर, असमर्थ, अयोग्य महसुस करता है। जबकी वह अपने गृहस्थ जीवन मे भी अपनी उच्चत्तर शिक्षा, उच्चत्तर ज्ञान और अपने नैतिक पवित्र आचरण, गुणसंपन्न बर्ताव से और कठीण संघर्ष से महान समाज सेवा तथा सामाजिक परिवर्तन, समाज सुधार करके ऊंचे से ऊंचे आदर्शो पर विराजमान हो सकता है, और बद्धुत्व प्राप्ति करना तथा बुद्ध बनना यानि महान पुरूष बनना इससे अधिक और कुछ नही है। हाँ, गौतम बुध्द बौद्ध धर्म के संस्थापक थे, है और हमेशा रहेंगे और सभी को अनुकरणीय है, सभी के आदर्श है, प्रेरणास्त्रोत है, वंदनीय है, श्रेष्ठ है, मार्गदाता है। लेकिन बुद्ध के नाम से संकलित संपूर्ण त्रिपिटक पूर्णता सही बुद्धवचन नहीं है, पूर्णतः ग्राह्य, पूर्णता बुद्धिसंगत नही है, इसका ध्यान रहे।

सभी ने यह बात ध्यान मे रखना चाहिए कि, बुद्ध काल में लिखने की कोई भाषालिपी अस्तित्व मे नही थी। किसी भी भाषा लिपी मे लिखने की कला विकसित नही हुई थी। वैज्ञानिक कहे जाने वाले बुध्द ने भी लिखने का, लिपीबध्द करने का कोई अक्षर ज्ञान प्राप्त नहीं किया था, वे

ना ही लिखने की लिपी खोज सके। अपने ही ज्ञान को लिपीबध्द करने का कोई ज्ञान बुद्ध नहीं खोज सके थे। देखने सुनने याद करने, स्मरण करने, चिंतन मनन करने, बोलने, श्रवण करने, भाणक की प्रक्रिया की ही शिक्षा व्यवस्था थी। सुनसुनकर श्रवण कर याद करना, और याद किया हुआ, स्मरण चिंतन किया हुआ ही बताना यानि श्रवण भाणक प्रक्रिया की शिक्षा प्रणाली बुद्ध काल मे थी। बुध्द के द्वारा धम्म उपदेश और भिक्खुओं को धम्म प्रशिक्षण की ऐसी ही व्यवस्था थी। भिक्खुओं को दी गई धम्म शिक्षा, उपदेश,तत्व सिद्धांत बातें वे श्रवणकर याद कर लेते थे और याद की गई धम्म शिक्षा ही और अपने से भी कुछ सोंच कर मिलावट कर धम्म शिक्षा दुसरों को बताई जाती थी। शिक्षा, ज्ञान लिखित रूप में या सहज उपलब्ध नही रहने से भिक्खुओं को स्मरण शक्ति, याददास्त की शक्ति का ज्यादा उपयोग करना पड़ता था। बुद्ध तथा अन्य भिक्खु भी सुबह सुबह स्नानादि से तैयार होकर पहले सुने हुए, याद किये हुए ज्ञान को स्मरण करने तथा कुछ नया सोचने , सीखने, या उपदेश मार्गदर्शन देने ध्यानमूद्रा में, मेडिटेसन मे बैठ जाते थे। यह उनकी दैनंदिन नियमित प्रक्रिया थी। सुबह, दोपहर,श्याम,रात्री जिन्हें जैसी सुविधा हो अपना अपना अभ्यास, अध्ययन अध्यापन करते रहते थे। ध्यान समाधि मेडिटेसन श्रवण स्मरण यही प्रक्रिया उस काल मे अध्ययन अध्यापन शिक्षा अभ्यास के लिए प्रचलित थी। कोई दूसरा तरीका ही नही था। शिक्षा प्राप्ति का श्रवण स्मरण भाणक चार स्मृति प्रस्थानो का उपदेश सुनने के बाद उसे याद स्मरण चिंतन करने की यही व्यवस्था थी। इसे ही सतिपठ्ठान, स्मृतिप्रस्थान, विपस्सना ध्यान सम्मासमाधि मेडिटेसन कहा जाता था। अन्य उपदेश, शिक्षा ग्रहण की यही प्रक्रिया थी। लेकिन यह प्राचीन काल की योग समाधि ध्यान आलंबन तंत्र कसीन तंत्रों वाली व्यवस्था नही थी। बुद्ध ने सम्मोहन विधियां नही सिखाई। उन्होने इसका कड़ा विरोध किया था। इसलिए बुद्ध ने इसे सम्मा समाधि का नाम दिया था और इस सम्मा समाधि की शिक्षा प्रणाली को अष्टांगिक मार्ग में सामिल किया था। यह तर्क पूर्ण सोंच विचार स्मरण चिंतन की शिक्षा प्रक्रिया थी। धूर्तो ने इसे आलंबन तंत्रों वाली विपस्सना ध्यान प्रक्रिया बना दिया । इस बात को अवश्य ध्यान मे रखे। बुद्ध की मुर्तियां भी इसी अभ्यास प्रक्रिया, चिंतनशील भावना से बनाई जाती थी जो चिंतनशील, अभ्यासरत बुद्ध की प्रेरणा स्त्रोत होती थी। ध्यानी बुद्ध नही तो शिक्षा ज्ञान देनेवाला बुध्द। लिखने की कला लिपी सम्राट अशोक के काल मे खोजकर धीरे धीरे विकसित हो रही थी। भिक्खुओं ने ही लिखने की लिपी कला निर्माण की थी। इसलिए इसे धम्म लिपी कहा जाता है जिससे सम्राट अशोक ने अपने शिलालेखों मे कुछ संदेश, उपदेश लिखे है, लिखवाये हैं।

तीनों चारों संगितियों मे बुद्धवचनों, धम्मउपदेशों को श्रवण भाणक प्रक्रिया से संग्रहित किया गया था जिसमे मूल बुद्ध कथनो उपदेशों मे काफी मिलावट और परिवर्तन हो चुका था। इसका पूरा फायदा ब्राह्मणी वर्णव्यवस्था के पोषक कुछ भिक्खुओं ने भी उठाया और त्रिपिटक साहित्य मे मिलावट और ब्राह्मणवादी बातों को संग्रहित व स्थापित कर दिया था। इसलिए त्रिपिटक व प्राचीन बौद्ध साहित्य की संभ्रांत अर्थहिन विसंगत बातों कों, सूत्तों को बुध्दवचन नही मानना चाहिए। तर्कसंगत जांचपड़ताल कर सही बुद्धिसंगत जनहितकारी लगे उन्ही उपदेशों वचनो सूत्तों को मानना चाहिए व बाकि सूत्तों बातों कों संभ्रात गलत हानिकारक समझकर छोड़ देना चाहिए। उनका प्रचार नही करना चाहिए। गलत प्रचार करने वालों का भांड़ाफोड़ विरोध करना चाहिए।

जो भी समाज सेवक, समाज हितैषी, सामाजिक कार्यकर्ता, धम्मसेवक, धम्मप्रचारक हैं, या जो बनना चाहते हैं वे इस भ्रम शंका मे कभी ना रहें की ध्यान विपस्सना मेडिटेसन करने से या त्रिपिटक का अध्ययन अभ्यास ज्ञानप्राप्त कर विपस्सना मेडिटेसन करने से उन्हे या किसी को भी अर्हत्व बुद्धत्व संबंधि ज्ञान प्राप्त होगा तथा समाज सुधार, समाज परिवर्तन, सामाजिक समस्याये निवारण का विस्तृत सही ज्ञान अपने आप उन्हे प्राप्त हो जाएगा। ऐसे काल्पनिक भ्रम तथा गलत संकल्पनाओं को प्राप्त करने के चक्कर में उनका सारा जीवन बर्बाद हो जाएगा। वर्तमान की विविध सामाजिक समस्यायें, जनसमस्यायें निवारण के लिए वर्तमान मे ही विभिन

युनिवर्स्टियों मे उपलब्ध उच्च से उच्च शिक्षा कम आयु मे ही लेनी चाहिए और वर्तमान शासकीय, गैर शासकीय व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से चलाकर जनसमस्यायें, सामाजिक समस्याओं का निवारण करना चाहिए और शासकीय हो या गैरशास्कीय गलत व्यवस्थाओं, गलत मूल्यों को समाप्त करने के लिए, उन्हे बदलने के लिए कठिन संघर्ष करना चाहिए। अर्हत या बुध्द कोई बहुत बड़ी दिव्य शक्ति प्राप्त व्यक्ति नही होते, वे भी उपलब्ध ज्ञान प्राप्त कर और अपनी तर्कबुध्दि का उपयोग कर महापुरूष की भाँति अच्छे समाज सेवक ही होते हैं। कार्यकर्ताओं ने विविध धर्मो के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन कर उसमें जो जनकल्याण की बातें हों, उन्हें स्वीकार कर समस्यायें निवारण मे अवश्य उपयोग करना चाहिए। लेकिन गलत बातें छोड़ देनी चाहिए। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का कम आयु मे ही उच्च से उच्च अच्छी शिक्षा प्राप्त करने का ध्येय और सामाजिक समस्याएं निवारण के लिए कठिण संघर्ष करने का उद्देश्य हमेशा ध्यान मे रखकर ही अपने प्रयास करते हुए अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहिए। वर्तमान वर्गसंघर्ष, सत्तासंघर्ष, सामाजिक आर्थिक विषमताओं, समस्याओं को दूर करने के लिए बाबासाहाब आंबेडकर ने बताई उच्च शिक्षा और सही आंदोलन व वैधानिक संघर्ष प्रणाली को पूर्णता अमल मे लाकर ही आगे बढना चाहिए और सत्ता शासन प्रशासन, ब्यूरोक्रेसी, जुडिसियरी जैसे शक्ति केंद्रो को नैतिक, करूणाशील, मानवतावादी लोगों के ही हाथ मे रखने का हरसंभव भरसक प्रयास करना चाहिए। उपरोक्त बातों को नही समजने वाला, नही जानने वाला कोई भी व्यक्ति ना तो निब्बाण प्राप्त कर सकता है और ना ही अर्हत्व , ना ही बुद्धत्व को सही समझ सकता है।

०००■

पुनर्जागरण काल के वैज्ञानिक योद्धाः: गैलिलियो

-वेद प्रिय
हरियाणा विज्ञान मंच

कॉपरनिकस ने एक वैकल्पिक विचार (सूर्य केंद्रित प्रणाली) देकर मशाल जलाई। ब्रूनो ने अपना साहसिक बलिदान देकर इस मशाल को और ऊंचा उठाया। उन्हें इस विचार का समर्थन करने पर जिंदा जला दिया गया था। इस दौर में और भी अनेक योद्धाओं ने अपना योगदान दिया। लेकिन गैलीलियो (1564 - 1642) ने इस विचार को निर्णायक अंजाम दिया। जिस समय ब्रूनो पर मुकदमा चल रहा था, गैलीलियो इटली के पीसा विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के पद पर पढ़ा रहे थे। स्वाभाविक है उन्हें भी अरस्तु का दर्शन एवं यांत्रिकी ही पढ़ाना था। अरस्तु की यांत्रिकी में बल को गति पैदा करने का कारक बताया गया था। इसके अनुसार यदि दो वस्तुएं अलग-अलग भार वाली स्वतंत्र अवस्था मैं नीचे गिरे तो भारी वस्तु को तेज गति से गिरना चाहिए। अरस्तु ने यह यांत्रिकी अपनी सामान्य समझ से दी थी। गैलिलियो को पता नहीं क्या सूझा। उसने अपने विद्यार्थियों से कहा- चलो अरस्तु के इस नियम पर प्रयोग करके देखते हैं। प्रयोग के लिए पीसा की मीनार चुनी गई। ये अपने विद्यार्थियों को इस के शिखर पर ले गए। उन्होंने दो वस्तुओं (एक हल्की एक भारी) को एक साथ नीचे गिराया। उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, दोनों वस्तुएं एक साथ भूमि पर नीचे टकराई। उन्होंने अपने इस प्रयोग पर तसल्ली नहीं हुई। उन्होंने इसे कई बार दोहराया। परिणाम यही निकला। अब तो स्थिति विचित्र हो गई थी ।

प्रयोग बहुत साधारण था, लेकिन परिणाम अप्रत्याशित। गैलीलियो ने इसकी चर्चा अपने साथी प्राध्यापकों से भी की। सभी ने कहा, अरस्तु को दोबारा पढ़ो। लेकिन गैलीलियो निरूत्साहित नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि व्यक्तिगत सोच से निकाला गया परिणाम गलत हो सकता है। वस्तुनिष्ठ प्रयोगों

से निकाला निष्कर्ष अपेक्षाकृत ज्यादा सही होता है। गैलीलियो का यह प्रयोग मात्र एक प्रयोग नहीं था, अपितु एक प्रचलित मान्यता का अंत भी था। यही से यांत्रिकी में प्रयोगों की नींव शुरू हो गई। गैलीलियो ने इसी से संबंधित अनेक प्रयोग किए और निष्कर्ष दिया कि बल गति को पैदा नहीं करता अपितु गति परिवर्तन करता है। आगे चलकर न्यूटन ने इसी को अपना गति का नियम बनाया।

गैलीलियो अपने सभी प्रयोगों की चर्चा अपने साथी प्रोफेसरों से करता रहता था। वे सभी इससे नाखुश थे। वे गैलीलियो पर इल्जाम लगाते कि वह नास्तिक हो गया है। अरस्तु (ज्ञान का पितामह) को नहीं मानता है। पीसा में रहते उसे अपना काम जारी रखना कठिन हो गया। उन्हें यह जगह छोड़नी पड़ी। उन्हें पदुआ विश्वविद्यालय में नौकरी मिल गई। यहीं रहते हुए उन्होंने अपना सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य किया। यहां उन्होंने दूरबीन बनाई। यह बनाई तो इसलिए थी की समुद्रों में दूर से आते हुए जहाजों की पहचान हो सके लेकिन यहां कुछ और ही हो गया। गैलीलियो ने इसे आकाश की ओर मोड़ दिया। यहां उन्हें चंद्रतल के खड्डे व पहाड़, सूर्य के धब्बे तथा बृहस्पति (ग्रह) के उपग्रह दिखाई दिए। खगोल की दुनिया ने अपने रहस्य गैलीलियो के सामने उजागर कर दिए। उन्होंने शुक्र की कलाएं (चंद्रमा की तरह घटना- बढ़ना) भी देखी। इन सब अवलोकनों से उसका विश्वास मजबूत हुआ कि कॉपरनिकस ठीक ही कहता था।

यहां भी उन्होंने यह सब अपने साथी वैज्ञानिकों से सांझा किया। पहले तो उन्होंने माना ही नहीं। गैलीलियो ने उन्हें दूरदर्शी से स्वयं अवलोकन करने को कहा। उन्हें बड़ा अजीब उत्तर मिला-'या तो तेरी इस मशीन (दूरदर्शी) में कुछ जादूगरी है या फिर तुम्हारी आंखों में गड़बड़। जाओ, और अरस्तु को फिर पढ़ो। ऐसे में गैलीलियो (एक वैज्ञानिक) क्या करे। उन्होंने यह सब प्रकाशित करवा दिया। यद्यपि वह सचेत था और ब्रूनो का हश्र देख चुका था । बात पोप तक पहुंची। सन् 1615 में पोप ने गैलीलियों को बुलाया। पोप ने कहा कि बसों में खोजों को समझना चाहता है। गैलीलियो बहुत खुश हुआ। गैलीलियो ने समझा कि पोप ने स्वयं रुचि ली है । यह एक अच्छा अवसर है कि कॉपरनिकस के सिद्धांत को सही सिद्ध (प्रयोगों द्वारा) किया जा सकता है। पोप ने सब कुछ बड़े ध्यान से सुना व देखा। गैलीलियो बहुत बड़ी गलती पर था। उसे चेतावनी मिली-खबरदार, यदि आगे विमर्श को जारी रखा। सन 1616 में उसकी सब खोजों, लेखों पर प्रतिबंध लगा दिया। गैलीलियो को यह विश्वविद्यालय भी छोड़ना पड़ा।

कुछ समय बाद फ्लोरेंस चले गए। उन्होंने चुपचाप रह कर अपना जारी रखा। यहां रहते हुए उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Dialogue concerning the two chief systems of the world] the Ptolemaic and the Copernican' पूरी की । 1632 में यह प्रकाशित हो गई। पुस्तक में तीन पात्रों के बीच संवाद है। एक पात्र अरस्तू-टालेमी को, दूसरा कापरनिकस के विचार को तथा तीसरा इन दोनों को समझना चाहता है। पहले दोनों पात्रों की बहस सुनकर तीसरा पात्र कापरनिक्स के विचार पर सहमति जताता है। इस पुस्तक के निकलते ही चर्च हरकत में आ गया। सन 1633 में उन्हें पकड़ लिया गया और चर्च ने मुकदमा चलाया। उसे फिर ब्रूनो याद आया। वह एक वैज्ञानिक था, उनका बहुत सा काम अभी अधूरा पड़ा था। उसने रणनीतिक फैसला किया। उसने चर्च से माफी मांग ली और शपथ पत्र लिख दिया। चर्च भी आखिर चर्च था। चर्चे ने उसे आजीवन कारावास की सजा दी। उनके स्वास्थ्य को देखते हुए बाद में घर में ही नजरबंद रखा। यहां रहते हुए उन्होंने अपना बाकी काम पूरा किया। जिसकी नींव पर आगे चलकर न्यूटन खड़ा हुआ। सन 1637 में वह अंधा हो गया । सन 1642 में उनका निधन हो गया ।

बीसवीं सदी के अंतिम दशक में (लगभग 350 वर्ष बाद) गैलीलियो के मुकदमे की फाइल को दोबारा खोला गया। चर्च ने अपनी गलती स्वीकार करते हुए गैलीलियो की कब्र से माफी मांगी और उसे रिहा घोषित किया गया।

■

दूसरे महंत की हत्या को दी थी सुपारी, रुपयों के विवाद में बदमाशों ने रामभज को ही मार डाला।

पांच आरोपी गिरफ्तार, प्राचीन अनुमान मंदिर की गद्दी के लालच का परिणाम थी। शृंगी ऋषि आश्रम के महंत की हत्या।

कैथल। गांव सांघन के शृंगी ऋषि आश्रम के महंत रामभज की हत्या कैथल में करीब 80 करोड़ रुपये की प्रॉपर्टी वाली प्राचीन अनुमान मंदिर की गद्दी हथियाने के लालच का परिणाम थी। स्वयं महंत रामभज ने इस मंदिर के मुख्य पुजारी महंत राघवदास शास्त्री की हत्या के लिए बदमाशों को पांच लाख रुपाये की सुपारी दी थी, लेकिन एडवांस भुगतान को लेकर हुए विवाद में बदमाशों ने महंत रामभज की ही हत्या कर दी। पांच आरोपियों की गिरफ्तारी के बाद एसपी शशांक ने यह खुलासा किया है।

एसपी ने बताया कि 24 जून की रात को महंत रामभज की हत्या कर दी गई थी। इस मामले में पुलिस ने बेल्लरखां के कुलबीर, महंत छविदास और मेहरा नामक व्यक्तियों के खिलाफ हत्या का केस दर्ज किया था। मामले कि जांच करते हुए सीआइए-1 प्रभारी इंस्पेक्टर अनूप सिंह व थाना कलायत प्रबंधक इंस्पेक्टर सोमवीर की टीम ने कुलबीर वासी बेलरखां से गहन पूछताछ की, जिसमें पता चाला कि महंत रामभज दास का पिछले एक साल से पुराना बाजार कैथल स्थित प्राचीन हनुमान मंदि के 98 वर्षीय महंत राघवदास शास्त्री के पास आना-जाना था। बाबा छविदास भी महंत राघव दास के पास आता था, जिसको महंत राघव दास शास्त्री के बाद गद्दी मिलनी थी। ऐसे में साजिश के तहत बाबा रामभज दास ने नरवाना में रह रहे सिरसा के अजय मेहरा के साथ संपर्क कर बुजुर्ग महंत की हत्या कराकर और उसका इल्जाम बाबा छविदास पर लगाने की योजना बनाई। इसके लिए बदमाश अजय मेहरा ने 5 लाख रुपाये मांगे, जिसमें से 50 हजार रुपये एडवांस दे दिए थ। घटना के दिन अजय की महंत रामभज के साथ 50 हजार रुपाये और देने को लेकर तकरार हो गई और अजय ने 5 अन्य साथियों द्वारा सोनीपत से लूटी गई गाड़ी में से डंडे निकाल कर महंत पर हमला कर दिया। इसके बाद आरोपी महंत को स्विफ्ट डिजायर गाड़ी और मोबाइल, कुलबीर का मोबाइल तथा पर्स छीनकर मौके से फरार हो गए।

-अमर उजालाः 7-7-2020

महिलाओं को यौन गुलाम बनाने वाले स्वयंभू गुरु को 120 साल की जेल

न्यूयॉर्क। अमेरिका में एनएक्सआईवीएम नामक संगठन के बैनर तले अरबपतियों, हॉलीवुड अभिनेताओं समेत कई को अनुयायी बनाने वाले स्वयंभू गुरु कीथ रेनियर को न्यूयॉक अदालत ने 120 साल की जेल सुनाई है। इस 60 वर्षीय गुरु को अदालत ने महिलाओं को यौन गुलाम बनाने के लिए रैकेट और संप्रदाय या पंथ चलाने का दोषी माना है। कीथ अब आजीवन जेल में रहेगा। कीथ रेनियर पर कई महिलाओं ने बहला-फुसलाकर उन्हें यौनगुलाम (सैक्स स्लेव) बनाने का आरोप लगाया है। अदालत ने उसे सेल्फ हेल्प ग्रुप सोसायटी चलाने की आड़ में महिलाओं के साथ जबरदस्ती करने का दोषी पाया है। कीथ 5 दिन के सेल्फ हेल्प कोर्स के लिए अनुयायियों से 5000 डॉलर लेकर अधिकांश भक्तों का आर्थिक व यौन शोषण करता था। बुकलिन अदालत में 13 महिलाओं ने बयान दर्ज कराए जबकि 90 से ज्यादा पीड़ितों ने जज निकोलस ग्राफुइस को पत्र लिख कर अपनी आपबीती बताई। एजेंसी।

-अमर उजालाः 29-10-2020

अंधविश्वास के चलते

किशोरी ने मां दुर्गा को चढ़ाया आँख

दरभंगाः हाईटेक युग में भी लोग अंधविश्वास छोड़ने को तैयार नहीं हैं। शनिवार को अंधविश्वास में डूबी एक किशोरी ने मां दुर्गा को अपनी बांयी आंख अर्पित कर दी। गंभीर हालत में इलाज के लिए उसे डीएमसीएच लाया गया। मामला बहेड़ी थाना क्षेत्र के सिरुआ गांव का है। किशोरी की पहचान अरुण सिंह की पुत्री सोना कुमारी उर्फ कोमल के रूप में की गई है। वह करीब 16 साल की बतायी जाती है।

डीएमसीएच में प्राथमिक उपचार के बाद उसे नेत्र विभाग में रेफर कर दिया गया है। वहां उसका इलाज चल रहा है। उसकी आंख बाहर आकर लटकी हुई है। डॉक्टरों का कहना है कि आंख की रोशनी लौटना अब संभव नहीं लगता। सोना की मां ने बताया कि वह पिछले आठ-दस वर्षों से मां दुर्गा की भक्ति में लीन रहती है। सुबह-शाम वह दुर्गा सप्तशाती का पाठ करती हैं आज बेलन्योति के बाद मां दुर्गा का दर्शन करने धमासायर भगवती स्थान गई थी। इसी दौरान मूर्छित होकर वह गिर पड़ी। सूचना मिलने पर परिवार वाले पहुंचे। वहां उन लोगों ने देखा कि सोना की बायीं आंख बाहर लटकी हुई है। उसे डीएमसीएच लाया गया। मां ने बताया कि वह दो बार मैट्रिक में फेंल होने के बाद पढ़ाई छोड़ चुकी है। मंदिर में क्या हुआ, इससे वे अनभिज्ञ हैं। इधर, किशोरी ने बताया कि दो साल से भगवती उसके सपने में आती थी। दो दिन पहले भी वे सपने में आयीं। उन्होंने कहा कि तुम अपनी शरीर की कोई कोमल अंग मुझे दान कर दो। उनकी इच्छा का पालन करते हुए मैंने अपनी एक आंख उन्हें अर्पित कर दी। भगवती ने उससे कहा था कि हम तुम्हारे हैं, तुम हमारी हो। बेंता ओपी की पुलिस ने किशोरी के डीएमसीएच आने की पुष्टि की।

(हिंदुस्तान)

बलि के चक्कर में मां ने ही की थी 8 साल की बच्ची कह हत्या

फरीदाबार। संजय कॉलोनी से लापता 8 वर्षीय बच्ची का शव पलवल के गदपुरी क्षेत्र से बरामद हुआ था। डीएलएफ अपराध शाखा की टीम ने खुलासा किया है कि अंधविश्वासी मां रानी ने ही बलि के चक्कर में मासूम की गला दबा कर हत्या की थी।

रानी पहले बच्ची को ऑटो में बिठाकर पलवल के गदपुरी थाना क्षेत्र स्थित गांव बघौला ले गई। वहां जंगल में बच्ची की हत्या कर शव ठिकाने लगा दिया। अपराध शाखा डीएलएफ की टीम ने रानी को गिरफ्तार कर लिया है।

सीसीटीवी में बच्ची को ले जाती आई नज़र, गला दबा कर हत्या की बात स्वीकार की

रानी ने दावा किया कि काफी समय से उसके सपने में एक प्रेतात्मा आती थी और उसकी बेटी की बलि मांगती थी। वह इससे पूर्व भी एक बार अपनी बेटी खुशी को पानी के टंकी में डुबोकर मारने की कोशिश कर चुकी थी। उस समय वहां उसके दोनों बेटे आ गए थे। पुलिस ने रानी को कोर्ट में पेश किया जहां से उसे न्यायिक हिरासत में नीमका जेल भेज दिया गया है। ब्यूरो।

-अमर उजाला : 14-9-2020

गृह क्लेश खत्म कराने का झांसा देकर तांत्रिक ने ऐंठे साढ़े चार लाख रुपये, परिवार को खत्म करने की धमकी

खरखौदा(सोनीपत)ः क्षेत्र के युवक को झांसे में लेकर एक तांत्रिक ने गृह क्लेश खत्म कराने के नाम पर 448700 रुपये ऐंठ लिए। युवक को जब ठगी का पता लगा तो तांत्रिक से पैसे वापस मांगे।

युवक का आरोप है कि पैसे मांगने पर तांत्रिक ने उसे व उसके परिवार को बर्बाद करने वा खत्म कर देने की धमकी दे डाली। युवक ने मामले की शिकायत एसपी को दी। एसपी के निर्देश पर खरखौदा थाना पुलिस ने धोखाधड़ी से नकदी ऐंठन, अमानत में ख्यानत व मारने की धमकी देने का केस दर्ज कर लिया। -अमर उजाला 4-9-20202

फ्रेडरिक बैंटिंग, चार्ल्स बेस्ट व ज.न. कोलिप ने 1923 में इंसुलिन की खोज की।

और मानवहित के लिए बिना दाम लिये सौंप दिया

इसका पेटेंट भी उनके नाम था। इससे बहुत धन कमाया जा सकता था। पर वो चाहते थे कि हर किसी को इंसुलिन कम से कम दाम पर मिले। इसलिए उन्होने अपना पेटेंट एक डॉलर में टोरंटो यूनिवर्सिटी को दे दिया। बैंटिंग ने कहा :इंसुलिन मेरी नहीं विश्व भर की संपत्ति है।

यह वैज्ञानिक नजरिया है।

पर पूंजीवादी व्यवस्था में उत्पादन निजी मालिकाने में होता है, पूंजी लगती है। अंततः इंसुलिन उत्पादन का नियंत्रण भी एली लिली जैसी कंपनियों के हाथ में चला गया और कीमतें इतनी बढ़ गई हैं कि अमरीका-कनाडा तक में दो तिहाई इंसुलिन जरूरत वाले डायबिटीज रोगी इसकी जरूरत भर खुराक खरीदने की क्षमता नहीं रखते और इस वजह से हर साल बड़ी तादाद में जान गँवाते हैं। यह निजी संपत्ति और मुनाफे की पूंजीवादी व्यवस्था का परिणाम है।

किन्तु बहुतेरे तथाकथित 'तार्किक और प्रगतिशील' व्यक्ति भी विज्ञान और पूंजीवादी व्यवस्था में फर्क नहीं करते और पूंजीवादी व्यवस्था की लूट के विनाशकारी नतीजों के लिए आधुनिक विज्ञान को ही जिम्मेदार बताने लगते हैं।

–मुकेश असीम (प्रेषक :जयपाल)

अनमोल वचन

'जहां ज्ञन का प्रारम्भ होता है वहां धर्म का अन्त होता है।'

–उल्ग बेग (1393–1449 ई) (गणितज्ञ एवं तारा वैज्ञानिक, समरकन्द **का वायसराय)**

लोगों का भविष्य बताने वाला ज्योतिष जिंदा जला

कोलकाता ए. महानगर के केस्टोपुर इलाके में रविवार को एक ज्योतिषी की अपने आवास पर लगी आग की चपेट में आने के कारण मौत हो गई जो कि स्थानीय चैनलों पर प्रायोजित कार्यक्रम आयोजिति करते थे। सुबह करीब साढ़े सात बजे पहले तल पर लगी आग को बुझाने के लिए दमकल की तीन गाड़ियां भेजी गईं, जिन्होंने आग पर काबू पाया। पुलिस ने कहा कि अग्निशमन कर्मी ज्योतिषी जयंत शास्त्री के आवास के बंद दरवाजों को तोड़कर अंदर घुसे और उन्हें अधजली हालत में बाहर निकाला। उन्होंने कहा कि शास्त्री को पास के एक निजी अस्पताल ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

काव्यांश--

–ओमप्रकाश वाल्मीकि

शब्द हो जाएं जब गूंगे
और भाषा भी हो जाए अपाहिज
समझ लो
कहीं किसी मजदूर का लहू बहा है

धूप से नहाकर
जब चांदनी करने लगे अठखेलियां
धुंए के बादलों से
समझ लो
अंधेरों ने उजालों को ठगा है

दर्द के रिश्ते
जब नम होने लगें
और गीत रचने लगें सन्नाटों की हवाएं
समझ लो
आदमी का लहू
कहीं सस्ते में बिका है ।

बच्चों का कोना

वर्षा का जल खारा क्यों नहीं ?

सागर से वाष्पित पानी, धरती पर बारिश के रूप में बरसता है। सागर का पानी तो नमकीन रहता है लेकिन बारिश का पानी नहीं। आइए कारण खोजने की कोशि करें।

जरूरी सामानः

एक कटोरा, कप, पॉलिथीन पन्नी, छोटा सा पत्थीर और नमक

इस तरह से करेंः

कटोरे में कुछ पानी लेकर उसमें नमक घोल दें कओरें में साफ सुथरा कप रखकर कटोरे के मुंह पर एक पोलिथीन बांध दें। पोलिथीन को खींचकर न बांधें। इसे थोड़ा ढीला ही रहने दें। अब, कप के ठीक ऊपर पोलिथीन पर छोटा सा पत्थर रखकर कटोरे को धूप में रख दें।

कुछ समय बाद पोलथीन की भीतरी सतह पर पानी की बूंदें दिखाई देंगी। धीरे-धीरे ये बूंदें टपक कर कप में इट्ठा होंगी। कप के पानी को चखकर देखें, क्या यह नमकीन है ?

कुछ चर्चा

कटोरे का पानी वाष्पित होता है और पोलिथीन के नीचे संघनित होता है। वाष्पन के दौरान, पानी में घुले हुए पदार्थ पानी के साथ नहीं जाते। इसलिए सिर्फ शुद्ध जल ही कप में इकट्ठा होता है।

वाष्पन के दौरान समुद्र का नमक कभी पानी के साथ नहीं जाता। लेकिन बारिश के दौरान वायुमंडल में मौजूद धूल कण, विविध गैसें, धुंएं, के कण आदि पानी की बूंदों में घुल जाते हैं।

क्या पानी ऊपर भी ढकेलता है ?

हवा की तरह पानी भी हर दिशा में दबाव डलता है। जाहिर सी बात है, बर्तन के तले और दीवारों पर तो पानी दबाव डालेगा ही। पर पानी ऊपर की ओर भी दबाव डालता है। यह देखने के लिए आपको चाहिए एक जैसे आकार वाले दो पेपर कप और पानी से भरा बर्तन।

इस तरह से करें

एक कप का तला काटकर अलग कर लें। इस कप में दूसरे कप को डाल दें। दूसरा कप कटे हुए कप के भीतर आसानी से आगे-पीछे सरकना चारहिए। क्या अंदर वाल कप बिना कोई बल लगाए बाहर निकाला जा सकता है? शायद नहीं।

एक दूसरे में रखे कपों को कॉलर से पकड़ कर कॉलर बाहर ही रखते हुए पानी में डुबोएं। बाहरी कप की कॉलर पकड़े रहें और भीतरी कप छोड़ दें। भीतरी कप उछल जाता है। कौन-सा बल है जो कप को परे उछालता है ?

कुछ चर्चाः

किसी द्रव द्वारा ऊपर की ओर लगाए जाने वाले बल का उत्प्लावन कहते हैं। पानी में छोड़ते ही वस्तु अपने वज़न के कारण डूबने लगती है। इसी समय वस्तु का सामना पानी के उत्प्ललावन बल से होता है। यदि वस्तु के भार से उत्प्लावन बल ज्यादा है तो वस्तु डूबेगी नहीं (तैरेगी)। यदि वस्तु के वज़न से उत्प्लावन बल ज्यादा है तो वस्तु डूबेगी नहीं, तैरेगी। यदि उत्प्लावन कम हो तो, वह वस्तु को डूबने से रोक तो नहीं सकता लेकिन वस्तु के वज़न में कमी लाता है।

केस रिपोर्ट

फिर कुंआरी गर्भवती का असर खत्म हो गया

–बलवंत सिंह, लेक्चरार

आध्यात्मवाद की फिलासफी के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने इस जीवन में किए गये कर्मो के अनुसार मृत्योपरांत उनका फल भुगतना पड़ता है। यद्यपि यह मान्यता भिन्न-भिन्न धर्मो में अलग-अलग है। हिन्दू धर्म के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति 84 लाख योनियों के कर्मों को भोगते हुए मानव के रूप में जन्म लेता है। इस मानव जीवन में नेक कर्म करने के साथ-साथ प्रभु के सिमरण द्वारा उसे मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।' इसी के साथ-साथ यह भी मान्यता है कि जो व्यक्ति बिन आई मारा जाये, उसकी गति नहीं होती, उसकी आत्मा भटकती ही रहती है। फिर वह प्रेतात्मा बन कर आम लोगों को तंग एवं परेशान करती रहती है। फिर उस प्रेतात्मा को काबू में करने के नाम पर ये बाबा, ओझा, तांत्रिक-मांत्रिक एवं मुल्ला-मौलवी भोले-भाले लोग मनचाहा शोषण करते हैं।

बबली की शादी को पांच साल हो चुके थे। तब तक एक लड़की एवं एक लड़का उनके घर में सन्तान के रूप में पैदा हो चुके थे। उसका पति विशाल एक प्राइवेट कारखाने में नौकरी करता था। कारखाने में मकैनिक की नौकरी करने के कारण वे अपनी रिश्तेदारियों में बहुत कम जाया करते थे। यहां तक कि बबली अपने मायके में भी बहुत जरूरी होने पर एकाध दिन के लिए ही जाया करती थी। एक बार वह अपने छोटे भाई की शादी निश्चित होने पर शादी से एक महीना पहले अपने मायके में अपने मां-बाप के अनुरोध करने पर चली गई थीं अपने मायके में आ कर बबली ने अपने घर का सारा काम-धंधा संभाल लिया था। वह घर के काम के साथ-साथ अपने मां-बाप के साथ शहर में जाकर शादी के सामान की खरीद-फरोख्त में भी पूरा सहयोग करने लग गई थीं इसी दौरान कभी-कभी उसे डरावने सपने आने शुरू हो गये। सपने में डर कर एवं हड़बड़ा कर उठ बैठती, परंतु थोड़ी देर बाद वह सामान्य हो जाती। ऐसी हालत के चलते ही अन्त में शादी कर दिन आ गया और खुशीनुमा माहौल में उसके भाई की शादी संपन्न हो गई। फिर शादी के दो-तीन दिन बाद वह अपने पति एवं बच्चों के साथ अपने ससुराल में आ गई।

ससुराल में आ कर वह भयभीत सी रहने लग गई। डर वाले सपने उसे और अधिक परेशान करने लग गये। विशाल जब भी घर में आता तो वह अपनी परेशानियां बता कर उसे भी परेशान करने लग जाती। कई बार तो विशाल को उस की बातों से खीझ भी आने लग जाती। फिर रोज-रोज की परेशानी से तंग आ कर एक दिन विशाल अपने गांव के एक बाबा को बबली का झाड़ा करवाने के लिए बुला लाया। उस बाबा ने जब उन से आग वाले कोयले मंगवा कर उस पर थोडी सी लाल मिर्च रख कर उसका धुंआ बबली के नाक के आगे कर के उससे पूछा कि 'बता तू कौन है और कहां से इस के पीछे लगी है?' नाक में धुआं चढ़ते ही बबली ने चीखना चिल्लाना शुरू कर दिया और ऊंची-ऊंची आवाज में बोलना शुरू कर दिया-'मैं रूबी हूं और इसके मायके वालं गांव से इसके पीछे लगी हूं। जब यह हार श्रृगांर कर के अपने मां-बाप के साथ शहर में जा रही थी तो रास्ते में मैंने इसे पकड़ लिया, अब मैं इसे न हीं छोड़ूंगी। इसे भी अपने साथ ही ले जाऊंगी।' यह सब देख कर विशाल एवं उसके अन्य परिवारजन पूरी तरह से डर गये और उस बाबा से उसे काबू में करने के लिए हाथ जोड़ने लगे। जोश में आ कर बाबा ने मिर्चो वाली आग के घुएं वाला बर्तन उस के नाक के और निकट कर दिया। बबली को जब मिर्चो वाले धुएं के साथ-साथ आग की आंच भी लगी तो क्रोध में आकर उसने बाबा से वह बर्तन छीन कर उसी के सिर पर दे मारा। वह बाबा अपने कपड़ों को संभालता हुआ एकदम से उनके घर से भाग निकला।

अब घर वालों की परेशानी और अधिक

बढ़ गई। अब क्योंकि बबली के सिर पर कथित ओपरी छाया रूबी के रूप में प्रकट रूप से बोल चुकी थी, अतः वे समस्या के समाधान के लिए उसे लेकर अनेकों बाबाओं, ओझाओं इत्यादि की शरण में गये। परंतु समय व धन बर्बाद करने के सिवाय उन्हें कुछ भी हासिल नहीं हुआ। इसी क्रम में वे उसे गंगोह और कलियर पीर की दरगाह पर भी ले कर गये। कलियर पीर की दरगाह पर जाने के पश्चात् बबली की हालत और अधिक बिगड़ गई। अब कथित प्रेतात्मा उसके मुंह से बबली के साथ-साथ उनके पूरे परिवार को ही खत्म कर देने की बात बोलने लग गई। साथ ही उसके मुंह से कथित प्रेतात्मा रूप के रूप में धमकियां देने लग गई कि 'वह कुंआरी ही गर्भवती हो गई थी। इस कारण से उसके बाप ने उसका गला घोंट कर उसे मारदिया था। तब सेवह प्रेतात्मा बन कर भटक रही थी और मौका मिलते ही उसने बबली को पकड़ लिया था। अब बाबाओं और पीरों के पास ले जाकर उसे तगं कर रहे हो। इसलिए अब वह सारे ही परिवार को मजा चखा कर ही रहेगी।' परिवार वाले उसकी ऐसी बातें सुन कर अतयधिक भयभीत हो गये थें उन्हें कुछ भी सूझ नहीं रहा था कि वे क्या करें। इसी दौरान उनके एक परिचित ने बबली की हालत देख कर उन्हें मेरा पता देकर रविवार को लगने वाले मनोरोग परमर्श केन्द्र में भेज दिया।

मैंने जब बबली एवं विशाल को अपने सामने बेड पर बिठा कर उनकी समस्या के बारे में बातचीत करनी शुरू की तो बबली के सिर पर कथित प्रेतात्मा सवार हो गई। वह अंगडाई सी ले कर मुझ पर आक्रमण करने के लिए तैयार होने लगी। मैंने मौके की नजाकत को समझते हुएउसकी एक बाजू को पकड़ कर हल्का सा मरोड़ दिया तो वह एकदम सामान्य हो कर बैठ गई। फिर मनोवैज्ञानिक ढंग से उसकी कौंसलिंग करने पर उसने अपनी परेशानी को इस प्रकार से ब्यान कियाः

शादी के बाद वे दोनों पति-पत्नी पूर्ण तौर पर प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर रहे थें शादी के कुछ समय के पश्चात् उनके घर में पहले एक पुत्री ने जन्म लिया और उसके लगभग दो साल बाद एक पुत्र का भी जन्म हो गया। छोटा-सा और सम्पूर्ण परिवार होने से तथा आपस में अत्यधिक प्रेम होने के कारण वे अपने को बेहद खुशहाल परिवार मानते थे। यद्यपि उनकी आर्थिक दशा बहुत अच्छी नहीं था तथापि आपसी लगाव बहुत बेहतर ढंग का होने के कारण वे दोनों एक आनन्ददायक जीवन का रस ले रहे थे। जब बबली के छोटे भाई का विवाह निश्चित् हो गया तो अपने मां-बाप के कहने पर वह अपने पति की सहमति से शादी से एक महीना पूर्व ही अपने मां-बााप के घर में शादी के कार्य में हाथ बटाने के लिए पहुंच गई थी। उसके वहां जाने से कछ समय पहले उनके गांव में रूबी नाम की एक लड़की को उस के कुंवारी होते हुए ही गर्भवती हो जाने का पता चलने पर, उसके बाप ने उस का गला घाट कर मार दिया था अथवा रूबी की ऑनर किलिंग के चलते कत्ल कर दिया था। चाहे उस समय इस बात की भनक बाहर के लोगों को न भी लगी हो परंतु उनके गांव के लगभग सभी लोगों को इस हत्या का पता चल गया था। अपने गांव में पहुंचने पर बबली को भी रूबी की उसे बाप द्वारा की गई हत्या का पता चल गया था। अपने भाई की शादी तक तो बबली घर के कार्यो मे व्यस्त रहती रही, अतः तब तक उसे अधिक परेशानी नहीं हुई। बबली अत्यधिक जज़्बाती एवं संवेदनशील स्वभाव की थीं अब जब वह अपने ससुराल में आ गई तो वहां पर घर का सारा काम निपटाने के बाद उसके पास सोचने विचारने के लिए प्रर्याप्त खाली समय बच जाता था। पहले तो वह टी.वी. देख कर अथवा सिलाई-बुनाई कर के अपने समय का सदुपयोगकर लिया करती थी, परंतु अब हर समय उसकी आंखों के सामने रूबी की आकृति घूमती रहती थी । सिलाई-बुनाई करते समय भी उसका मन रूबी की यादों में ही खोया रहता था। अतः धीरे-धीरे वह मानसिक तौर पर परेशान रहने लग गई। उसे डर वाले सपने आने लग गये। कई बार सपने में उसे रूबी चीखती-चिल्लाती हुई दिखाई देने लग गई।

अब जब विशाल अपनी ड्यूटी से घर लौटता तो बबली चाय का कप बना कर उसे देने के साथ-साथ उसक`पास बैठ कर अपने डरावने सपनों को बताने के साथ ही रूबी के साथ हुई अनहोनी की बातें करने लग जाती। रोजाना ही जब वह अपनी

परेशानी की तथारूबी के साथ हमदर्दी जताने वाली बातें अपने पति के सामने बार-बार दोहराने लग गई तो विशाल का खीझ जाना भी स्वाभाविक ही था। परंतु आपस में अत्यधिक प्रेम होने के कारण अपने पति द्वारा थोड़ा सा खीझकर बात करना भी बबली के मन को गहरा आघात पहुंचा गया। वह मानसिक तौर पर कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि उसका पति उसके साथ इस प्रकार का व्यवहार करेगा। अतः वह मानसिक तौर पर टूट गई और उसका व्यवहार एकदम बदल गया। परेशान हो कर एक दिन विशाल जब एक बाबा को उसका झगड़ा लगवाने के लिए लेकर आ गया और उस बाबा ने जब एक बर्तन में जलते हुए कोयले रख कर और उनमें मिर्ची डाल कर उसका धुआं बबली के नाम के पास किया तो क्रोधित हो कर उसनेजलते कोयले वाला बर्तन छीन कर उसके सिर पर देमारा।उसके बाद उसकी मनमानियों का सारा ठीकरा जब कथित प्रेतात्माओं पर फूटने लग गया तो वह और अधिक उद्दण्ड होती चली गई। यह सब कुछ वह अवचेतन तौर पर करती रही थी। जब गंगोह वाले पीर तथा कलियर पीर पर उसे समस्या के समाधान हेतु ले कर जाया गया तो वहां का माहौल देखकर वह और अधिक विचलित हो गई। अब उसे सारे परिवार पर ही अत्यधिक क्रोध आना शुरू हो गया। इसी कारण अब वह सारे परिवार को ही परिणाम भुगतने की अवचेतन तौर पर धमकियां देने लग गई थी।

मनोवैज्ञानिक ढंग से काऊंसलिंग करने पर उसके अवचेतन मन में से कथि प्रेतात्माओं के भय को दूर कर दिया गया। उसे बार-बार सुझाव दिये गये कि भूत-प्रेत नाम की किसी चीज का कोई भी अस्तित्व नहीं होता। दो-तीन बार परामर्श केन्द्र पर बुला कर मनोवैज्ञानिक काऊंसलिंग के द्वारा उसके अवचेतन मन में बैठे हुए कथित भूत-प्रेतों के डर को पूरी तरह से दूर कर दिया गया। उसके बाद वह अपने परिवार के साथ पूरी तरह से प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत कर रही है।

नोटः यह एक सत्य घटना है, परिस्थिवश पात्रों के नाम बदल दिये गये हैं

असम में डायन के सन्देह में 2 हत्याएं

सिर काट कर दाह संस्कार भी कर दिया.

कार्बी आंग्लोंग जिले में जादू-टोना करने के संदेह में एक महिला सहित दो लोगों की बर्बरतापूर्ण हत्या की कड़ी निंदा करते हुए कहा, जादू टोने का कोई अस्तित्व नही होता तथा कोई महिला डायन नहीं होती. इस मामले में सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर कड़ी कार्यवाही हो। असम के कार्बी आंगलोंग जिले के डोकमोका थाना क्षेत्र के लोहिमापुरमें एक किशोरी के बीमार होने के बाद गांव के ही दो लोगों पर काला जादू करने का आरोप लगाया, गया बाद में उस लड़की की मृत्यु हो गयी मौत बुधवार की रात को हुई. मौत के बाद एक अन्य लड़की ने गांव के मुखिया के घर उन्हीं दोनों पर उस पर 'काला जादू' करने और इस वजह से उसके बीमार पड़ने का दावा किया था. जिस पर गांव में कंगारू पंचायत बैठाई गयी ,जिसमे उन्हें कला जादू करने के लिए दोषी ठहराते हुए जान से मारने का फरमान सुना दिया गया. उस फरमान के बाद 'गांववालों ने 60 वर्षीया रमावती और बीजाय गौर की पीट-पीटकर हत्या कर दी और उनके शव पास ही एक पहाड़ी पर ले गए. वहां उन्होंने अंत्येष्टि स्थल के पास उन दोनों के सिर काटकर उन्हें आग के हवाले कर दिया. 'बाद में जानकारी मिलने पर पुलिस वहां पहुंची तथा घटनास्थल का दौरा किया और मिट्टी के नमूनों के अलावा चिता से अवशेष एकत्र किए. डायन के सन्देह में हत्या के इस मामले में नौ लोगों को गिरफ्तार किया गया है. उनसे हथियार भी जब्त किए गए हैं. बाकी आरोपी फरार हैं. गांव में आदिवासी समुदाय के लोग रहते हैं, जो या तो मजदूरी करते हैं या छोटे किसान हैं..

हमारी असम सरकार से मांग है कि इस मामले में शामिल अन्य सभी दोषियों को तुरंत गिरफ्तार किया जाए उन्हें कड़ी सजा मिले ,तथा प्रताड़ितों के परिवार को न्याय, मुआवजा मिल सके.

-डॉ. दिनेश मिश्र

फिजिक्स के नोबल पर खुश होने के तीन कारण

-बादल सरोज

भौतिक विज्ञान -फिजिक्स में 2020 के नोबल सम्मान की खबर, तीन वजहों से खुशखबर है.

1. इसे पाने वालों में 55 वर्ष की सुश्री एंड्रिया हेज (Andrea Ghez) शामिल हैं, जिन्होंने जर्मनी के रेनहार्ड गेन्जेल (Reinhard Genzel) के साथ मिलकर, यह पता लगाया है कि आकाशगंगा के ठीक बीचों-बीच, एक विराट वजनी अनोखा ब्लैकहोल है, जो सारे ग्रहो-उपग्रहों-सितारों की ष्गति और स्थितिष- दोनों को नियंत्रित करता है.'

'नोबल शुरू होने (1901) के बाद से एंड्रिया, चौथी महिला भौतिक विज्ञानी हैं, जिन्हें यह सम्मान मिला. इससे पहले मैरी क्यूरी (Marie CURIE) थी, जिन्हे 1903 में, मारिया गोयप्पर्ट-मेयर (Maria Goeppert&Mayer) (1963) और डोना स्ट्रिकलैंड(Donna Strickland) (2018)" यह सम्मान हासिल कर चुकी हैं!'

'प्रसंगवश मैरी क्यूरी इसलिए भी असाधारण थी, क्योंकि 1911 में उन्होंने केमिस्ट्री -रसायन विज्ञान- में भी नोबल प्राप्त किया था. उन्होंने एक स्त्री होने के नाते खुद अपने जीवन में जितनी मुश्किलें उठाई थीं, वह अलग कथा है : शायद कोई फिल्म भी बनी है उस पर. क्या पता एंड्रिया की भी कोई कहानी हो -जिसके पन्नों को समेटकर वे यहां तक पहुँची हों!'

2. 'इस बार के फिजिक्स नोबल की दूसरी खास बात इसका ब्लैक होल केंद्रित होना है.'

'ब्रह्माण्ड और इस प्रकार जीवन के अस्तित्व की पहेली को हल करने की दिशा में, ब्लैक होल एक विस्मयकारी वैज्ञानिक खोज थी. यूं इसकी भविष्यवाणी अल्बर्ट आईन्स्टीन ने अपनी 'जनरल थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी' के साथ 1916 में ही कर दी थी -मगर पहले ब्लैकहोल को 1971 में ही खोजा जा सका.'

'इसकी सबसे सुव्यवस्थित व्याख्या स्टीफन हॉकिंग ने की थी और कहा था कि ये सिद्धांत, हमें इस सवाल का जवाब देने के लिए काफी हैं कि 'ब्रह्मांड का निर्माण कैसे हुआ, ये कहां जा रहा है और क्या इसका अंत होगा और अगर होगा तो कैसे होगा ?'

'अपने काव्यात्मक व्यंग में उन्होंने कहा था कि 'अगर हमें, इन सवालों का जवाब मिल गया तो हम ईश्वर के दिमाग को भी समझ पाएंगे'' (थ्यौरी ऑफ एवरीथिंग)

'क्या है ब्लैकहोल और बिगबैंग'

'सितारों, ग्रहों की भी एक उम्र होती है. उसके बाद वे सिकुड़ते हुए एक ऐसे पिण्ड में बदल जाते हैं, जहाँ बस गुरुत्वाकर्षण और अन्धकार है. जहां वक्त ठहर जाता है -जहां समय और स्थान (Time & Space) का कोई मतलब नहीं रह जाता. गुरुत्वाकर्षण इतना शक्तिशाली होता है कि यह आसपास की हर चीज सोख लेता है -यहां तक कि प्रकाश भी इससे बाहर नहीं आ पाता.'

और उसके बाद कुछ-फकत कुछ-अरब-खरब वर्षो के बाद, यह ब्लैकहोल फूटता है और फैलने लगता है, नए नए ग्रह और सितारे बनाते हुए आखिर में फिर एक बार से ब्लैक होल में ही बदल जाने के लिए. जैसेः

हम जिस ब्रह्माण्ड में रहते हैं, वह कोई 13 अरब 80 करोड़ साल पहले ऐसे ही किसी विस्फोट से बनना शुरू हुआ था और अभी फैलता ही जा रहा है!'

'3. 2020 के नोबल की तीसरी बात है, आईस्टीन के सापेक्षता सिद्धांत की एक बार और पुष्टि.'

और बस इतना कि '1848 में कार्ल मार्क्स-फ्रेडरिक एंगेल्स के लिखे बीजक (कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो) के बाद, 'प्रकृति और समाज विज्ञान' की सारी -जी हाँ सारी- खोजों और अनुसंधानों ने, मार्क्सवाद की भी पुष्टि की है. उसे सही ठहराया है.

लघु-कथा

कोरोना माई

- **रावेल पुष्प**

कोरोना की वजह से कई लोगों की नौकरियां चली गईं थीं। जो लोग फुटपाथ पर रेहड़ी वगैरह लगाते थे, उनका काम भी काफी मंदा पड़ चुका था। अब कुछ लोग वैकल्पिक काम भी खोजने लगे। कईयों ने साइकिल पर घूम- घूम कर सब्जी वगैरा बेचनी शुरू कर दी। कई लोग जो सिनेमा हॉल या होटलों में काम करते थे, उन लोगों ने भाड़े पर टू-व्हीलर रैपीडो चलाने शुरू कर दिए। सुकान्त एक होटल में काम करता था और उसका काम भी जाता रहा। उसे भी रैपीडो वालों ने अप्रोच किया था कि अगर उसके पास अपना टू व्हीलर है तो वह चला सकता है। लेकिन ना तो उसके पास अपना टू व्हीलर था और ना ही वो अच्छी तरह चलाना जानता था।

शहर से बाहर उसका एक कमरे का मकान था और थोड़ी सी जमीन भी साथ में थी। उसी में एक किनारे पर एक खपरैल का कमरा भी था, जिसमें घर का टूटा- फूटा सामान रखा हुआ था। यह तो अच्छा हुआ कि उसके बाप ने मरने से पहले यह सर छुपाने की जगह बना रखी थी। सुकान्त की बीवी और दो बच्चे भी थे। वो बड़ी चिंता में था कि घर कैसे चलेगा।

उस रात वो इसी उधेड़बुन में था कि एक विचार उसके दिमाग में कौंधा और वह सुबह ही निकल पड़ा उस मोहल्ले में जहां लोग मूर्तियां बनाते थे। वहां अधिकतर मूर्तिकार ही गुमसुम बैठे थे। कहीं कोई आर्डर नहीं था। उसने एक मध्यम आकार की मूर्ति देखी, जिसे अभी न तो सिर ही लगाया गया था और रंग- रोगन भी नहीं किया गया था । उसने मूर्ति वाले से पूछा कि ये किसकी मूर्ति बना रहे हो ? मूर्तिकार ने कहा अभी कुछ सोचा नहीं। जैसे कोई आर्डर आएगा वैसे बना दूंगा।

सुकान्त ने उसे एक आईडिया दिया और दो दिन बाद जाकर मूर्ति घर ले आया। मूर्ति के चेहरे पर मास्क लगा था। सुकान्त ने मूर्ति लाकर अपने खपरैल वाले कमरे को साफ-सुथरा कर वहां स्थापित कर दिया और बाहर दरवाजे पर बैनर लगा दिया- कोरोना माई का मन्दिर!

पड़ोस से पुजारी को बुलाकर पूजा करवा दी और प्रसाद लेकर हर गुजरने वाले को बांटना शुरू कर दिया- कोरोना माई का प्रसाद। धीरे-धीरे बात फैलने लगी और कुछ लोग आने शुरू हो गए। उसकी पत्नी की एक सहेली ने शहर के एक कोरोना- अस्पताल के बाहर कुछ कोरोना मरीजों के रिश्तेदारों को बताया कि कोरोना माई के मंदिर में प्रसाद चढ़ाने पर मरीज जल्दी स्वस्थ हो जाता है। बस फिर क्या था लोग- बाग पहुंचने लगे ।

कोरोना माई के प्रसाद के रूप में बाहर सैनिटाइजर की छोटी बड़ी शीशियां बिक रही थीं और साथ में तरह-तरह के मास्क और मिठाई के नाम पर बेसन के लड्डू। यही चढ़ावा चढ़ाया जा रहा था। सुकान्त के बड़े बेटे ने तो बाहर चढ़ावे वाली दुकान का जिम्मा संभाल लिया था और उसकी बहन भी साथ में सहायता कर रही थी । कोरोना माई को चढ़ाए गये मास्क ही भक्तों को प्रसाद के रूप में दिए जा रहे थे। यही मास्क मरीज को भी पहनना है। उसके एक मित्र ने कोरोना माई की एक आरती भी लिख दी थी। कुछ दिनों में ही कई मरीज स्वाभाविक रूप से ही ठीक होकर घर जा रहे थे, और कोरोना माई के मंदिर की चर्चा शहर में खूब हो रही थी।

कोरोना माई का मंदिर अब पक्का बन चुका था और सुकान्त भक्तों के साथ जोश में भजन गा रहा था -

जय हो,जय कोरोना माई
झटपट विपदा दूर भगाई'

(मो. 9434198898)

बंधुआ मजदूरी के विनाशक -स्वामी अग्निवेश

— मुनेश त्यागी

अपने सामाजिक सरोकार, फासीवादी शक्तियों के खिलाफ मुखर आवाज उठाने, बँधुआ मजदूरों की मुक्ति के लिये संघर्ष करने, अंधविश्वासों, पाखण्डों पर चोट करने, सत्ता के जनविरोधी कार्यो के खिलाफ आवाज उठाने के लिये स्वामी अग्निवेश हमेशा याद किये जायेंगे।

स्वामी अग्निवेश निश्चित ही कोई कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी नहीं थे। इसलिये उनकी सोच व व्यवहार की बहुत सीमाएँ बन जाती हैं, लेकिन बँधुआ मजदूर मालिकों-लम्पट तत्वों व फासीवादी शक्तियों के खिलाफ खड़ा होना भी बहुत साहस की माँग करता है। अपने सामाजिक कार्यो के चलते जिस तरह के जोखिम वे उठाते रहे वह निश्चित ही साहसिक व सराहनीय है।

फासीवादी ताकतों द्वारा उनके ऊपर न केवल वैचारिक हमले होते रहे बल्कि वे शारीरिक हमले करने से भी बाज नहीं आये। झारखंड में 2 साल पहले 18 जुलाई को संघ-भाजपा के कार्यकर्ताओं की एक भीड़ ने उनके ऊपर बर्बर हमला कर दिया था। जिसमें मुश्किल से ही उनकी जान बच पायी थी।

जब समाज में कोई मजबूत क्रान्तिकारी आन्दोलन मौजूद न हो, प्रतिक्रियावादी-फासीवादी शक्तियाँ हावी हो, तब जनता के हकों के लिये जलती कोई भी ज्योति जनता को लड़ने का हौसला देती है।

स्वामी अग्निवेश को नम आँखों से आदरांजलि!

21 सितंबर 1939 को आंध्र प्रदेश में ब्राह्मण परिवार में जन्मे इस शख्स ने अपने मूल नाम, जाति, धर्म, परिवार का त्याग कर दिया और असली मानवतावादी हो गए, इन्होंने अपनी सारी संपत्ति दान कर दी। यह शख्स थे स्वामी अग्निवेश।

स्वामी अग्निवेश बचपन से ही परिवर्तनवादी मानसिकता के व्यक्ति रहे थे। उन्होंने 1970 में आर्य सभा नामक राजनीतिक पार्टी गठित की। 1977 में हरियाणा विधानसभा में चुने गए, 1981 में शिक्षा मंत्री रहते हुए बंधुआ मुक्ति मोर्चा का गठन किया। उन्होंने कभी भी सत्ता से मोहब्बत नहीं की। आंदोलन के कारण कई बार जेल गए, गिरफ्तारी हुई और 14 माह तक जेल में भी रहे।

वे मानवता के सच्चे पहरी थे। आडंबर, अंधविश्वास, पाखंड विरोधी, आदिवासियों के हक अधिकारों की लड़ाई लड़ने वाले योद्धा थे और सामाजिक कार्यकर्ता थे। वे बंधुआ मजदूर मुक्ति मोर्चा आंदोलन के महानायक प्रणेता, जन्मदाता और प्रगतिशील चिंतक थे। अपने इसी मिशन के तहत उन्होंने 1, 72,000 बंधुआ मजदूरों को मुक्ति दिलाई ।

उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन के दौरान ही 1970 में भगवा चोला और वेशभूषा धारण कर ली थी। उनकी खास बात यह थी कि उन्होंने इस वेशभूषा को बेदाग रखा, उस पर आडंबर, अंधविश्वास, पाखंड, धर्मांधता और श्रद्धांधता के दाग नहीं लगने दिए, उसको बेदाग रखा। वे आज के साधू सन्यासियों से बिल्कुल अलग थे। उन्होंने संन्यास के विचार और सोच को प्रासंगिक बनाए रखा। वह मानव मात्र का कल्याण चाहते थे और अपने ज्ञान और बौद्धिकता को मानव मात्र के कल्याण के लिए प्रयोग करना चाहते थे, इसी नाते उन्होंने सत्ता के प्रतिष्ठान में प्रवेश किया था और विधायक बने थे।

उन्होंने अंधविश्वास के खिलाफ आजीवन संघर्ष किया और सामाजिक कार्यकर्ता बने। उनके निधन से देश और समाज को महान क्षति हुई है। स्वामी अग्निवेश महान तपस्वी, बंधुआ मजदूरों के मसीहा, गरीब मजदूरों के हक में लड़ने वाले, बोलने वाले, अन्याय के खिलाफ सारी उम्र संघर्ष करने वाले एक महान योद्धा थे। वह जन्मजात सांप्रदायिकता और जातिवाद विरोधी थे, वह जिंदगी भर फासिस्ट ताकतों से लोहा लेते रहे उन्होंने आशीष ताकतों और जातिवादी तत्वों को कभी नहीं बख्शा। अपनी इसी विचारधारा के कारण सांप्रदायिक ताकतें उन पर हमलें करती रही, कई बार उन पर हमले किए

गए, मारपीट की गई, उनके कपड़े तक फाड़ गए मगर अपने चिंतन और धर्मनिरपेक्ष मानसिकता से विचलित नहीं हुए।

1987 के दंगों के बाद स्वामी अग्निवेश 1989 में मेरठ में सांप्रदायिक सौहार्द मार्च में भाग लेने आए थे। मेरठ से उनका गहरा नाता था। उन्होंने सद्भावना मार्च में कहा था कि जब तक जनवादी, धर्मनिरपेक्ष ताकतें, और प्रगतिशील ताकतें एकजुट नहीं होंगी और एक होकर, इन सांप्रदायिक ताकतों का मुकाबला नहीं करेंगे तब तक सांप्रदायिकता का मुकाबला नहीं किया जा सकता, इसे खत्म नहीं किया जा सकता। उन्होंने सांप्रदायिक सद्भाव और भाईचारे की मशाल को सदैव संभाले रखा और उसे उच्चतर स्थान दिलाने की कोशिश की।

स्वामी अग्निवेश ने आतंकवाद और उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में काम किया। 2010 में कांग्रेस ने उन्हें माओवादियों से बातचीत करने की जिम्मेदारी सौंपी। उन्होंने बंधुआ मजदूरी को लेकर जिनेवा में संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग के समक्ष अपना बयान दिया। 2005 में कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ देशव्यापी अभियान में शामिल हुए।

वे एक कुशल वक्ता और महान लेखक थे। उन्होंने अपने जीवन में 12 किताबें लिखी और एक किताब वैदिक समाजवाद पर भी लिखी। उनका समाजवाद से गहरा नाता थे। वह हार्डकोर समाजवादी थे।उन्होंने समाजवादी मूल्यों को अपने जीवन भर कभी भी नहीं छोड़ा। इसी कारण वामपंथी ताकतों के साथ उनके हमेशा मधुर संबंध बने रहे।

देश में और दुनिया में स्वामी अग्निवेश का काम अनदेखा नही रहा। उन्हें बहुत से अवार्डो से नवाजा गया जिनमें प्रमुख हैं : गुलामी विरोध अंतरराष्ट्रीय अवार्ड 1990, आजादी और मानवाधिकार अवार्ड 1994, सांप्रदायिक सद्भावना राजीव गांधी अवॉर्ड 2004, राइट लाइवलीहुड अवॉर्ड स्वीडन 2004, से नवाजा गया।

वह भारतीय संविधान के प्रमुख समर्थक थे। भारत के संविधान की प्रस्तावना में उनकी बहुत गहरी आस्था थी जिसका जिक्र उन्होंने अपने अनेक भाषणों में किया था। उन्होंने कहा था कि जब तक भारत में लोगों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक आजादी प्राप्त नहीं हो जाती, भारत सही मायनों में आजाद नहीं हो सकता। वे तमाम तरह के शोषण के खिलाफ थे। वे सामाजिक बराबरी चाहते थे, वे आर्थिक बराबरी चाहते थे। उनका मानना था कि जब तक आदमी आर्थिक रूप से सफल और स्वाधीन नहीं होगा, उसको एक सच्चा मानव नहीं माना जा सकता।

उनका भाईचारे में सामाजिक, सांप्रदायिक भाईचारे में गहरा विश्वास था। इसी कारण वह मेरठ वगैरह में सांप्रदायिक सद्भाव के लिए मार्च निकाला करते थे और जनता को धर्मनिरपेक्षता की राह पर चलने की शिक्षा देते थे।

स्वामी अग्निवेश अपने बचपन के दिनों से ही एक ऐसे भारत की कल्पना करते थे जिसमें शोषण, अन्याय, भेदभाव, जुल्म सितम ना हों, जिसमें सब बराबर हो, इसमें धर्म के नाम पर जुल्म ना किए जाते हों, जाति के नाम पर आदमी को अपमानित ना किया जाता हो। वे एक ऐसे भारत का सपना देखते थे कि जिसमें सब को रोजी मिले, सबको रोजगार मिले, सबको रोटी मिले, सबको मकान मिले, सबको मुफ्त शिक्षा और दवा मिले, सबका विकास हो और देश की संपदा को तमाम भारतीयों के विकास के लिए प्रयोग किया जाए।

स्वामी अग्निवेश उन्नति, विकास, न्याय, समता समानता, शिक्षा, धर्मनिरपेक्षता समाजवाद सांप्रदायिक सौहार्द आपसी भाईचारा हिंदू मुस्लिम एकता और जनवाद, सब की उन्नति और प्रगति के ऐसे विचार और काम छोड़ कर गए हैं कि उनको अनदेखा नहीं किया जा सकता। उनका कार्यक्षेत्र बहुत विशाल था वे हमेशा याद आएंगे। उनको भारत का शोषित पिछड़ा अभावग्रस्त और गरीब वर्ग कभी नहीं भुला सकता। स्वामी अग्निवेश की जिंदगी से, कार्यो से, बहुत कुछ सीखा जा सकता है, उनसे सारी जिंदगी बहुत कुछ सीखा और किया जा सकता है। उनका मिशन अभी अधूरा, आइये, इसे आगे बढ़ाये, यही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी। हम तो यही कहेंगेः

शाह रात में रोशन किताब छोड़ गया
वो चला गया मगर अपने ख्वाब छोड़ गया,
हजार जब्र हों मगर यह फैसला है अटल
वह जहन जहन में इंकलाब छोड़ गया।

आखिर क्यों सरकारें तम्बाकू महामारी पर अंकुश लगाने में हैं विफल ?

तम्बाकू के कारण 70 लाख से अधिक लोग हर साल मृत और अमरीकी डालर 1004 अरब का आर्थिक नुक्सान होने के बावजूद भी, सरकारें क्यों इस महामारी पर अंकुश नहीं लगा पा रही हैं? भारत सरकार समेत 193 सरकारों ने 2030 तक सतत विकास लक्ष्य पूरे करने का वादा तो किया है पर विशेषज्ञों के अनुसार, बिना तम्बाकू महामारी पर विराम लगाए सतत विकास मुमकिन नहीं है.

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, तम्बाकू नियंत्रण नीतियों को लागू करने में सबसे बड़ा रोड़ा हैरू जन स्वास्थ्य नीति में तम्बाकू उद्योग का हस्तक्षेप. जाहिर है कि जब तक तम्बाकू उद्योग को लाखों-करोड़ों मृत्यु, जानलेवा बीमारियों, अरबों रूपये के आर्थिक नुक्सान, पर्यावरण को क्षति और सतत विकास को खंडित करने के लिए कानूनी रूप से जिम्मेदार न ठहराया जायेगा तब तक सफल तम्बाकू नियंत्रण और सतत विकास कैसे हो सकता है?

भारत समेत 181 देशों की सरकारों ने वैश्विक तम्बाकू नियंत्रण संधि बैठक में निर्णय लिया कि तम्बाकू उद्योग इन जन स्वास्थ्य बैठकों में किसी भी तरह से हस्तक्षेप न कर पाए. वैश्विक तम्बाकू नियंत्रण संधि के 8वें सत्र में, सरकारों ने मजबूत नीतियों को पारित किया जिससे कि तम्बाकू उद्योग जन-स्वास्थ्य नीतियों में हस्तक्षेप न कर सके.

स्वास्थ्य को वोट अभियान के निदेशक राहुल द्विवेदी ने बताया कि इस वैश्विक बैठक में तम्बाकू उद्योग ने अनेक प्रकार से हस्तक्षेप करने की असफल कोशिश की, अन्य संगठनों की आड़ में भ्रमित करने का प्रयास किया, मीडिया के रूप में अधिकृत प्रेस वार्ता में घुसने का प्रयास किया, आदि. तम्बाकू उद्योग के अनेक असफल प्रयास के बावजूद भी सरकारों ने इतने मजबूत निर्णय लिए हैं जो सराहनीय हैं।.

अनेक सालों से तम्बाकू उद्योग ने पारदर्शिता की आड़ में तम्बाकू नियंत्रण को विफल करने का प्रयास किया है. इस बैठक में सरकारों ने हमेशा के लिए तम्बाकू उद्योग को जन स्वास्थ्य संधि से बाहर निकाला है.

कॉर्पोरेट एकाउंटेबिलिटी दल के अध्यक्ष मिचेल लीजेंद्रे ने बताया कि ष्तम्बाकू नियंत्रण नीतियों को लागू करने में सबसे बड़ी अड़चन तम्बाकू उद्योग है. इस बैठक में भी यही हाल रहा. हम भारत सरकार और अन्य सरकारों के आभारी हैं जिन्होंने जन-स्वास्थ्य के पक्ष्य में निर्णय लिए जिसके कारणवश लाखों लोगों की जान बचेगी. वैश्विक तम्बाकू नियंत्रण संधि में उद्योग के घुसने का आखरी रास्ता था पब्लिक बैज की आड़ में हस्तक्षेप करना. इस जिनेवा बैठक में सरकारों ने उद्योग के हस्तक्षेप के आखरी रास्ते पर भी अंकुश लगा दिया, जिसके कारण तम्बाकू नियंत्रण अधिक प्रभावकारी बनेगा. सरकारों ने सख्त कदम उठाये जिससे कि तम्बाकू उद्योग के ध ूर्त प्रयासों को विफल किया जा सके जिसमें दुनिया की सबसे बड़ी सिगरेट कंपनी फिलिप मोरिस की नयी फाउंडेशन शामिल है. सरकारों ने नीति पारित की जिससे कि कोई भी संस्था, तम्बाकू उद्योग के इन भ्रामक धूर्त जाल में न फंसे.

यूगांडा की वरिष्ठ विधि सलाहकार हेलेन नीमा ने कहा कि जीवन रक्षक जन स्वास्थ्य नीतियों को असफल करने के लिये तम्बाकू उद्योग भान्ति प्रकार के हथकण्डे अपना रहा है। आर्थिक और जन स्वास्थ्य को भीषण रूप से क्षतिग्रस्त करने के लिये तम्बाकू उद्योग को कानूनी रूप से जिम्मेदार ठहराने के लिये वैश्विक तम्बाकू नियन्त्रण संधि आर्टिकल 19 पर सरकारों को कार्य आगे बढ़ाना होगा।

तम्बाकू से हर साल 70 लाख मृत्यु होती हैं और 1004 अरब रूपये का आर्थिक नुक्सान होता है। वैश्विक तम्बाकू नियन्त्रण संधि के आर्टिकल 19 को लागू करके सरकारें हर्जाना उसूल सकती हैं और तम्बाकू महामारी पर अंकुश लगा सकती हैं। स्वास्थ्य को वोट अभियान के निदेशक राहुल द्विवेदी ने कहा कि बिना तम्बाकू महामारी अन्त किए सतत विकास

लक्ष्य और राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 के लक्ष्य पूरे हो ही नहीं सकते।

ईरान सरकार के प्रतिनिधि बेह्जद वालीजदेह ने कहा कि नयी शुरुआत के बहाने तम्बाकू उद्योग भ्रमित कर रहा है, और इस झूठ में हम नहीं फंसेगें। ईरान ने फिलिप मोरिस के नये तम्बाकू उत्पाद जैसे कि आईकुओएस को प्रतिबंधित कर दिया है जिससे कि तम्बाकू उद्योग के भ्रामक प्रचार में उनके लोग न पड़ें और तम्बाकू नियन्त्रण में जो प्रगति हुई है वह न पलट जाये।

मालदीव्स सरकार के प्रतिनिधि हसन मुहमद ने कहा कि हमने इस बैठक में इतिहास बना दिया है और जन स्वास्थ्य संधि के द्वार उद्योग के लिये बन्द कर दिये हैं।

बिना किसी ठोस वैज्ञानिक प्रमाण के ई-सिग्रेट आदि जैसे तम्बाकू उत्पाद बाजार में लाकर उद्योग ने जन स्वास्थ्य कानूनों को दरकिनार किया है और अपना मुनाफा बढ़ाया है। तम्बाकू नियन्त्रण कानून जैसे कि सिगरेट एवं अन्य तम्बाकू उत्पाद अधिनियम 2003 और वैश्विक तम्बाकू नियन्त्रण संधि जिसे भारत ने पारित किया है, सभी तम्बाकू उत्पाद पर सख्ती से लागू होता है।

-बी रमाकांत,
सीएनएस 'सिटिजन न्यूज सर्विस'
'

डायन के सन्देह में सिर मुंडवाया, निर्वस्त्र कर घुमाया

झारखंड के सिमडेगा जिले से एक निर्दोष महिला को पंचायत के फरमान पर डायन घोषित करने, उसे प्रताड़ित करन, सिर के बाल काटने, और निर्वस्त्र कर के घुमाने की निंदनीय घटना सामने आई है, जो अत्यंत दुःखद और शर्मनाक है. इस घटना में शामिल सभी आरोपियों पर कड़ी कार्यवाही हो.

जानकारी मिली है कि झारखंड के सिमडेगा के कोमबाकेरा गांव में जादू टोने के शक में एक अधेड़ महिला के साथ सामूहिक मारपीट की गई, उसके सिर को मुड़वाया गया और निर्वस्त्र घुमाया गया।

गांव में पंचायत बुलाई गई थी, जिसमें पीड़ित को बैठक में शामिल होने के लिए बुलाया गया था, जहां उस पर जादू -टोना करने का आरोप लगा कर, गांव के एक व्यक्ति की जान लेने का आरोप लगाया गया. पंचायत के सदस्यों ने निर्णय लिया कि महिला का सिर मुंडवाया जाए और उसे गांव में निर्वस्त्र घुमाया जाए तथा जुर्माना वसूला जाए. जिले के कोलेबिरा प्रखंड के गंझूटोली में घटी उक्त घटना में करीब 50 से अधिक लोग शामिल थे,जिनमे महिलाएं भी थीं.

ग्रामीणों ने पंचायत की बैठक कर गांव की एक 55 वर्षीय महिला को डायन बताकर उसे सजा देने का निर्णय लिया पंचायत में शमिल लोगों ने कुछ दिनों पूर्व गांव में एक व्यक्ति की मौत के लिए उक्त महिला के कथित जादू टोने को दोषी ठहराया और एक आदिवासी पाहन (झाड़फूंक करने वाले बैगा) के बहकावे में आकर उक्त महिला की इस प्रकार प्रताड़ना की.

यह गांव रांची से 110 किलोमीटर दूर सिमडेगा जिले में कोलेबिरा ब्ल क के कोम्बाकेरा है. जहां गांव के लोगों ने एक अकेली महिला को इस प्रकार प्रताड़ित कर मानवता को शर्मसार कर दिया. बताया जाता है कि भीड़ के सामने पीड़ित महिला गिड़गिड़ाती रही, स्वयं के निर्दोष होने की बात कहती रही लेकिन किसी ने उसकी एक बात नहीं सुनी और अंधविश्वास में पड़ कर उसे प्रताड़ित किया.

इस के बाद भी ग्रामीणों का मन नहीं भरा उन्होंने उस महिला पर 500 रुपये का जुर्माना लगाया. ग्रामीणों के डर से उक्त महिला इस मामले की शिकायत दर्ज करने में भी डरती रही बाद में दो दिनों बाद इस मामले की जानकारी गांव के बाहर हुई तब शिकायत दर्ज हुई. उनकी शिकायत के आधार पर 9 नाजमद और 40 अज्ञात लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई. ग्रामीणों का एक वर्ग पुलिस की कार्रवाई का विरोध ा कर रहा था, लेकिन पुलिस ने इस मामले के नौ आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया. जबकि बाकी आरोपियों पर कार्यवाही नहीं हुई है.

डॉ. दिनेश मिश्र ने कहा हमारी झारखंड सरकार से मांग है कि इस मामले में शामिल अन्य सभी दोषियों को तुरंत गिरफ्तार किया जाए उन्हें कड़ी सजा मिले तथा निर्दोष प्रताड़ित महिला को न्याय, मुआवजा मिल सके. रिपोर्ट :डॉ.दिनेश मिश्र

लेखकों/पाठकों के लिए :

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बार्यी तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता तथा रचनाओं पर प्रतिक्रिया ईमेल tarksheeleditor @gmail.com अथवा वट्सएप न. 9416036203 भी भेजी जा सकती है।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतः अव्यवसायिक/ अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

रागणी

इज्जत का नहीं हिमाती

गुण्ड्यां की चाल्लै महं, देखी दुनिया सारी।
इज्जत का नहीं कोई हिमाती, मर आग्यी म्हारी
नहीं सुरक्षित बाह्मण-बेटी, इज्जत लुट ज्या गालां म्हैं,
नेता जी भी खड़े दीखते, गुण्डयां आले पाल्यां म्हैं
छल-कपट चौगिर्दे को, माणस फंस र्‌या जालां म्हैं
होई राज की नीयत खोटी, सब काला सै दालां म्हैं
बेरोजगारी की मारी पीढ़ी, ईब सींगा माटी ठा री।

बात मामूली छीना झपटी, धक्केशाही चाल पड़ी
माणस ठा फिरौती मांगैं, इसी लड़ाई चाल पड़ी
हक का खाणा बुरी बात, कपट कमाई चाल पड़ी
कुर्सी पै भी आज देख ल्यो, दादा-लाही चाल पड़ी
दूर दूर तक अंधेरा दीखै, मेरे न्यूं मायूसी छा री।

जवानी हरियाणे की न्यूं आती देखी काम मनै
रोज सवेरा खूनी-खूनी नित रोती देखी शाम मनै
के चाहवै से पूछूंगा जिस दिन, मिलगया राम मनै
हंसणा चाहूं उसके भी ईब, देणे पड़ते दाम मनैं
पिस्तौल का हुक्म चालता, जनता शीश झुका रीं

शीश झुका अपराधी चालें, या लाचारी न रह री
इकट्ठे हो आवाज उठावैं, हिम्मत म्हारी ना रह री
अपराध करैं इश्तिहार लगा कै, पर्दादारी ना रह री
पहलम वाली लुकमा-छिपमा, चोरी-जारी न रह रही
'रामेश्वर' हर कोई देख र्‌या, बाड़ खेत नै खा री।

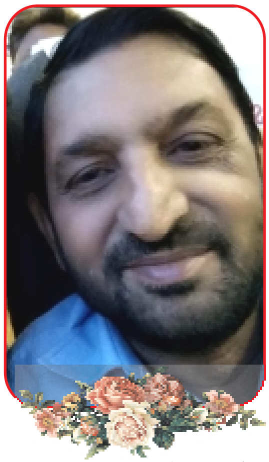
-रामेशवर 'गुप्त'

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की अपील

हरियाणा के असंध में शीघ्र ही 'तर्कशील केंद्र' के रूप में एक भवन निर्माण की योजना प्रस्तावित है। जिसके लिए सोसायटी के कार्यकर्ता मेहर सिंह विर्क ने असंध जिला करनाल में एक भूखण्ड प्रदान किया है। अतः सभी साथियों से अपील की जाती है कि इस योजना हेतु बढ़-चढ़ कर आर्थिक सहयोग करें।

-राज्य कार्यकारिणी

साथी सुखदेव अलविदा!



तर्कशील सोसायटी हरियाणा के उप राज्य सचिव श्री सुखदेव का 12.10.2020 शाम 7:45 पर बीमारी के चलते उनके निवास स्थान, यमुनानगर में निधन हो गया। करोना के चलते उनके मृतक शरीर को मैडीकल कार्यो हेतु सौंपना सम्भव नही हो सका, जबकि उन्होंने मृतक शरीर चिकत्सीय उपयोग हेतु प्रदान करने की विल भरी थी।

13.10.2020 को उनको परिवारिक व कुछ मित्रों के दुवारा अंतिम विदायगी दी गई

18.10.20 को शाम चार बजे साथी श्री सुखदेव सिंह जी को आदरांजली अर्पित करने के लिए शोक सभा का आयोजन वरिष्ठ तर्कशील साथी श्री बलबीर सिंह जी के निवास स्थान यमुनानगर में किया गया। जिसमें तर्कशील साथियों के अलावा विभन्न सामाजिक संगठनों के सदस्यों ने उनके दुवारा समाज हित मे निभाई भूमिका पर चर्चा की एंव उनके निधन को अपूरणीय क्षति बतलाया।

साथी सुखदेव का जन्म 1951 में गांव गोबिंदगढ़, जिला कुरुक्षेत्र, हरियाणा में एक किसान परिवार में हुआ अपने तीन भाइयों में ये सबसे छोटे थे इनकी दो बहिने भी हैं। पिता जी भारतीय सेना में थे जो 1971 में भारत पाक युद्ध मे शहीद हो गए थे , जिस कारण जीवन मे जब सहारे की जरूरत थी बे सहारा हो गए, लेकिन पढ़ाई के प्रति गहरी दिलचस्पी थी जिस कारण B.A., B.ed, M.A. तक पढ़ाई की लेकिन कोई नौकरी न मिलने के कारण कुरुक्षेत्र में ही स्पेयर पार्ट की दुकान कर ली। शादी होने पर कुरुक्षेत्र से इनका निवास यमुनानगर व चंडीगढ़ में हो गया, क्योकि पत्नी चंडीगढ़ में डाक विभाग में कार्यरत थी,लेकिन ज्यादातर निवास यमुनानगर में रहा , शुरू से ही मिथिहसिक कहानियों पर तर्क करते रहने के कारण इनका सम्पर्क तर्कशील सोसायटी से हो गया , जिसमे लगभग 25 वर्ष तक दिल से जुड़े रहे , यमुनानगर में ज्यादातर आयोजन करने में इनकी अग्रणी भूमिका रहती थी। 1982 में इन्होंने एक उपन्यास लिखा 'गुंजाइश' जिसकी थीम इस सोच पर आधारित थी कि किसी के भी जीवन को एक सिस्टम चलाता है जो हमारे आस पास के माहौल से बनता है और ठीक वैसे ही है जैसे मदारी बन्दर बंदरिया को अपने इशारों पर नचाता है, कथानक का पात्र प्रतीक रूप में मदारी है जो इसी के माध्यम से जीवन चलाता है। दूसरा उपन्यास- ठंडी सांसे-के नाम से लिख रहे थे, जो अधूरा रह गया है।

साथी सुखदेव की एक लड़की है जो एयर होस्टेस है और पुणे में रहती है और शादीशुदा है, उनकी पत्नी का 2018 में बीमारी के चलते निधन हो गया था ।

यमुनानगर ही उनके सामाजिक कार्यो की कार्य स्थली रही। जहां पर वे अध्यापक के रूप निजी स्कूल में कार्य करते रहे। साथ ही तर्कशील गतिविधियों में सक्रिय रहे। वरिष्ठ तर्कशील साथी आर पी गांधी जी के वे सारथी बने रहे तथा उनके साथ फिरा, नास्तिक सम्मेलन व अन्य संगठनों के देश भर में चलते आयोजनों में शिरकत करते रहे। वे तर्कशील सोसायटी के अलावा विभन्न प्रगतिशील संगठनों में कार्य करते रहे। लगभग10 साल से वे पूर्णकालिक कार्यकर्ता थे, यमुनानगर के विभिन्न तर्कशील साथियों के साथ मिल कर वे बेहद सक्रिय रहते थे, तर्कशील विषयों पर किताबें पढ़ना उनकी दिनचर्या का हिस्सा था, उनके निवास पर बहुत सी किताबें मिली जिन्हें यमुनानगर इकाई ने उनके नाम से लाइब्रेरी बना कर सहेजने की बात कही है। 69 वर्षीय साथी सुखदेव के अकस्मात चले जाने से तर्कशील सोसायटी को गहरा आघात लगा।

तर्कशील सोसायटी उनके कार्यो को हमेशा याद रखेगी।

रिपोर्ट -गुरमीत अम्बाला

दिसम्बर 2020 Reg. No. HARHIN/2014/60580 वर्ष 7 अंक 5

If undelivered please return to :

Tarksheel
Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

प्रो. बलवंत सिंह, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 1062, आदर्श नगर, पिपली, जिला कुरुक्षेत्र - 136131 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।